भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 13 | **सितम्बर-अक्टूबर** 2012 | **अंक** 9-10

किताबें साँस लेती हैं

किताबें भी साँस लेती हैं
कान लगाकर सुनो
उनका दिल भी धड़कता है
जब कोई उनके पास बैठता है
उनकी बात सुनता है

इन दिनों
दिल उदास रहता है किताबों का
धड़कन मद्धम पड़ रही है
टी०वी० देखने और अखबारों के पन्ने पलटने
में ही
ज़्यादा वक्त दे रहे हैं
उनके हमदम, पुराने दोस्त

ज़माने की इस बेरुख़ी से
उदास हैं किताबें
क्यों नहीं लोग
पहले जैसी चाहत से सुनते
उनके दिल की धड़कन

—विश्वनाथ

अध्येताओं, पुस्तकालयों, छात्रों, शिक्षा संस्थाओं हेतु

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

अपनी बोली, अपनी बात

हमारी कालगणना के कैलेण्डर में इस वर्ष भले ही अधिकमास जुड़ गया हो किन्तु प्रकृति की गति से संचालित ऋतु-चक्र ने परिवर्तन के संकेत देने शुरू कर दिये हैं। अब सुहानी लगने लगी है सुबह-शाम, बादलों का अवगुंठन खिसकाते हुए चन्द्रमा भी गुनगुनाने लगा है—शरदुदाशये साधुजातसत्/सरसिजोदर श्रीमुषादृशा....!

प्रकृति की सूक्ष्म-गति को लक्ष्य करतीं 'गोपी-गीत' की ये पंक्तियाँ भारतीय-भाषाओं की काव्य-संवेदना को आज भी छू जाती हैं। पुराने दौर से आज तक समग्र भारतीय-वाङ्मय की साहित्य-रचना मनुष्य और प्रकृति के अन्तर-सम्बन्धों का सचेतन-साक्ष्य प्रस्तुत करती रही हैं। आज स्थितियाँ काफी बदल रही हैं, प्रकृति को विकृत करते हुए मनुष्य को इतना अवकाश कहाँ कि अपने आस-पास की चीज़ों पर ग़ौर कर सके, खुद अपनी और अपने घर-परिवार के लोगों की अन्त:प्रकृति को समझ सके। अपनी हरकतों से पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले लोगों को इस बात से क्या मतलब कि शरत्कालीन धूप में कुलाँचे भरते कृष्णचर्म मृग की पीठ क्यों काली पड़ जाती है? अब दुर्लभ हो रही प्रजाति का यह मृग, उनके लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में विक्रय की वस्तु है या फिर लजीज़ शिकार। क्या यही है—हमारी शारदीय-संवेदना?

इसी तरह दूसरी बहुमूल्य, दुर्लभ वस्तुओं के मूल्यांकन, बाजार और भोग-उपभोग के मानक बनाती यांत्रिक-संस्कृति और प्राकृतिक-विकृति के इस दौर में भी मनुष्य और समाज की अभिव्यक्ति का साधन है भाषा और संस्कृति। संयोग से हमारे देश के सभी प्रदेशों में इन दोनों तत्वों को लेकर खूब चर्चा होती है। विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में पर्चे पढ़े जाते हैं। युवा छात्र-छात्राएँ सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देते हैं। उत्सवपूर्ण वातावरण में आमंत्रित अतिथि के कर-कमलों से प्रतिभागियों को पुरस्कार-वितरण के साथ पर्यावरण-जागरूकता का सन्देश देते हुए 'पौधा रोपण' किया जाता है। प्रकृति और संस्कृति के इस उत्सव-परक माहौल का सबसे ज्यादा विद्रूप हमें हिन्दी-क्षेत्र में ही देखने को मिलता है जहाँ इस विरूपण का माध्यम बनती है भाषा—हिन्दी। सरकारी तौर पर इस भाषा को लेकर एक 'दिवस' की भी अवतारणा कर दी गयी है—'राजभाषा-हिन्दी-दिवस'। जबकि दुनिया के किसी भी देश में और हमारे देश में भी भाषा के लिये किसी निर्धारित दिवस की कोई अवधारणा नहीं है किन्तु हिन्दी को यह दिवसीय दर्जा प्राप्त है। इस दिवस पर भव्य सरकारी-आयोजन किये जाते हैं, दिवस-सप्ताह-पखवाड़े मनाये जाते हैं, गोष्ठियाँ होती हैं, पर्चे पढ़े जाते हैं, 'बिदेसिया' को कोसते हुए हवा में मुट्ठियाँ लहरायी जाती हैं और यह विरूपण होता है हिन्दी, 'बेचारी-हिन्दी' के नाम पर। सरकारी-कामकाज और उच्च-शिक्षा में अंग्रेजी की प्रतिष्ठा के बीच यह 'भाषा-उत्सव' विद्रूप नहीं तो और क्या है?

जबकि हिन्दी केवल भाषा ही नहीं बल्कि एक संस्कृति है, सतत प्रवहमान, विकसमान संस्कृति। देश की राजधानी के आस-पास के गाँवों में बोली जाने वाली लोकभाषा 'खड़ी बोली' के आधार पर मध्यकाल में ही इसकी संरचना शुरू हो चुकी थी। जो 'हिंदवी', 'हिंदुई', 'रेख़्ता' आदि के विकास-क्रम को पूरा करते हुए 18-19वीं सदी तक आते-आते 'हिन्दी' और 'उर्दू' के नाम से

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

व्यक्त होने लगी। इसी अभिव्यक्ति ने सामाजिक-स्तर पर जन-सम्प्रेषण, सम्पर्क, संचार का काम किया। अभिव्यक्ति की यह भाषा साहित्य-रचना के साथ शिक्षा और शोध के लिए प्रयुक्त हुई। राजनयिक-स्वतंत्रता-संघर्ष में राष्ट्रीय जन-जागरण की भाषा बनी हिन्दी। उस दौर में विभिन्न भाषा-क्षेत्रों से एकत्र हुए विभिन्न प्रान्तों के भारतीय नेताओं ने राष्ट्रीय-सम्पर्क की राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित कर दी हिन्दी की प्रतिष्ठा और भारतीय-समाज, भारतीय वाङ्मय और भारतीय संस्कृति की वाहक बन गयी 'हिन्दी'।

स्वतंत्र-भारत के संविधान-निर्माण के बाद शुरू हुए दाँव-पेंच के बीच राजनयिक-अनिर्णय का शिकार बनी भाषा। देश का भाषावार विभाजन किया गया और प्रत्येक भाषायी-समुदाय की सांस्कृतिक-संरचना एवं साहित्य-रचना को देखते हुए प्रमुख सोलह भाषाओं को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दी गयी, जिनमें हिन्दी भी एक थी। बाद में हिन्दी की केन्द्रीय-स्थिति, सम्पर्क-क्षमता आदि को देखते हुए इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया, किन्तु प्रशासन एवं उच्च-शिक्षण की प्रतिष्ठा-भाषा बनी रही—अंग्रेजी।

और यह अनायास हुआ। चूँकि भारत के सभी भाषिक-सामाजिक क्षेत्रों की आधुनिक-चेतना का उन्मेष ब्रिटिश-साम्राज्य-काल में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही सम्भव हुआ था और भारतीय-प्रज्ञा के समक्ष खुलने लगे थे वैज्ञानिक-चिन्तन, दर्शन, आविष्कारों के नये क्षितिज। अत: आज़ादी मिलने के बाद भी वैज्ञानिक शिक्षण-प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक कामकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी बनी रही। यद्यपि हर क्षेत्र की अभिव्यक्ति और साहित्य रचना का माध्यम क्षेत्रीय भाषा ही बनी रही जिनके बीच व्यावसायिक-सम्पर्क के रूप में हिन्दी भी बोली-समझी जाने लगी और अब तो टेलीविज़न एवं फिल्मों के प्रसार से, पत्र-पत्रिकाओं के साथ नेटवर्कीय-संचार से हिन्दी स्वयं प्रतिष्ठित है, उसे किसी दिवस की अपेक्षा नहीं।

हाँ, दूसरी समस्याएँ ज्यों-की-त्यों हैं जिसके लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम की आवश्यकता है, इसके अन्तर्गत भाषा-वैज्ञानिकों और विभिन्न विज्ञान-विद्याओं के विद्वानों को एकत्र कर अनुवाद-समितियाँ गठित की जाएँ जो वैज्ञानिक-विषयों के शिक्षण-प्रशिक्षण हेतु सर्वमान्य शब्दावली का निर्माण करें तभी अंग्रेजी को लेकर भाषिक-वर्चस्व का मिथक टूटेगा।

इसी तरह सटीक शब्दावली के अभाव में उपजा 'हिंग्लिश' जैसा रोग सिर्फ हिन्दी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय-भाषाओं में संक्रमित हो चुका है। जिसका उपचार सम्यक् शब्द के संधान और उसके सतत प्रयोग एवं प्रचार द्वारा ही किया जा सकता है। जरूरत है दृढ़ निश्चय और निर्णायक-पहल की। नित्य-नूतन आविष्कारों के हथियारों से सुसज्जित भारतीय युवा-पीढ़ी का आत्मगौरव किसी 'विदेसिया' का दास नहीं है। इसीलिए वह अंग्रेजी-भाषा को ज्ञान के बजाय सूचना-संकलन और बाजारू-जरूरत का माध्यम बनाकर इस्तेमाल कर रही है। उसे अपनी भाषा और संस्कृति के नाम पर किसी 'दिवस' की अपेक्षा नहीं। अपनी-अपनी मातृभाषा में पूर्वजों का गीत गुनगुनाता रहता है उसका अन्तर्मन—

मानस-भवन मे आर्यजन जिसकी उतारें आरती
भगवान, भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।
हो भद्रभावोद्भाविनी वह भारती हे भगवते
सीतापते-सीतापते, गीतामते-गीतामते॥

सर्वेक्षण

● **देश-राग :** 'अगले सौ-दिनों में मँहगाई पर काबू कर लेंगे।' उनके मासूमियत-भरे बयान को लोग मान लेते हैं। इसी फिरके की आड़ में वे शातिराना-ढंग से अपने एजेण्डे को लागू करते हैं। पेट्रोल-डीज़ल, एलपीजी गैस आदि पर दी जाने वाली सब्सिडी को घटाकर, खुदरा बाजार में एफ०डी०आई० निवेश भी आमंत्रित कर लेते हैं। इस अचानक अवतरित महँगाई के प्रहार से स्तब्ध समूचे देश का मध्यवर्ग त्राहि-त्राहि करता सड़क पर आ जाता है। संसद में हाय-तौबा मचती है। इसी बीच उभरते घोटालों की ज़द में कोयले की कालिख से बचने की जुगत में विकास का देश-राग अलापते हुए सफाई देते हैं—'हज़ारों सवालों का जवाब है मेरी खामोशी।' और अब लोग खामोश हो चले हैं, किसी के सुर नहीं मिलते।

●● **देश-द्रोह :** पिछले दिनों एक कार्टूनिस्ट के 'भ्रष्टमेव जयते' कार्टून को लेकर मुम्बई की एक अदालत में जनहित की याचिका दाखिल की गयी। अदालत ने 'कार्टूनिस्ट' को देशद्रोह के आरोप में निरुद्ध करने की सजा सुनायी, चित्रकार को गिरफ्तार कर लिया गया। चतुर्दिक् विरोध और आलोचना के बीच लाचार सरकार ने अंतत: 'कार्टूनिस्ट' को मुक्त भी कर दिया, यद्यपि मुकदमा जारी है। आखिर यह कैसा प्रहसन है जिसका 'सत्यमेव' अपनी असलियत देखकर 'भेड़िया' बन जाता है, और एक ओर निरपराध को निरुद्ध करके, दूसरी ओर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मृत्युदण्ड प्राप्त देशद्रोही के संरक्षण में करोड़ों खर्च करता है।

●●● **देश-काल :** 21वीं सदी के दूसरे दशक की शुरुआत में ही स्वप्न-भंग हो चुका है। अब तक यह सिद्ध हो चुका है कि हमारे सारे संसाधन सिर्फ 2 प्रतिशत की मौज के लिए हैं जिसके लिए शेष 98 प्रतिशत को मूल्य चुकाना ही होगा। विसंगतियों से भरे इस दौर में अलग-अलग फूटता है आक्रोश और उन्माद! कहीं विस्थापितों का जल-सत्याग्रह, कहीं किसानों की आत्महत्या, कहीं जातीय-धार्मिक-हिंसा आदि की शक्ल में फैलती अराजकता के लिए नित-नये आधार प्रस्तुत करते हुए आखिर क्या सोच रखा है आपने? क्या कभी आपकी विकास-धारा में शामिल नहीं होंगे शेष 98 प्रतिशत?

चिन्तन और चिन्ता की इन्हीं किश्तों में हम दशहरा और दीवाली मनायेंगे, हमारी अन्तर्ज्वाला से जल उठेंगे आकाशदीप! इन्हीं टिमटिमाती किरणों की वर्णमाला लेकर आप सबके लिए शतश: शुभकामनाएँ प्रेषित करता है 'वाङ्मय'!

यह दीप अकेला
स्नेह भरा, मदमाता
इसको भी पंक्ति को दे दो!

—परागकुमार मोदी

रावन रथी बिरथ रघुबीरा

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

एक बार फिर बिरथ रघुबीर, रथी रावण से हार गये। घमण्डी रावण ने न कोई सन्धि-प्रस्ताव भेजा, न ही अपनी ओर से कोई युद्ध की घोषणा की। बस, अन्न-पानी का चुस्त-दुरुस्त प्रबन्ध कर, अपने किले में बन्द रहा। 'एक चुप्पा हजार बोलतों को मारे' वाली कहावत सत्य सिद्ध हुई। रावण की चुप्पी ने ही एकतरफा चले इस साप्ताहिक युद्ध को जीत लिया। बेचारे राघव समझौते पर टकटकी ही लगाए रहे।

वस्तुत: यह युद्ध **अनवसर** लड़ा गया। मैं राम की आलोचना तो नहीं करता क्योंकि वह मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, योगियों के हृदय में रमते हैं। फिर भी समीक्षा से पता चलता है कि वह विपरीत परिस्थितियों में, बिना पूरी तैयारी के, युद्धभूमि में उतर पड़े थे।

सुख-दु:ख में परछाईं की तरह साथ देने वाले भैया लक्ष्मण को तो युद्ध से पहले ही इन्द्रजीत की शक्ति बेध गई थी। युद्ध के समय वह स्वयं मूर्च्छित पड़े थे। उन्हें होश कहाँ था? राक्षसों की घेराबन्दी इतनी चौकस थी कि कोई सञ्जीवनी लेकर उनके पास फटक तक नहीं सकता था। बेचारे युद्ध के **अनिर्णीत** समाप्त हो जाने के बाद, जैसे-तैसे मृत्युभय से मुक्त हो पाये हैं। तो बिना शेषावतार लक्ष्मण के, राम को रन रोपने का भला क्या औचित्य था? परन्तु यह गलती बिरही, वनवासी, जटा-जूटधारी तपस्वी राम से हो ही गई। फलत: उसका ख़ामियाज़ा भी भुगतना पड़ा। दून वैली में पड़े सौमित्रि इस युद्ध में कोई योग नहीं दे सके।

इससे भी अधिक दु:खद पक्ष यह था कि इस युद्ध में महामन्त्री जाम्बवान्, कपियूथप सुग्रीव एवं बजरंग बली जैसे कद्दावर सामन्त भी राम के साथ नहीं थे। उन लोगों ने इस अधिकृत महायुद्ध से पूर्व ही, रावण पर धावा बोल दिया था और बेहद 'बे आबरू होकर लङ्का के कूचे' से बाहर निकल आये थे। रामदल में एकता नहीं थी। कुछ महत्त्वाकांक्षी वानर सामन्त तो राम के नेतृत्व में रावण से भिड़ना ही नहीं चाहते थे। कारण स्पष्ट है। उस स्थिति में लंका-विजय का सारा लाभ राम को मिलेगा। जूझें-मरें हम, और लंका का राज मिले किसी और को? यह भला कैसे हो सकता है? कुछ ऐसी ही सोच रही राघव-सहायकों की!

रही बात रावण की तो वह तो मँजा-मँजाया राजनीतिज्ञ है। उसकी राजनीति अद्भुत है। शुक्राचार्य, बृहस्पति, कामन्दक, विदुर और चाणक्य ने तो '**सप्ताङ्ग नय**' की व्याख्या की है। यानी राजनीति के सात अंग होते हैं—राजा, अमात्य, कोष, सेना आदि। परन्तु महाबली रावण ने इन सातों अंगों को मात्र दो में सीमित कर लिया है। रावण की राजनीति के मात्र दो अंग हैं। पहला अंग है—**दशानन** अर्थात् उसके दस मुँह! वह अपने वैरी को अथवा बिदके हुए नाते-रिश्तेदारों को पहले दसों बार समझाता है, दसों प्रकार से समझाता है अपनी बात मान लेने के लिए। उसकी राजनीति का दूसरा अंग है—**चन्द्रहास** अर्थात् शिवकृपा से प्राप्त उसका अमोघ खड्ग, जिसका नाम तो है चन्द्रहास (चाँदनी) परन्तु फल है—अमावस्या का रोदन!

मामा मारीच भी पहले स्वर्णमृग बनने को तैयार नहीं था। परन्तु चन्द्रहास की मूठ पर रावण का हाथ जाता देख, सोने का मृग बन कर, विनतमुद्रा में खड़ा हो गया। परन्तु रावण के बहनोई (शूर्पणखा के पति) विद्युज्जिह्व ने 'दशाननो' की महिमा नहीं समझी। उस पर रावण की बातों का असर नहीं हुआ तो दशास्य ने राजनीति के दूसरे अंग 'चन्द्रहास' का प्रयोग किया उस पर। शूर्पणखा के सामने ही उसे 'लौकी' की तरह काट डाला। रावण के इस चन्द्रहास को अब लोग सी०बी०आई० कहने लगे हैं।

तापस राम के साथ छिड़े इस युद्ध में भी रावण के सारे सहायक उसके साथ एकजुट थे। शूर्पणखा तो अपना वैधव्य ही भूल गई। क्योंकि रावण ने उसे समूचे दक्षिण भारत (दण्डकारण्य) का एकच्छत्र साम्राज्य दे दिया। राक्षस संस्कृति में तो धन-वैभव, ऐश्वर्य तथा उन्मुक्त कामोपभोग ही जीवन का सर्वस्व रहा है। शूर्पणखा को रावण ने यह सब कुछ दे रखा था। इसी ऐश्वर्य-मद में वह नाक-कान भी कटा चुकी थी। परन्तु थी अपने भैया दशकन्धर के ही साथ। चन्द्रहास के भय से उसे भी चैन कहाँ? उसी चन्द्रहास से आतंकित, **अहिरावण** भी लंकापति के साथ था इस युद्ध में। वह तो परम स्वार्थी राजनेता है। जुगाड़ू भी, दूरदर्शी भी। उसकी सोच अद्भुत है। वह जानता है कि रावण यदि मारा गया तो लंका की गद्दी का एकमात्र अगला वारिस वही भर होगा। नहीं भी मरा तो रावण का सहायक बना रहने का **अभिनय करने में** क्या जाता है? वस्तुत: अहिरावण किसी का भी सगा नहीं है। उसका इतिहास देख लीजिये। बस, अपनी स्वार्थसिद्धि तक वह मित्र या सहायक बनाता है। शूर्पणखा से भी उसका पैसे भर भी सामञ्जस्य नहीं। हो भी कैसे? दोनों को सत्ता की ही तो भूख है। दो भुक्खड़, मृत्यु के मूल्य पर भी, रोटी बाँट कर नहीं खा सकते, बस छीन सकते हैं।

विभीषण की सेवायें भी तपसी राम को नहीं मिल पाईं इस युद्ध में। वह बड़े भाई की लात खाकर भी अभी वहीं लंका में ही पड़े हैं—अपने बँगले में। अभी चिरौरी-विनती ही कर रहे हैं कि गृह मन्त्रालय उन्हें सौंप दिया जाय तो वह सब कुछ ठीक कर देंगे। वस्तुत: लंका और रावण से अभी उनका मोहभंग नहीं हो पाया है। रावण के पादप्रहार से मुँह के बल गिरे तो थोड़े बदशक्ल भी हो गये, फिर भी पूर्ण वैराग्य नहीं हो पाया। उपेक्षा-अपमान का जहर पीकर भी दशानन के साथ हैं वह!

वस्तुत: विभीषण के इस द्वैध ने ही दशरथनन्दन की विजय को संशयग्रस्त बना दिया। हम लोग तो वाल्मीकि के वंशज हैं न! अपनी क्रान्तदृष्टि से हजारों साल आगे-पीछे देखते रहते हैं। सो, मुझे युद्ध से पूर्व ही भासित होने लगा था कि राम की पराजय ध्रुव है। क्योंकि युद्ध सैनिकों को पूरी-कचौरी-हलवा खिला कर नहीं जीता जा सकता। उसके लिए सैनिकों की इच्छाशक्ति, हौसला, प्रतीकारभाव तथा 'गट्स' अपेक्षित होता है। यह सब 'हू-हू' करने वाली राम की वानरी-सेना में **अबकी बार** नहीं ही था।

काश, इसी स्ट्रेटेजिक प्वॉइण्ट पर विभीषण रावण का साथ छोड़ कर हमारे राम को अपनी शरण में ले लिये होते! यह क्या अभद्रवाक् कह दिया मैंने? विभीषण राम को अपनी शरण में ले लेते? या विभीषण स्वयं राम की शरण में आ जाते? भाई! यह त्रेता की रामकथा नहीं है। कलियुग की, और वह भी विक्रम-संवत् 2069 की रामकथा है। यह मूल रामकथा भी नहीं, उसकी परछाईं है। और परछाईं मूल से जुड़ी होने पर भी उससे भिन्न होती है। आप पाँच फिट छ: इञ्च के होंगे तो परछाईं बीस फिट लम्बी होगी (शाम को) या फिर मात्र एक फुट की (दोपहर में) इसलिए, पात्रों की परिवर्तित भूमिका पर अश्रद्धा न करें। यदि आज के राम 'शरण्य' न होंगे किन्हीं कारणों से तो उन्हें 'शरणागत' तो बनना ही पड़ेगा। जिन विभीषण की मैं चर्चा कर रहा हूँ वह उसी कद-काठी के हैं। वह अत्यन्त प्रौढ, विद्वान् नयत तो हैं ही, रावण की राक्षसी माया के भी मर्मज्ञ हैं। वह यदि इस समय राम का पक्ष ले लेते तो निश्चय ही लंका में भूचाल आ जाता। यदि वह रावण की **नाभि में अमृत** होने का रहस्य राम को बता देते तो रावण का विनाश हो सकता था। परन्तु राम की कूटनीतिक अल्पज्ञतावश ऐसा हो नहीं पाया।

युद्ध के परिणाम से अब स्पष्ट हो गया है कि अयोध्या में रामराज्य स्थापित होने की सम्भावना फिलहाल क्षीण हो गई है। पुन: शक्ति-सञ्चय में राघवेन्द्र को कम से कम साल-दो-साल तो लग ही जायेगा। अत: दैवज्ञ भी अब घोषित करने लगे हैं कि 2024 तक ही रावण-राज्य समाप्त हो पायेगा। ज्योतिषियों की इस घोषणा में दम भी है। क्योंकि विभीषण के मन की तो हो नहीं पाई। वह दशानन के अनन्तर स्वयं को ही सर्वोपरि प्रतिष्ठित देखना चाहते थे। परन्तु चतुर लंकापति ने वैसा किया नहीं! विभीषण का स्थान आज भी कुम्भकर्ण और मेघनाद आदि के बाद का ही है। इस स्थिति में विभीषण का, रावण से टूट कर, देर-सबेर

रामदल में मिल जाना ध्रुव है। जब घर का भेदिया राम से आ मिलेगा, तब सोने की लंका का मिट्टी में मिल जाना प्राय: ध्रुव हो जायेगा।

रावण के तानाशाही रवैये और उसकी सम्प्रभुता का मूल कारण है—अमोघ दिव्य चन्द्रहास खड्ग। रावण जब भी संकटापन्न होता है, हारने लगता है अथवा शत्रु से भयभीत होता है तो अपना सी०बी०आई० की मूँठ से जड़ा चन्द्रहास उठा लेता है। यह जिन्दगी नरक कर देने वाला आयुध है। इसके प्रहार-मात्र से महाबली शत्रुयोद्धा का राजनैतिक भविष्य चौपट हो जाता है। रावण के समस्त वैरियों की यही माँग रही है कि चन्द्रहास को रावण से च्युत किया जाय। उसके दुरुपयोग से चन्द्रहास-प्रदाता देवाधिदेव शिव का अपमान होता है। क्योंकि पार्वतीपति ने रावण को यह अमोघ अस्त्र **लोककल्याण** के लिए दिया था। परन्तु आततायी दशास्य उसका प्रयोग **आत्मकल्याण-मात्र** के लिए कर रहा है। उसका भय दिखा कर ही वह उन लोगों का भी समर्थन प्राप्त कर रहा है, जो उसके साथ कत्तई रहना नहीं चाहते।

जो भी हो, अब सबको लगने लगा है कि रावण का अन्त समीप आ गया है। माना कि शासन में उसकी जड़ें गहरी हैं। एक लम्बे अन्तराल तक वह सत्ता में काबिज रहा है। इन्द्र, वरुण, कुबेर, यम, शनि—सबको उसने एक-एक कर परास्त किया है। उसे अनेक दिव्य वरदान प्राप्त हैं। परन्तु यह सब होने के बावजूद वह **अभिशप्त** है अपने पापाचार के कारण। उसे **वेदवती** का शाप है। भतीजे नलकूबर की मँगेतर **रम्भा** का शाप है। हजारों-लाखों तपस्वियों, ऋषियों-मुनियों का शाप है जिनके रक्त से उसने अपना घड़ा भरा है। उसके पिता महामुनि **विश्रवा** ही उसके मंगलाकांक्षी नहीं। भाई **विभीषण** और पत्नी **मन्दोदरी** तक उसके दुष्कर्मों के समर्थक नहीं हैं। तो फिर रावण का अपना सगा है कौन? उसे तो रणभूमि में असहाय, अनाथ, लावारिस की तरह मरना ही है। अब देखना है कि वह घड़ी कब आती है?

परिस्थितियाँ बताती हैं कि अब रावण के भाग्य में सुख नहीं। राघवेन्द्र का अभियान तो असफल रहा। रावण की किलेबन्दी, चुप्पी, एकजुटता काम आ गई। निराश एवं भग्नपराक्रम राम (देव) जी पुन: लौट आये सुवेल पर्वत की ओर। सुमित्रानन्दन भी, इस बीच द्रोणगिरि से लाई सञ्जीवनी के सेवन से उठ खड़े हुए हैं। राम शक्ति-सञ्चय के स्रोत ढूँढ़ने में दत्तचित्त हैं।

परन्तु अभागा रावण फिर एक मामले में फँस गया है जिसे लेकर, उसके गद्दी छोड़ने की माँग, जोर पकड़ती जा रही है। रावण के सारे सामन्त, सहायक, दरबारी हैं तो मूलत: यातुधान ही। अत: वे राक्षसी वाक् का ही प्रयोग करते हैं। उन्हें देववाणी का ज्ञान नहीं। ऐसे दरबारी भी रावण के लिए नित्य नये संकट पैदा कर रहे हैं।

हिन्दी और बदलता आर्थिक परिदृश्य

क्या अंग्रेजी हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा देश के विकास के लिए जरूरी है? साथ ही अनवरत प्रचार द्वारा दूसरा मिथक यह गढ़ा गया है कि अंग्रेजी हमें एक सूत्र में बाँधती है। क्या उत्पादों और सेवा की नई विपणन नीतियों के सम्बन्ध में अंग्रेजी भारत की अर्थव्यवस्था के लिए उतनी ही महत्त्वपूर्ण है? अंग्रेजी हमें यदि जोड़ती है तो उतनी तीव्रता से ही तोड़ती भी है और विभाजन की रेखाएँ भी खींचती है। आज भारत में दो देश हैं—एक उन अभिजात या गर्वदम्भियों का जो अंग्रेजी में ही सोचते हैं और सामान्य देशवासियों को 'वर्नाक्यूलर' बोलने वाले 'लोकल्स' या 'नेटिव्ज' कहने में नहीं झिझकते हैं। सिर्फ अंग्रेजी के समाचार-पत्र ही 'इलीट' वर्ग में आते हैं, हिन्दी व भारतीय भाषाओं के नहीं। टेलीविज़न या बॉलीवुड के माध्यम से हिन्दी यद्यपि बोधगम्य बनी है पर उनकी भी विषयवस्तु की चर्चा या विमर्श अंग्रेजी में होता है। देश भाषायी आधार पर कितने रूपों में विभाजित रहता है इसका अनुमान लगाना मुश्किल है।

देश के औद्योगिक विकास के लिए जापान का उदाहरण महत्त्वपूर्ण है। यह सर्वविदित है कि वहाँ मुट्ठी भर लोग ही हैं जो अच्छी तरह अंग्रेजी बोल या लिख सकते हैं। उन्हें अंग्रेजी न जानने पर भी हीन भावना या आत्मग्लानि नहीं। उनकी शिक्षण प्रणाली में गणित, भौतिक, रसायन या जीवशास्त्र व इतिहास की पढ़ाई के माध्यम पर कोई अँगुली नहीं उठा सकता हैं—वे सब जापानी भाषा के माध्यम से उच्चतम स्तर पर अध्ययन कर सकते हैं। इसी तरह उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा पर भी किसी को आक्षेप करने का साहस नहीं। विशेषज्ञों को छोड़कर वहाँ अंग्रेजी की अन्धभक्ति लोगों में नहीं है। जापान के साथ-साथ, दक्षिण कोरिया, तैवान, सिंगापुर, चीन, थाईलैण्ड और यहाँ तक कि रूस की प्रगति का नया दौर आज अंग्रेजी का मोहताज नहीं है। वे जानते हैं कि उनके आर्थिक विकास के लिए कुछ और ही तत्त्व अपरिहार्य है, मात्र अंग्रेजी पर निर्भरता नहीं।

विकास के सोपानों की नींव कहीं और ही रखी होती है। हम इसके विपरीत एक झूठा सपना बेच रहे हैं और अंग्रेजी भाषा को ही प्रगति का अकेला मूलमन्त्र मानने लगे हैं। हिन्दी हमारे आत्मगौरव का प्रतीक है, शायद यह दोहराना इतना प्रासंगिक न होगा जितना कि यह कहना कि हिन्दी को आर्थिक उदारीकरण का नया कवच मिला है। मनोरंजन की दुनिया के अलावा चमक-दमक वाले घरेलू उत्पादों व नई सेवाओं के विपणन में भी आज के श्रव्य-दृश्य मीडिया ने जैसे रोमन लिपि में सारे भारत को हिन्दी सिखाने का दायित्व स्वत: अपना लिया। लेह से लेकर त्रिवेन्द्रम् तक या सभी बड़े महानगरों में चटपटे हिन्दी के वाक्यांश रोमन लिपि में मिलेंगे चाहे वह 'ठण्डा मतलब कोका कोला' हो या 'यह दिल माँगे मोर!' सरकारी कार्यालयों व सार्वजनिक उपक्रमों के कार्यालयों के प्रमुख स्थानों पर 'आज का शब्द' सिखाने से मनोरंजन उद्योग का व्यापक प्रचार कई गुना अधिक सार्थक सिद्ध हो रहा है। आज का नया प्रश्न वस्तुत: यह उठना चाहिए कि क्या बदलते आर्थिक परिदृश्य में हिन्दी लाभ या मुनाफे की भाषा के रूप में परिवर्तित की जा सकती है? गलाकाट प्रतियोगिता देश में ग्राहक सेवा की गुणवत्ता के नए मानदण्ड बना चुकी है। यदि हिन्दी आज उपभोक्ताओं की समग्र संचेतना या उनके अधिकारों के आन्दोलनों से जुड़ जाए तो चाहे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पाद हों, उन्हें भी कानूनी अधिनियमों के अन्तर्गत हिन्दी के प्रयोग के लिए बाध्य किया जा सकता है। जिस तरह अमेरिका व दूसरे विकसित देशों में हर उपभोक्ता का वह मौलिक अधिकार है कि हर उत्पाद व मान्य सेवा उसे समझ में आने वाली भाषा में मिलना अनिवार्य है, हमारे देश में ग्राहकों की संगठित जागरूकता नदारद है। हमारा यह भ्रम है कि अमेरिका व योरोप में सभी अंग्रेजी समझते हैं जो असत्य है। न्यूयॉर्क जैसे महानगर में भी हर सूचना या उत्पादों की पहचान अंग्रेजी के साथ-साथ स्पेनी भाषा में रहती है और साथ में दूसरी भाषायें जैसे फ्रेंच या जर्मन भी प्रयुक्त होती हैं। फ्रांस और जर्मनी में आज भी अंग्रेजी के अनावश्यक प्रयोग को हेय दृष्टि से देखा जाता है। फ्रांस में तो सरकारी तौर पर फ्रेंच की जगह अंग्रेजी प्रयुक्त करने पर दण्ड का भी प्रावधान है।

शायद आज यह दोहराने की जरूरत नहीं है कि हिन्दी सुबोध, सरल, सहज और बोधगम्य है; व्यापक है, वैज्ञानिक है; इसकी लिपि व वर्तनी मानक है—जैसी लिखी जाती है वैसे ही इसका उच्चारण होता है। इसकी वर्णमाला और वर्तनी—आर्थोग्राफी—भाषाशास्त्र की दृष्टि से वैज्ञानिक है। हिन्दी की अकेली समस्या अंग्रेजी की सामाजिक श्रेष्ठता और हमारी हीनता ग्रन्थि है जिसने हमारे समग्र मनोबल को तोड़ रखा है।

—हरिकृष्ण निगम, मुम्बई

वेबसाइट : www.vvpbooks.com

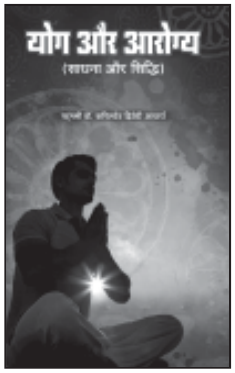

आकार डिमाई *पृष्ठ* 320

सजिल्द : 978-81-7124-834-6 • रु० 300.00
अजिल्द : 978-81-7124-872-8 • रु० 175.00

योग और आरोग्य

(साधना और सिद्धि)

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

योग भारतवर्ष की प्राचीनतम रहस्य-विद्या है। भारत ने ही विश्व को योग-विद्या का ज्ञान दिया है। इसका आधार कठोर साधना और तपस्या है। इससे ही प्रतिभा और ऋतम्भरा प्रज्ञा का विकास होता है। इस विद्या से ही अनन्त सिद्धियाँ और विभूतियाँ प्राप्त होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में इस विद्या की आद्योपान्त विधि बताई गई है, इसमें सम्पूर्ण योगविद्या का संक्षिप्त विवेचन है।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

प्राणमय कोश, प्राणायाम

1. प्राणायाम का महत्त्व और उपयोगिता

प्राण क्या है—प्राण वह विश्वव्यापिनी शक्ति है, जो संसार की ऊर्जा का स्रोत है। यदि संसार में प्राणशक्ति न हो तो संसार में गति, प्रगति, उन्नति और विकास न हो। गति, प्रगति और विकास ऊर्जा के कारण होती है। ऊर्जा का ही प्रत्यक्ष रूप प्राण है। मानव को ऊर्जा देने वाली शक्ति प्राण है। विश्वव्यापिनी ऊर्जा (Energy) को यदि हम महाप्राण कहेंगे तो मानव शरीर में विद्यमान ऊर्जा को प्राण कहेंगे। इस प्राणशक्ति को विकसित कर हम न केवल शारीरिक विकास कर सकते हैं, अपितु मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास भी कर सकते हैं और इसके फल-स्वरूप दिव्यदृष्टि आदि अनेक सिद्धियाँ भी प्राप्त कर सकते हैं।

प्राण का स्वरूप—वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों और उपनिषदों में प्राण का विस्तृत विवेचन हुआ है। कुछ विशेष उपयोगी बातें यहाँ दी जा रही हैं।

अथर्ववेद में 26 मन्त्रों का एक पूरा सूक्त (11.4) प्राण से सम्बद्ध है। इसमें कहा गया है कि प्राण शक्ति ही संसार का आधार है। प्राण ही संसार का नियामक है। यदि प्राणशक्ति न हो तो संसार का कोई काम नहीं चलेगा। शिशु जब से गर्भ में आता है, तभी से प्राणशक्ति उसका विकास करती है। प्राणशक्ति वर्षा के रूप में वृक्ष-वनस्पतियों को जीवन देती है। प्राण के दो भेद हैं—प्राण और अपान। इनमें से प्राण शक्ति-दाता है और अपान दोषों को दूर करता है।

(क) प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्। अथर्व० 11.4.15
(ख) प्राणो ह सर्वस्येश्वरः। अथर्व० 11.4.10
(ग) प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे।
अ० 11.4.1
(घ) नमस्ते प्राण प्राणते नमस्ते अस्त्वपानते।
अ० 11.4.8
(ङ) द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आवातु व्यन्यो वातु यद् रपः॥
अ० 4.13.2

ब्राह्मण ग्रन्थों आदि में भी प्राण का विवेचन हुआ है। कुछ विशेष उपयोगी सन्दर्भ ये हैं—शतपथ ब्राह्मण का कथन है कि प्राण अग्नि है अर्थात् यह अग्नि के तुल्य दोषों को नष्ट करती है। शतपथ का ही कथन है कि यह विश्वज्योति है अर्थात् यह संसार में चेतना की ज्योति जगाती है। छान्दोग्य उपनिषद् में प्राणों को रुद्र देवता कहा गया है, क्योंकि प्राणों के जाते ही शरीर मृत हो जाता है और सभी को वह रुला देता है। शतपथ ब्राह्मण में प्राण की दो विशेष क्रियाओं का उल्लेख है। ये हैं—1. समञ्चन अर्थात् सिकुड़ना, संकुचित होना (Contraction), 2. प्रसारण—फैलना, विस्तृत होना, फैलाव होना (Relaxation)। शतपथ ब्राह्मण और तैत्तिरीय उपनिषद् में प्राण के विराट् रूप का वर्णन करते हुए उसे ब्रह्म कहा गया है, अर्थात् वह सर्वत्र व्याप्त है।

(क) प्राण अग्निः। शत० 6.3.1.21
(ख) प्राणो वै विश्वज्योतिः। शत० 7.4.2.28
(ग) प्राणा वाव रुद्राः। एते हीदं सर्वं रोदयन्ति।
छा० उप० 3.16.3
(घ) प्राणो वै समञ्चन-प्रसारणम्।
शत० 8.1.4.10
(ङ) प्राणो वै ब्रह्म।
शत० 14.6.10.2। तैत्ति० उप० 3.3

प्राण का विराट् रूप—शतपथ ब्राह्मण आदि में प्राण को ब्रह्म बताया गया है। ब्रह्म संसार की ऊर्जा की समष्टि है। वह संसार को नियन्त्रित कर रही है। उस महाशक्ति का ही व्यष्टि रूप व्यक्तिगण प्राण है। यह प्राण और विराट् ब्रह्म दोनों एक ही तत्त्व हैं। प्राणायाम के द्वारा अपनी प्राणशक्ति को विकसित करके महाशक्ति से समन्वय स्थापित करके महान् शक्तियाँ और दिव्य शक्तियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। प्राणायाम का अन्तिम लक्ष्य ईश्वर-सान्निध्य की प्राप्ति है। प्राणायाम इसका मार्ग प्रशस्त करता है।

प्राणायाम का अर्थ—'प्राणानाम् आयामः' अर्थात् प्राणों का आयाम। इसके दो अर्थ हैं—1. प्राणों का विस्तार, फैलाव, प्राण की शक्ति की वृद्धि। 2. प्राणों पर नियन्त्रण, प्राणों को अपने वश में करना, प्राणों को अपने नियन्त्रण में लेकर उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार रोकना और छोड़ना। अतएव पतंजलि ने श्वास और प्रश्वास की गति को रोकने को प्राणायाम कहा है।

तस्मिन् सति श्वास-प्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः। योग० 2.49

प्राणायाम के भेद—प्राणायाम के मुख्य रूप से तीन भेद किये गये हैं—पूरक, रेचक और कुम्भक।

1. पूरक—पूरक का अर्थ है—भरना, पूर्ण करना। पूरक क्रिया से अभिप्राय है—बाहरी वायु को साँस के द्वारा खींचकर अन्दर ले जाना। इसको 'श्वास' कहते हैं।

2. रेचक—रेचक का अर्थ है—खाली करना, रिक्त करना, रेचक क्रिया में शरीर के अन्दर की वायु को बाहर निकालना अर्थात् सांस को बाहर फेंकना है।

3. कुम्भक—कुम्भक का अर्थ है—साँस को रोककर रखना। इसके दो भेद हैं—

(क) आभ्यन्तर कुम्भक—साँस को अन्दर खींचकर अन्दर ही रोककर रखना।

(ख) बाह्य कुम्भक—साँस को बाहर निकालने के बाद उसे बाहर ही रोककर रखना।

इन तीन क्रियाओं के आधार पर ही प्राणायाम के अनेक भेद-उपभेद हुए हैं।

2. प्राण और उपप्राण

प्राण के 5 भेद हैं—प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान। इसी प्रकार उपप्राण के भी 5 भेद हैं—नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय। एक प्रसिद्ध श्लोक में इनके ये स्थान बताए हैं—

हृदि प्राणों गुदेऽपानः, समानो नाभिमण्डले।
उदानः कण्ठदेशस्थो, व्यानः सर्वशरीरगः॥

1. प्राण—यह मुख्य वायु है। इसका स्थान हृदय है। इसका कार्यक्षेत्र कण्ठ से लेकर डायफ्राम (diaphragm) तक है। .....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

विकृति का बाजार

प्रकाशन के साल भर के भीतर जिसकी तीन करोड़ से अधिक प्रतियाँ बिक गईं, तकरीबन चालीस देशों में जिसके प्रकाशन-अधिकार देखते-देखते बिक गए, कुछ ही समय में यह अब तक की सबसे तेजी से बिकने वाली पेपरबैक किताब बन गई, ई०एल० जेम्स लेखिका से दुनिया की मशहूर सिलेब्रिटी बन गईं, 'टाईम' पत्रिका ने उन्हें 100 सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची का हिस्सा बना लिया—आखिर ऐसा क्या है 'फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे' शीर्षक उपन्यास-त्रयी में? यह एक ऐसा सवाल है, जिसे लेकर दुनियाभर के अंग्रेजीभाषी पाठक-लेखक-आलोचक समुदाय में बहस छिड़ी हुई है। बहस चाहे जिस किनारे पहुँचे, इतना तो तय है कि अंग्रेजी लोकप्रिय साहित्य को बेस्ट सेलर का एक नया नुस्खा मिल गया है—'इरॉटिक' प्रेम-कथाओं के रूप में। जैसे 'हैरी पॉटर' शृंखला ने किशोरों के साहित्य का नया बाज़ार देखते-देखते दुनियाभर में खड़ा कर दिया था, वैसे ही 'फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे' ने अधेड़ महिलाओं के रूप में एक नया पाठक-वर्ग खड़ा कर दिया है। अंग्रेजी भाषा को इसने एक नया मुहावरा दे दिया है—'मम्मी पॉर्न' यानी माताओं के पढ़ने के लिए लिखी गई कामुक किताब।

> यौन-मनोवृत्ति एवं ऐन्द्रिक संवेदना को हमारे साहित्य और संस्कृति ने जहाँ भावात्मक और उदात्त बनाया है वहीं पश्चिम ने उसे उन्मुक्त और नग्न किया है, फिर 21वीं सदी के बाज़ार में जहाँ सबकुछ बिकाऊ है वहीं एक माल के रूप में बिकाऊ 'फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे' त्रयी ने बिक्री के मामले में हैरी पॉटर सीरीज को पीछे छोड़ दिया है।

पिछले दिनों प्रसिद्ध लेखक-प्रकाशक डेविड दविदार ने एक इण्टरव्यू में कहा था, ईबुक के दौर में मुद्रित पुस्तकों का व्यवसाय संकटग्रस्त होता जा रहा है। यूरोप में पुस्तकों की बड़ी-बड़ी दुकानें बन्द हो रही हैं। ऐसा नहीं है कि पढ़ने के प्रति लोगों का आकर्षण कम हुआ है या नव-पूँजीवादी समय में बैठ कर किताब पढ़ने का सामन्ती शौक पुराना पड़ गया है। असल में, तकनीक बहुत तेजी से हमारे पढ़ने के ढंग को प्रभावित कर रही है। इण्टरनेट और ईबुक के माध्यम से कम से कम अंग्रेजी भाषा में किताबों का प्रसार अधिक हो रहा है। मुद्रित पुस्तकों का बाजार सिमटता जा रहा है। इसी सिमटते बाजार की बढ़त को बनाये रखने के लिए प्रकाशक-लेखक निरन्तर ऐसे नुस्खों की तलाश में रहते हैं, जिसके इर्द-गिर्द पाठकों को बड़े पैमाने पर आकर्षित किया जा सके।

अकारण नहीं है कि दुनिया के बड़े-बड़े प्रकाशक, गम्भीर साहित्य को बढ़ावा देने वाले अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक ऐसी लोकप्रिय पुस्तकों को प्रकाशित करने में अधिक दिलचस्पी दिखाने लगे हैं, जिनसे प्रतिष्ठा बढ़े न बढ़े, मुनाफा बढ़े। समाज के नए-नए वर्ग पुस्तकों से पाठकों के रूप में जुड़ें। प्रसंगवश, यह पहली ऐसी पुस्तक है, जो केवल मुद्रित रूप में ही नहीं बिकी, बल्कि यह ईबुक के तौर पर भी सबसे अधिक बिकने वाला उपन्यास साबित हुआ है। यह भी कहा जा रहा है कि ईबुक पर, लैपटॉप पर पुस्तक पढ़ने वालों की बढ़ती तादाद को देखते हुए ही इरॉटिक उपन्यास की परिकल्पना की गई, क्योंकि आपके ईबुक या लैपटॉप में कौन-सी किताबें हैं, यह सिर्फ आप ही जानते हैं। इसलिए उसके अन्दर किसी भी तरह की पुस्तक रखने में शर्म या झिझक नहीं होती। बहरहाल, कहा जा रहा है कि अंग्रेजी पुस्तक व्यवसाय की उत्तरजीविता के लिए एक नया मुहावरा मिल गया है।

'फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे' मूलत: एक प्रेम-कहानी है। केवल बाजार और बिक्री के लिहाज से ही नहीं, बल्कि कई मायनों में यह उपन्यास युगान्तकारी कहा जा सकता है। इसे लिखने वाली एक स्त्री है। पहले जब भी किसी स्त्री ने अपने साहित्य में सेक्स के उन्मुक्त वर्णन किए, उसे अश्लील करार दिया गया, यहाँ तक कि अश्लीलता के आरोप में उसके ऊपर मुकदमे भी चलाए गए, लेकिन ई०एल० जेम्स के उपन्यास को जिस तरह से विश्वव्यापी स्वीकृति मिली है, जिस तरह से उसकी बिक्री हुई है, उससे लगता है कि महिलाओं को लेकर, खासकर उनके इस तरह के लेखन को लेकर समाज का नजरिया बदल रहा है।

कई और अर्थों में 'फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे' को एक परिघटना के तौर पर देखा जा रहा है, एक ऐसी परिघटना के तौर पर, जिसमें भविष्य के लेखन के संकेत छिपे हुए हैं। इस उपन्यास के अंश पहले एक वेबसाइट पर छपे और मुख्यत: सोशल मीडिया के माध्यम से ही इस किताब की चर्चा चली। मई में जब अमेरिका में इस उपन्यास का संस्करण छपा तो हफ्ते भर के अन्दर ही पुस्तक की एक करोड़ प्रतियाँ बिक गईं, जबकि न इसका कोई खास प्रचार-प्रसार किया गया था, न ही इस उपन्यास की कोई समीक्षा छपी थी। सोशल मीडिया के माध्यम से मुँहजुबानी प्रचार द्वारा भी किसी पुस्तक की बिक्री इतनी अधिक हो सकती है, 'फिफ्टी शेड्स ऑफ ग्रे' ने इसे साबित कर दिया है।

बहरहाल, इतना तो है ही कि ई०एल० जेम्स ने मनोरंजन-माध्यमों के बढ़ते वर्चस्व के दौरान टैब, ईबुक, इण्टरनेट के इस दौर में इस बात को मजबूती से स्थापित किया है कि तमाम आसन्न खतरों के बावजूद मुद्रित पुस्तकों का आकर्षण बरकरार है और नई तकनीक ने उसका विस्तार ही किया है।

—'हिन्दुस्तान' से साभार

साहित्यिक क्लबों की आवश्यकता

हिन्दी बोलने और समझने वालों की संख्या भारत में पन्द्रह करोड़ से कम नहीं है। बंगाली बोलने और समझने वाले कुल पाँच करोड़ हैं। फिर भी बंगाली पुस्तकों के सामने, हिन्दी पुस्तकों और पत्रिकाओं की खपत कुछ नहीं है। यहाँ अच्छी से अच्छी पत्रिका भी घाटे पर ही चलती है और अच्छी से अच्छी पुस्तक भी गोदाम में पड़ी सड़ती है। कोई सज्जन एक पुस्तक मँगा लेते हैं तो सारे मुहल्ले में लूट मच जाती है। लोग एक-दो मील से उसके लिए दौड़ते हैं। अक्सर पुस्तक के स्वामी को पुस्तक देखने को नहीं मिलती और वह हाथोंहाथ गायब हो जाती है। यह कैफियत देखकर वह सोचता है, कहाँ से इस बला में आ पड़े। पुस्तक नहीं देते तो बेमुरौवत कहलाते हैं, स्वार्थी की उपाधि मिलती है। देते हैं तो लौटकर नहीं आती। इसलिए पुस्तक मँगाये ही क्यों? यह है हमारा साहित्यानुराग! पुस्तक पढ़ना तो चाहते हैं, पर गाँठ का पैसा खर्च करके नहीं। जिनकी माकूल आमदनी है वह भी पुस्तकों की भिक्षा माँगने में नहीं शरमाते। अगर यही दशा रही तो हम नहीं समझते, साहित्य की उन्नति कैसे होगी। प्रकाशक नये उत्साह से मैदान में आता है पर साल-दो साल में घर की जमा गँवाकर बैठ जाता है। नयी-नयी पत्रिकाएँ निकलती हैं और दस-पाँच हजार का खून करके प्रस्थान कर जाती हैं। इस शिथिलता का एक उपाय जगह-जगह साहित्यिक क्लबों का खुलना है। प्रत्येक कस्बे और गाँव में ऐसे क्लब स्थापित होने चाहिये। नगरों में तो हर मुहल्ले में ऐसे क्लबों का खुलना वांछनीय है। अगर दो-एक उत्साही सज्जन भी हिम्मत करें, तो उन्हें दस, बीस, तीस ऐसे साहित्यानुरागी मिल जायेंगे जो उसे चार आने महीने तक खुशी से दे देंगे। अगर इन क्लबों द्वारा सौ रुपये वार्षिक की पुस्तकें और पत्रिकाएँ खपने लगें तो साहित्य का उद्धार हो सकता है। समस्त देश में अगर ऐसे दस हजार क्लब भी खुल जायँ तो बहुत कुछ काम चल जाय। इस क्लब के सदस्यों का एक काम यह भी होगा कि वह साहित्य-प्रेमियों को एक रु०, दो रु०, चार रु० सालाना की पुस्तकें खरीदने के लिए नियम-बद्ध कर सकें। सभ्य देशों में ऐसे क्लबों की बड़ी कदर है और यही कारण है कि वहाँ मामूली किताबें भी पचास-पचास हजार तक बिक जाती हैं। हमें आशा है, हिन्दी संसार इस प्रस्ताव की ओर ध्यान देगा।

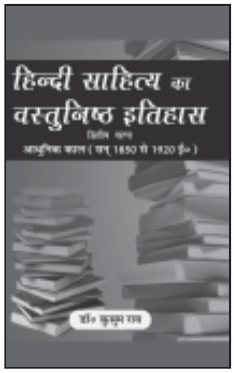

आकार डिमाई | पृष्ठ 408

सजिल्द : 978-81-7124-860-5 • रु० 400.00
अजिल्द : 978-81-7124-861-2 • रु० 250.00

हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास

द्वितीय खण्ड : आधुनिक काल (सन् 1850 से 1920 ई०)

डॉ० कुसुम राय

'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास' (दसवीं से उन्नीसवीं शती तक) सन् 2008 ई० में प्रकाशित हुआ था। वैसे तो इसको आधुनिक काल तक के सम्पूर्ण साहित्य के अध्ययन तक ले जाने का विचार था किन्तु बाद में आकार-प्रकार की विपुलता को देखते हुए इसे दो खण्डों में समेटने का लक्ष्य रखा गया। किन्तु पुन: इसका कलेवर विस्तृत होता देखकर इसका तीन खण्ड कर देने का निश्चय किया गया। द्वितीय खण्ड—आधुनिक काल (1850 से 1920 ई० तक) स्वतन्त्र रूप में पहली बार ग्रन्थ-रूप में प्रस्तुत है। इस पुस्तक में सन् 1850 से लेकर 1920 तक की साहित्यिक गतिविधियों को यथासम्भव समग्र रूप में समेटने की कोशिश की गयी है।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

हिन्दी नाटक

❑ **भारत में नाटक की परम्परा कब से मिलती है ?**

नाटक रंगमंच पर अभिनय के द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखित गद्य या गद्य-पद्य मिश्रित रचना है। भारत में नाटक की उत्पत्ति के प्रश्न को लेकर विद्वानों में मतभेद मिलता है। **डॉ० रिजवे** का मानना है कि मृत वीरों की आत्माओं की प्रसन्नता के लिए की गई पूजा में गीत तथा नाटक आदि का आयोजन शुरू हुआ। प्रोफेसर **हिलेब्रॉ** (Hillebrandt) और प्रोफेसर **कोने** (Konow) सामाजिक उत्सवों से भारतीय नाटकों का उद्भव मानते हैं तो **डॉ० पिशेल** कठपुतलियों के नाच से इनका प्रारम्भ मानते हैं। इन सब मतों को **डॉ० गुलाबराय** ने यह कहते हुए खण्डित किया है कि भारत में धार्मिक, सामाजिक तथा लौकिक कृत्यों में भेद नहीं है। वैसे भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों से कुछ न कुछ लेकर जैसे ऋग्वेद से पाठ, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लेकर 'नाट्य-वेद' रूपी पाँचवें वेद की रचना की कथा उद्धृत की है, जिससे यह ज्ञात होता है कि नाटक वेदों के बाद रचा गया। कुछ विद्वानों ने भारतीय नाटक को यूनानी देन कह अपने पक्ष में 'यवनिका' शब्द को प्रस्तुत किया है जिसका भी विद्वानों द्वारा खण्डन किया जा चुका है क्योंकि 'यवनिका' शब्द का सम्बन्ध यवन से नहीं बल्कि 'जव' अर्थात् वेग से उठने-गिरने वाले पट से है। और भारत में नाटकों का प्रचलन भारत-यूनानी सम्पर्क से बहुत पहले हो चुका था। इसलिए इतना तो तय है कि भारत में नाट्य परम्परा बहुत प्राचीन है। चूँकि प्राचीन भारतीय साहित्य समय के थपेड़े में बहुत कुछ लुप्त हो गये हैं, इसलिए ठीक-ठीक कहना असम्भव है कि भारत में नाटक की परम्परा कब से और कहाँ से शुरू हुई। सबसे प्राचीन उपलब्ध नाटक महाकवि **भास** का है। उसके बाद **कालिदास**, **भवभूति**, **शूद्रक**, **हर्षवर्द्धन**, **विशाखदत्त** आदि अनेक महान् नाटककारों की परम्परा में अनेक महान् नाट्य-कृतियाँ मिलती हैं, जिन पर किसी भी साहित्य को गर्व हो सकता है।

❑ **हिन्दी में नाटक साहित्य का प्रारम्भ कब हुआ ?**

वास्तव में हिन्दी में नाटक साहित्य का प्रारम्भ 19वीं शती से ही हुआ। **डॉ० दशरथ ओझा** ने 13वीं शती से हिन्दी नाटक का उदय माना है। उन्होंने लिखा है कि हिन्दी का सर्वप्रथम उपलब्ध नाटक 'गयसुकुमार रास' जो संवत् 1289 वि० में रचित हुआ था और इसमें रास के सभी तत्त्व विद्यमान हैं। परन्तु वास्तव में यह काव्य है, इसमें नाटकीय तत्त्वों का अभाव है।

डॉ० गणपति चन्द्रगुप्त ने महाकवि विद्यापति द्वारा रचित नाटकों को हिन्दी का प्राचीन नाटक माना है, जिसमें से 'गोरक्ष विजय' ही उपलब्ध है, जिसका गद्य भाग संस्कृत तथा पद्य भाग मैथिली में है, पर अप्रकाशित होने के कारण इसका अधिक विवरण नहीं मिलता। इसके बाद 16वीं-17वीं तथा 18वीं सदी में भी कुछ नाटक मिलते हैं, पर नाटक के सभी तत्त्व इनमें नहीं मिलते हैं। देखा जाए तो 19वीं सदी से आधुनिक हिन्दी नाटक का आरम्भ मानना चाहिए।

रामचन्द्र शुक्ल—''आधुनिक गद्य साहित्य की परम्परा का प्रवर्तन नाटकों से हुआ।''

—*हिन्दी साहित्य का इतिहास*, पृ० 432

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने स्पष्ट किया है कि पुनर्जागरण आन्दोलन की मुख्य प्रतिज्ञा ही थी कि हिन्दू जाति की एकांतिक भावना का निरसन करके उसे एक समाज के रूप में गठित किया जाए। ब्रह्मसमाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, तदीय समाज (भारतेन्दु द्वारा 1873 में स्थापित) की स्थापना इस बात की पुष्टि करते हैं। चूँकि नाटक सभी साहित्य और कला-माध्यमों के बीच अपनी प्रकृति में सर्वाधिक सामाजिक है। इसके प्रस्तुतीकरण में अनेक प्रकार के कलाकारों के सहयोग तथा इसका आस्वादन समाज द्वारा होता है। ''इस स्थिति में पुनर्जागरण की व्यापक सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति के लिए नाटक ही सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम था। यों गद्य के क्षेत्र में नाट्य माध्यम का पहला चुनाव करके भारतेन्दु ने अपनी सही ऐतिहासिक दृष्टि का परिचय दिया।''

—*हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास*, पृ० 84

❑ **16वीं-19वीं शती की नाटक रूप में प्रसिद्ध रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए। क्या उन्हें हिन्दी के आधुनिक नाटक की सूची में सम्मिलित किया जा सकता है ?**

16वीं से 19वीं शती की प्रसिद्ध नाट्यकृतियों में उल्लेखनीय **प्राणचन्द्र चौहान** का 'रामायण महानाटक' (1667 वि०, 1610 ई०), **हृदयराम** का 'हनुमन्नाटक' (सं० 1680 वि०, 1623 ई०), **बनारसीदास** का 'समयसार' (सं० 1693 वि०, 1636 ई०), **श्रीकृष्ण मिश्र** के संस्कृत नाटक का हिन्दी अनुवाद, **यशवन्त सिंह** का 'प्रबोधचन्द्रोदय' नाटक (1700 वि०, 1643 ई०), कालिदास के 'शकुन्तला' नाटक का अनुवाद **नेवाज** कृत 'शकुन्तला नाटक' (1727 वि०, 1670 ई०), **रघुराम नागर** कृत 'सभासार' (सं० 1757 वि०, 1700 ई०), **कृष्ण जीवन लछीराम** कृत 'करुणाभरण' (सं० 1772 वि०, 1715 ई०), **ब्रजवासीदास** का 'प्रबोधचन्द्रोदय' (सं० 1793-1853 वि०, 1736-1796 ई०), रीवाँ-नरेश **विश्वनाथ सिंह** का 'आनंदरघुनन्दन' (1907-1850 ई०), **देवकवि** का 'देवमायाप्रपंच' आदि नाटक हैं।

इसमें से **नेवाज कवि** के 'शकुन्तला' नाटक, **बनारसीदास** के 'समयसार' तथा **ब्रजवासीदास** के 'प्रबोधचन्द्रोदय' के बारे में भारतेन्दु जी लिखते हैं, ''इनकी रचना काव्य की भाँति है, नाटक रीत्यनुसार पात्र प्रवेश आदि कुछ नहीं है।''

—भारतेन्दु 'नाटक' पृ० 83 (*नाटकावली* से)

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

उत्तर प्रदेश के राजकीय महाविद्यालयों में बनेंगी ई-लाइब्रेरी

संसाधनों के अभाव में संचालित राजकीय महाविद्यालयों को शैक्षिक दृष्टि से समृद्ध करने की तैयारी है। छात्रों को विषयों की वैश्विक स्तर की जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 12वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत राजकीय महाविद्यालयों के पुस्तकालयों को ठीक करने के साथ उनमें ई-लाइब्रेरी भी स्थापित की जाएगी। इनमें स्थापित प्रयोगशालाओं को आधुनिक उपकरणों से लैस करने की भी योजना है।

प्रदेश में 137 राजकीय महाविद्यालय हैं। इनमें से 70 महाविद्यालयों में विज्ञान विषयों की शिक्षा भी दी जाती है। राजकीय महाविद्यालय शिक्षकों की जबर्दस्त कमी से जूझ रहे हैं। भूमण्डलीकरण और सूचना क्रान्ति के इस युग में छात्रों को विभिन्न विषयों की जानकारी उपलब्ध कराना वक्त की माँग है। इसको देखते हुए उच्च शिक्षा विभाग ने प्रदेश के राजकीय महाविद्यालयों में ई-लाइब्रेरी स्थापित करने की योजना बनाई है।

अब फैशन डिज़ाइनर भी लिख रहे किताबें

एक वक्त ऐसा भी था जब फैशन इण्डस्ट्री को कोई खास तवज्जो नहीं दी जाती थी। फैशन डिज़ाइनरों को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता था। वहीं अब परिस्थितियाँ काफी बदल चुकी हैं।

अब फैशन डिज़ाइनर भी आत्मकथा, संस्मरण और किताबों को लिखने में रुचि लेने लगे हैं। इसका उद्देश्य लोगों तक फैशन इण्डस्ट्री की पहुँच को बढ़ाना है। रॉडरिक ने अपनी किताब 'द ग्रीन रूम' का हाल ही में विमोचन किया था। वह अपने गृहराज्य गोवा के फैशन पर भी मोडा गोवा नाम की एक किताब लिख चुके हैं।

हर महीने मिलेगी 25 हजार रुपये की फेलोशिप

पीएच०डी० करने वाले अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्रों के लिए अच्छी खबर है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने पीएच०डी० के बाद इन्हें दी जाने वाली फेलोशिप तथा कन्टिन्जेन्सी में वृद्धि कर दी है। खास बात यह है कि न केवल फेलोशिप की रकम में बढ़ोत्तरी की गई है, बल्कि फेलोशिप दिए जाने की अवधि भी तीन साल तक के लिए बढ़ा दी गई है। यूजीसी ने यह फैसला फेलोशिप बढ़ाने के लिए बनी कमेटी की रिपोर्ट पर लिया है।

अभी तक एससी-एसटी के छात्रों को सिर्फ दो साल तक के लिए फेलोशिप मिलती थी। इसे बढ़ाकर पाँच साल कर दिया गया है।

ऐसे छात्रों को अब तक कन्टिन्जेन्सी के तौर पर साल में एक बार तीस हजार रुपये दिए जाते थे। अब इसे बढ़ाकर 50 हजार रुपये सालाना कर दिया गया है।

हिन्दी में पढ़ें, कैसे तय हुए भगत सिंह पर आरोप

शहीदे आजम सरदार भगत सिंह पर लाहौर कोर्ट में चले केस की कार्यवाही अब देशवासियों को हिन्दी में पढ़ने को मिलेगी। हरिद्वार के गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से उर्दू और अंग्रेजी में उपलब्ध कोर्ट ट्रायल का हिन्दी में अनुवाद कराया गया है। विश्वविद्यालय की योजना इसे तीन खण्डों में प्रकाशित करने की है। प्रकाशन के लिए भारत सरकार से अनुमति माँगी गई है।

शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव सहित 18 लोगों पर पाँच मई 1930 को लाहौर कोर्ट में ट्रायल शुरू हुआ था। 11 सितम्बर 1930 को कोर्ट ने इन पर आरोप तय कर दिए। यह पूरी कार्यवाही 1659 पृष्ठों में दर्ज है। अधिकतर कार्यवाही उर्दू भाषा में दर्ज की गई। यदा-कदा अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।

तीन साल पहले लाहौर हाईकोर्ट से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय लाई गई कोर्ट ट्रायल की सत्यापित प्रतिलिपि का उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी के विद्वानों द्वारा छह मास के अथक परिश्रम से यह हिन्दी अनुवाद सम्भव हुआ है।

भोजपत्र पर ब्राह्मी लिपि में लिखा राष्ट्रगान

आजादी के 65 साल बाद सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की शोध-छात्रा विजय लक्ष्मी पाण्डेय ने 42 दिन की कड़ी मेहनत के बाद देश की प्राचीनतम ब्राह्मी लिपि में राष्ट्रगान लिखकर एक नया इतिहास रचा है। इतिहास इसलिए कि यह वही लिपि है जिसके सहारे सम्राट् अशोक ने देशभर के शिलालेखों पर अपना राज्यादेश लिखवाया था। वह चाहती हैं कि ब्राह्मी लिपि में लिखा राष्ट्रगान देश के हर संग्रहालय में रखा जाए।

अब संस्कृत में भी बाँचे जाएँगे श्री गुरुग्रन्थ साहिब

श्री गुरुग्रन्थ साहिब अब संस्कृत में भी बाँचे जायेंगे। इस महान् ग्रन्थ की वाणियों को देवभाषा में पिरोने का काम कर रहे हैं जयनारायण शास्त्री। संस्कृत को जनमानस की बोली बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले 82 वर्षीय शास्त्री को कई प्रतिष्ठित संस्थाएँ सम्मानित कर चुकी हैं।

तुर्की है हिन्दी का मूल स्थान

हिन्दी समेत कई भाषाओं का उदय कहाँ से हुआ? इस पहेली को शोधकर्ताओं ने सुलझाने का दावा किया है। उनके अनुसार हिन्दी, रूसी, जर्मन और अंग्रेजी भाषाओं का उद्भव अनातोलिया में हुआ था, जिसे वर्तमान में तुर्की कहा जाता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि पश्चिमी एशियाई क्षेत्रों से करीब 8000 से 9500 साल पहले भारोपीय (भारतीय-यूरोपीय) भाषाएँ फैलीं।

न्यूजीलैंड में यूनिवर्सिटी ऑफ ऑकलैण्ड के जीवविज्ञानी क्वेंटीन एटकिंसन के नेतृत्व में शोधकर्ताओं ने सौ से अधिक प्राचीन एवं समकालीन भाषाओं के शब्दों के विश्लेषण के लिए कम्प्यूटेशनल तरीके का प्रयोग किया। शोधकर्ताओं का कहना है कि भारोपीय भाषाओं का मूल स्थान प्राचीन पश्चिमी एशिया का अनातोलिया है। हर महाद्वीप में बोली जाने वाली इन भाषाओं को करीब तीन अरब लोग बोलते हैं। यह शोध साइंस जर्नल में प्रकाशित हुआ है। यद्यपि भारोपीय भाषाओं के मूल स्थान को लेकर मतभेद है।

रुश्दी की नई किताब

भारतीय मूल के विवादित ब्रिटिश लेखक सलमान रुश्दी की नई किताब उस क्षण को लेकर लिखी गई है जब वह अपने उपन्यास 'द सैटेनिक वर्सेज' को लेकर मौत के फतवे के कारण जिन्दगी बचाते फिर रहे थे। इसे 'जोनाथन केप' ने प्रकाशित किया है।

किताब में 65 वर्षीय रुश्दी ने इस बात का उल्लेख किया है कि कैसे वह ब्रिटेन के 20 सुरक्षित जगहों पर ठहरे थे और इयान मैकइवान और हनीफ कुरैशी जैसे लेखकों की तरह मित्रों के पास जाने के लिए गुप्त रूप से भुगतान किया था। किताब का नाम 'जोसेफ एंटोन' है।

गोपालदास नीरज को भाषा संस्थान का दायित्व

उत्तर प्रदेश सरकार ने लम्बे इन्तजार के बाद आयोगों व निगमों में राजनीतिक मनोनयन का सिलसिला शुरू कर दिया है। इस क्रम में प्रसिद्ध कवि व गीतकार गोपालदास नीरज को उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान का कार्यकारी उपाध्यक्ष बना दिया है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का कार्यकारी उपाध्यक्ष साहित्यकार उदयप्रताप सिंह को बनाया गया है। इन दोनों को कैबिनेट मन्त्री को मिलने वाली सभी सुविधाएँ प्राप्त होंगी। इनका कार्यकाल एक वर्ष का होगा।

तिलक की आवाज का दुर्लभ ऑडियो मिला

पुणे में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की आवाज का एक दुर्लभ ऑडियो मिला है जो 97 साल पहले का है। तिलक ट्रस्ट के अध्यक्ष दीपक तिलक के अनुसार, यह लोकमान्य की आवाज की एकमात्र रिकॉर्डिंग है जिसे सेठ लखमीचन्द के पौत्र मुकेश नारंग ने सँभालकर रखा हुआ था। कभी अपनी आवाज से अंग्रेजों को थर्रा देने वाले इस महान् नेता के प्रपौत्र दीपक तिलक ने बताया कि यहाँ केसरी ट्रस्ट के पुस्तकालय में वर्षों से लोकमान्य के लेखों और किताबों के व्यापक

संग्रह को सँभालकर रखा गया है, लेकिन उनकी आवाज का ऑडियो उपलब्ध नहीं था। तिलक की आवाज का यह ऑडियो 21 सितम्बर 1915 को गणेश उत्सव के दौरान एक संगीत कार्यक्रम में सेठ लखमीचन्द नारंग ने रिकॉर्ड किया था।

अमेजन का देश में किंडल स्टोर

अमेरिकी ई-कॉमर्स फर्म अमेजन ने विगत दिनों देश में अपना पहला किंडल स्टोर शुरू किया। इसमें एक लाख से अधिक ई-बुक पेश की जाएँगी। इसके साथ की कम्पनी ने 6,999 रुपये की शुरुआती कीमत के साथ अपने ई-रीडर को भी लांच किया है।

इस किताब को उठाना किसी के वश में नहीं

अबूधाबी। दुनिया की सबसे भारी किताब का प्रदर्शन इन दिनों यहाँ के मॉल 'अल अइन' में किया जा रहा है। 'दिस इज़ मोहम्मद' नामक इस किताब का वजन एक हजार किलोग्राम है। किताब को पहली बार फरवरी में दुबई वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में लांच किया गया था।

भारतीय छात्रा ने जीती प्रतियोगिता

यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज की बेस्ट यंग स्पीकर फ्रॉम एशिया प्रतियोगिता में इस बार एक भारतीय छात्रा ने बाजी मारी है। इसके अन्तर्गत उन्हें लन्दन स्कूल ऑफ बिजनेस एण्ड फाइनेंस से एम०बी०ए० की पढ़ाई करने के लिए छात्रवृत्ति दी जाएगी। श्रुति विजयचन्द्रन ने आठ अन्य प्रतिभागियों को पछाड़ते हुए यह प्रतियोगिता जीती। रॉबिन्सन कॉलेज में सम्पन्न हुई इंग्लिश स्पीकिंग प्रतियोगिता में श्रुति को पहला स्थान मिला।

सँजोई जाएगी कवियों की आवाजें

जहन में पानी के बादल अगर आए होते,
मैंने मिस्री के घरौंदे न बनाए होते....।
जब भी ये शेर सुनाई देते हैं, निगाहों के आगे खुद ब खुद एक अक्स-सा बनने लगता है।

उर्दू अदब की नामचीन हस्ती वसीम बरेलवी की आवाज और हिन्दी काव्य जगत् के विख्यात नवगीतकार माहेश्वर तिवारी की आवाज को अब धरोहर के रूप में सहेजा जाएगा। आकाशवाणी ने हिन्दी-उर्दू की इन शख्सियतों पर बाकायदा काम शुरू कर दिया है।

हाथोंहाथ बिक रही कलाम की किताब

राजनीतिक गलियारों में हलचल मचाने वाली पूर्व राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम की पुस्तक 'टर्निंग प्वाइंट्स' का हिन्दी संस्करण भी हलचल मचाने में कामयाब है। डॉ० कलाम की इस पुस्तक की दस हजार प्रतियों की बुकिंग रिलीज के पहले ही हो चुकी है।

कोलम्बिया में रविन्द्र की प्रतिमा

पिछले दिनों केन्द्रीय मन्त्री ज्योतिरादित्य सिन्धिया ने नोबेल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ ठाकुर की आवक्ष प्रतिमा का कोलम्बिया के एक शिक्षा केन्द्र में उद्घाटन किया।

मण्टो की सरजमीं पर उनकी बेटियों ने किया सजदा

उर्दू के बेबाक लेखक सआदत हसन मण्टो की तीनों बेटियाँ विगत दिनों अटारी सड़क सीमा के रास्ते भारत पहुँचीं। वे अपने पिता की जन्मभूमि को नमन कर उन्हें श्रद्धा-सुमन भेंट करने आयी थीं। नुसरत जलाल, निगाहत पटेल व नुजाहत अरशद ने बताया कि वे देखने आयी हैं कि उनके पिता के भीतर किस माटी की खुशबू थी कि उन्होंने ऐसा साहित्य रच डाला जो न केवल दक्षिणी-पूर्वी एशिया में पढ़ा गया, बल्कि विश्वभर में उसे मान्यता मिली। उनके पिता ने भारत-पाकिस्तान के विभाजन में पीड़ित लाखों लोगों के दर्द को समझा। उसको अपने भीतर रख कर ऐसा साहित्य रचा, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। वे पिता की जन्मभूमि गाँव पपड़ौदी (समराला) की माटी का तिलक लगाएँगी। गाँव की माटी पाकिस्तान लेकर जायेंगी।

पाण्डुलिपि भण्डार का होगा संरक्षण

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय ने राष्ट्रीय संरक्षण अभियान के अन्तर्गत जम्मू-कश्मीर के समृद्ध पाण्डुलिपि भण्डार को संरक्षित करने का फैसला किया है।

जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादेमी की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्री कपिल सिब्बल ने कहा कि मन्त्रालय विभिन्न भाषाओं की आदर्श किताबों का जम्मू-कश्मीर की स्थानीय भाषाओं में अनुवाद और राज्य की स्थानीय भाषाओं की श्रेष्ठ किताबों का विभिन्न भाषाओं में भी अनुवाद कराये। उन्होंने अकादेमी की समृद्ध पाण्डुलिपियों के संरक्षण और डिजिटलीकरण की जरूरत पर बल दिया।

इस दौरान दुर्लभ पाण्डुलिपियों, चित्र और अकादेमी की प्रकाशित रचनाओं की प्रदर्शनी भी लगायी गयी।

फिल्म में अभिनय करेंगी महाश्वेता देवी

सुविख्यात लेखिका और मैगसेसे पुरस्कार विजेता महाश्वेता देवी की कई कहानियों को अब तक यादगार फिल्मों की शक्ल दी जा चुकी है। लेकिन इस बार वह परदे पर आ रही अपनी कहानी में खुद एक किरदार की भूमिका अदा करती नजर आयेंगी।

फिल्म 'उल्लास' में तीन कहानियाँ होंगी, जिनमें 'दौड़' शीर्षक वाले हिस्से में आदिवासियों के अधिकारों के लिए कार्य करने वाली लेखिका ने काम किया है। 86 साल की लेखिका ने पिछले दिनों मीडियाकर्मियों से बातचीत में खुद यह जानकारी दी। इस मौके पर फिल्म की कुछ क्लिप भी दिखायी गयी। फिल्म आदिवासियों के शोषण पर आधारित है। महाश्वेता देवी ने कहा कि मैं किसी अहम् कलाकार के साथ नहीं दिखायी दूँगी। लेकिन पहली बार मैं कैमरे के सामने आ रही हूँ।

ऐतिहासिक किताबों को नया जीवन

मुगलों के इतिहास की गवाह किताब 'स्टोरिया डू मुगॉर ऑर मुगॉल इण्डिया' अपने 400 सालों के सफर में अन्तिम साँसें गिन रही है। 1851 में छपी वाल्मीकि रामायण पर कीड़ों व फफूँद की परत चढ़ चुकी है। इसी तरह केन्द्रीय पुरातत्त्व पुस्तकालय की सैकड़ों साल पुरानी 299 ऐतिहासिक किताबें बदहाल हो चुकी हैं।

अब इन्हें उपचार के लिए देहरादून स्थित भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ए०एस०आइ०) की विज्ञान शाखा में लाया गया है। विज्ञान शाखा में इन ऐतिहासिक किताबों का केमिकल ट्रीटमेण्ट किया जायगा, ताकि उन्हें नया जीवन दिया जा सके। किताबों की महत्ता का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि ये 16वीं-17वीं सदी से लेकर 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम और 19वीं सदी में आजादी से पहले की गयी वार्ताओं के दौर को खुद में समेटे हुए है। अधिकतर किताबें छपाई से बाहर (आउट ऑफ प्रिण्ट) हैं। इन किताबों के एक लाख 80 हजार पृष्ठों का केमिकल ट्रीटमेण्ट किया जायगा। 2014 तक किताबों को नये रूप में वापस भेज दिया जाएगा।

विभाग में लायी गयी प्रमुख किताबों में धातु से बनी मुद्रा का वजन व मानक वाली किताब 'दि ओरिजन ऑफ मेटालिक करेंसी एण्ट वेट स्टैंडर्ड्स' (छपाई वर्ष 1892), 'गजेटियर ऑफ बॉम्बे प्रेजीडेंसी' (1885), 'हिस्ट्री ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन कॉल्स द आगरा प्रोवेंसीज' (1803-1985) व 'इण्डिया ट्रैक्ट्स' (1764) शामिल हैं।

वोकेशनल में डॉक्टरेट डिग्री को मंजूरी

वोकेशनल शिक्षा में भी अब मास्टर डिग्री और डॉक्टरेट का रास्ता साफ हो गया है। मानव संसाधन विकास मन्त्रालय ने नेशनल वोकेशनल एजुकेशन क्वालीफिकेशन फ्रेमवर्क (एन०वी०ई०क्यू०एफ०) को लागू करने के आदेश जारी कर दिये हैं। इसके अन्तर्गत कक्षा नौ से डाक्टरेट तक की वोकेशनल शिक्षा दस चरणों में पूरी होगी।

करीना की किताब दिसम्बर में आयेगी

बॉलीवुड की चर्चित ग्लैमरस अभिनेत्री करीना कपूर की फैशन और सुन्दरता से जुड़ी बातें अब गुप्त नहीं रहेंगी क्योंकि करीना फैशन और सुन्दरता से जुड़ी बातों का अपनी नयी किताब में खुलासा करने जा रही हैं। यह किताब दिसम्बर में प्रकाशित होगी। 'स्टाइल डायरी ऑफ ए बॉलीवुड दिवा' नाम की इस किताब के साल के अन्त में आने की सम्भावना है।

हिन्दू राज्य-तंत्र

[सम्पूर्ण : प्रथम तथा द्वितीय खण्ड]

काशीप्रसादजी जायसवाल

अनुवादक : रामचंद्र वर्म्मा

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 408

सजिल्द : 978-81-7124-884-1 • रु० 400.00
अजिल्द : 978-81-7124-885-8 • रु० 250.00

मूल पुस्तक अंग्रेजी में लिखी गयी थी। यह मूल पुस्तक का अनूदित संस्करण है। पुस्तक में लेखक ने अत्यन्त सजीव व नये दृष्टिकोण से वैदिक इतिहास की सांगोपांग झाँकी पाठकों के लिए उपस्थित की है। साम्राज्यों के उत्थान-पतन की गाथाओं से बिल्कुल अलग यह हिन्दू राज्य-तंत्र की राजा रहित शासन प्रणालियों का विस्तृत आख्यान भी है।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

राज-कर

राष्ट्र-संघटन की दृष्टि से राज-कर के सम्बन्ध में हिन्दू सिद्धान्त बहुत अधिक महत्त्व का है। राज-कर धर्मशास्त्रों के अनुसार निश्चित था और पवित्र सार्वजनिक धर्म के अनुसार यह भी निश्चित था कि कौन-कौन सा कर किस हिसाब से लिया जाना चाहिए। इसका परिणाम यह होता था कि शासन-व्यवस्था चाहे जिस प्रकार की होती थी, परन्तु राज-कर के सम्बन्ध में राजा या शासक का मन कभी विचलित न होता था। इसलिए राज-कर के सम्बन्ध में राजा और प्रजा में कोई झगड़ा ही खड़ा नहीं हो सकता था। झगड़े और अत्याचार की जो खास जड़ थी, उसका बचाव इस प्रकार कर दिया गया था।

ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध होती है कि राज-कर सम्बन्धी जो नियम थे, उनका सब अवस्थाओं में पूर्ण रूप से पालन होता था। उदाहरण के लिए शातवाहन राजवंश की महारानी बलश्री का शिलालेख देखना चाहिए, जिसमें यह घोषित किया गया है कि उसका पुत्र पवित्र धर्म-व्यवस्था के अनुसार राज-कर लिया करता था। दूसरे अनेक शिलालेखों से भी यही बात सूचित होती है। साहित्य में ऐसे कई विलक्षण उदाहरण मिलते हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि राज-कर के सम्बन्ध में धर्म द्वारा निश्चित जो सिद्धान्त थे, उनका उल्लंघन नहीं होता था। सम्राट् चन्द्रगुप्त को सेल्यूकस के साथ युद्ध करने के लिए धन की आवश्यकता थी। उसने और उसके महामात्य कौटिल्य ने धन-संग्रह करने के लिए अपना सारा बुद्धि-बल लगा दिया। धर्म के अनुसार जो राज-कर प्राप्त होता था, वह इस कार्य के लिए यथेष्ट नहीं था। जैसा कि अर्थशास्त्र से प्रमाणित होता है, उन लोगों को कुछ और विलक्षण उपायों का आश्रय लेना पड़ा था। इससे एक ओर तो धर्म का महत्त्व सूचित होता है और दूसरी ओर यह सिद्ध होता है कि धर्म द्वारा निश्चित राज-कर के सम्बन्ध में कितनी कठिनाइयाँ थीं। चन्द्रगुप्त ने अपनी प्रजा से प्रणय की भिक्षा की थी, अर्थात् कहा था कि आप लोग मुझ पर अपना प्रेम सूचित करने के लिए धन दें। उसने देव-मन्दिरों से भी धन उगाहा था। पुष्यमित्र के समय में पाणिनि (5. 3.99) पर भाष्य करते हुए पतंजलि ने परिहासपूर्वक लिखा है कि मौर्य लोग पूजन के लिए देवताओं की प्रतिमाएँ स्थापित करके धन एकत्र करना चाहते थे। जैनों में परम्परा से यह प्रवाद चला आता है कि चाणक्य ने राजकोष की पूर्ति करने के लिए घटिया चाँदी के आठ करोड़ कार्षापण बनवाए थे। इन सब घटनाओं से एक बहुत बड़ी आवश्यकता और साथ ही धर्म के सम्बन्ध में पूरा-पूरा आदर प्रकट होता है।

राज-कर से जो आय होती थी, उस पर मंत्रि-परिषद् का पूरा-पूरा अधिकार होता था; और उसी को राज-कर एकत्र करने का भी अधिकार प्राप्त था। ई०पू० चौथी शताब्दी तक में मेगास्थनीज के कथन के आधार पर हम देखते हैं कि आय-व्यय आदि पर मन्त्रि-परिषद् का अधिकार था, जिसका इतिहास वहीं से आरम्भ नहीं होता है, बल्कि वैदिक काल के रत्नियों और रत्नी कोषाध्यक्ष से होता है। भारद्वाज का प्रमाण भी बिलकुल स्पष्ट है और वह ई०पू० चौथी शताब्दी से भी पहले का है। उसके कथनानुसार भी मंत्रि-परिषद् ही राज-कर एकत्र करती थी और समस्त व्यय भी उसी के हाथ में था।

यदि राज-कर के मान और संग्रह का प्रश्न छोड़ दिया जाय, तो भी हिन्दू राजनीति-शास्त्र के अनुसार राजा को जो कर दिया जाता था, वह उसकी शासन- सम्बन्धी सेवाओं का वेतन माना जाता था। महाभारत में कहा है—

बलिषष्ठेन शुल्केन दण्डेनाथापराधिनाम्।
शास्त्रानीतेन लिप्सेथा वेतनेन धनागमम्॥

अर्थात् ''षष्ठांश बलि-कर (शुल्क अथवा आयात और निर्यात कर), अपराधियों से मिलने वाला जुर्माना और उनका अपहृत धन आदि जो कुछ शास्त्रों के विधानों के अनुसार प्राप्त हों, वे सब तुम्हारे वेतन के रूप में होंगे और वही तुम्हारी आय के द्वार या राज-कर होंगे।''

नारद ने भी व्यवस्था दी है—

''राजाओं को निश्चित प्रथाओं के अनुसार जो कुछ धन प्राप्त हो और भूमि की उपज का जो षष्ठांश प्राप्त हो, वह सब राज-कर होगा और प्रजा की रक्षा करने के पुरस्कारस्वरूप राजा को मिलेगा।''

यह सिद्धान्त उतना ही पुराना है, जितना कि स्वयं कौटिल्य का अर्थशास्त्र है (300 ई०पू०); बल्कि यों कहना चाहिए कि वह ई०पू० 300 से भी अधिक पुराना है; क्योंकि वह अर्थशास्त्र में उद्धृत किया गया है। राज-कर राजा का वेतन समझा जाता था; और यह वेतन उस सिद्धान्त के अनुसार निश्चित था जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है और जिसके अनुसार राजा तथा प्रजा में पारस्परिक सम्बन्ध ठीके के रूप में निश्चित होता था। उस सिद्धान्त के अनुसार दोनों में यह ठीका कराने वाला दलाल स्वयं स्रष्टा होता था। स्रष्टा ने ही लोगों से मनु का निर्वाचन करने की सिफारिश की थी।

राजनीतिशास्त्र के आचार्यों ने इस वेतन वाले सिद्धान्त को और भी विकसित करके उसे ऐसा रूप दिया था जिसे हम राज-कर का दैवी सिद्धान्त कह सकते हैं। हम सबसे अच्छा यही समझते हैं कि इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में स्वयं शास्त्रकार का ही वचन यहाँ उद्धृत कर दें। वह वचन इस प्रकार है—

स्वभागभृत्या दास्यत्वे प्रजानां च नृपः कृतः।
ब्रह्मणा स्वामिरूपस्तु पालनार्थं हि सर्वदा॥

''ब्रह्मा ने राजा को बनाया; यद्यपि उसने राजा को स्वामी के रूप में बनाया, पर वास्तव में वह प्रजा का पालन करनेवाला सेवक ही है। प्रजा की निरन्तर रक्षा और वृद्धि करने के बदले में राजा को राज-कर के रूप में उसका अंश या वेतन मिलता है।''

दूसरे शब्दों में हम यही बात इस रूप में कह सकते हैं कि प्रजा के स्वामी-सेवक के निर्वाह के लिए स्वयं ब्रह्मा ने उसका वेतन निश्चित किया था। वह उस वेतन से अधिक नहीं ले सकता था; क्योंकि उसे अधिक लेने का अधिकार ही नहीं था।.....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

वेबसाइट : www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

मौत के 57 साल बाद मण्टो को निशान-ए-इम्तियाज सम्मान

लोकप्रिय लेखक सआदत हसन मण्टो को पाकिस्तान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'निशान-ए-इम्तियाज' से सम्मानित किया गया। मण्टो को यह सम्मान उनकी मौत के 57 वर्ष बाद दिया गया है।

अश्लीलता के आरोपों के विभिन्न मुकदमों का सामना करने के बाद मण्टो की मृत्यु बहुत ही निर्धनता में हुई थी। मण्टो को उनकी लघु कथाओं के लिए सबसे ज्यादा जाना जाता है। विशेष तौर पर 1947 में भारत-पाक विभाजन की त्रासदी का चित्रण करने वाली कहानियों के लिए। वह मुम्बई में पटकथा-लेखक का करियर छोड़कर वर्ष 1948 के आरम्भ में अपने परिवार के साथ पाकिस्तान चले गए थे। उनकी मौत बहुत ज्यादा शराब पीने के कारण 42 वर्ष की उम्र में वर्ष 1955 में हुई।

गोपीचन्द नारंग को भी निशाने इम्तियाज

उर्दू भाषा के लेखक प्रोफेसर गोपीचन्द नारंग को पाकिस्तान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'निशाने इम्तियाज' से सम्मानित किया जाएगा। 81 वर्षीय भारतीय साहित्यकार को उर्दू भाषा व साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सम्मान दिया जाएगा। राष्ट्रपति जरदारी ने पाकिस्तान के 66वें स्वतन्त्रता दिवस के मौके पर निशाने इम्तियाज पुरस्कारों की घोषणा की।

उदयराज सिंह स्मृति सम्मान

चर्चित साहित्यिक पत्रिका 'नई धारा' द्वारा वर्ष 2012 का छठा 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान' प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० महीप सिंह (गुड़गाँव) को दिया जाएगा, जिसके अन्तर्गत उन्हें 1 लाख रुपये सहित सम्मान-पत्र, स्मृतिचिह्न आदि अर्पित किए जाएँगे। इसके साथ ही प्रसिद्ध कवि मानिक बच्छावत (कोलकाता), चर्चित लेखक-सम्पादक रामकुमार कृषक (दिल्ली) तथा चर्चित युवा कथाकार सुश्री शरद सिंह (सागर) वर्ष 2012 के 'नई धारा रचना सम्मान' से सम्मानित किये जाएँगे, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक लेखक को 25-25 हजार रुपए सहित सम्मान-पत्र, प्रतीकचिह्न आदि अर्पित किए जाएँगे।

भारतीय मूल के नौ अमेरिकी सम्मानित

इण्डो अमेरिकन चैम्बर ऑफ कॉमर्स ऑफ ग्रेटर ह्यूस्टन (आइ०ए०सी०सी०जी०एच०) ने भारतीय मूल के नौ अमेरिकियों को सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान भारत और अमेरिका के बीच सम्बन्ध को बढ़ावा देने की दिशा में उनके योगदान के लिए दिया गया है। 2012 एक्सीलेंस अवार्ड सुरेश खतोर को अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक के लिए दिया गया। सुरेश क्यूलेन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में प्रोफेसर हैं और स्नातक और अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के सहायक डीन हैं। आर०के० चोपड़ा को इस साल का इण्टरनेशनल बिज़नेस एडवोकेट का अवार्ड दिया गया। महिला उद्यमी का पुरस्कार विजया ढिंगरा और पुष्पा शिनाय को दिया गया।

सुलभ साहित्य अकादमी पुरस्कार

हिन्दी साहित्य में विशेष योगदान व कई पुरस्कारों से पुरस्कृत स्वर्गीय पद्मश्री यशपाल जैन को उनकी जन्म शताब्दी पर हिन्दी साहित्य में उनके विशिष्ट योगदान के लिए पूर्व घोषित सुलभ साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिन्दी भवन के सभागार में उनकी पुत्री अन्नदा पाटनी को बतौर पुरस्कार दो लाख रुपये का चेक व प्रशस्ति-पत्र दिया गया। वर्ष 2000 में ही साहित्यकार यशपाल जैन को इस पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की गई थी।

हिन्दी साहित्य रत्न

लेखन कला की विभिन्न विधाओं के माध्यम से लेखक समाज को दिशा देता है। साहित्य आत्मा की झलक होती है। वाराणसी धर्मप्रान्त के धर्माचार्य बिशप डॉ० राफी मंजली ने ये बातें कहीं।

वह विगत दिनों तरना शिवपुर स्थित नवसाधना कला केन्द्र में कैथोलिक हिन्दी साहित्य समिति की ओर से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे।

समापन समारोह के दौरान हिन्दी साहित्य समिति की ओर से बिशप डॉ० राफी मंजली के अलावा मसीही साहित्यकार फादर दिलराज डुंगडुंग, फादर थॉमस बेक और सत्य साक्षी मासिक पत्रिका के सम्पादक फादर मुकुल बड़ा को हिन्दी साहित्य रत्न 2012 से सम्मानित किया गया। इस दौरान इन लोगों को अंगवस्त्रम् व प्रशस्ति-पत्र दिया गया। अध्यक्षता बिशप डॉ० इसीदोर फर्नांडिस ने की।

प्रो० अशोक सेन हुए सम्मानित

परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष ने हरिश्चन्द्र रिसर्च इंस्टीट्यूट के भौतिक विज्ञानी अशोक सेन को सम्मानित किया। समारोह का आयोजन प्रो० सेन को यूरी मिलनर पुरस्कार जीतने के उपलक्ष्य में किया गया। अशोक सेन को यूरी मिलनर सम्मान के रूप में 16.5 करोड़ की पुरस्कार राशि मिली है, जो नोबेल पुरस्कार में मिलने वाली पुरस्कार राशि से लगभग तीन गुनी है। सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए परमाणु ऊर्जा आयोग (एईसी) के अध्यक्ष व परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव डॉ० रतन कुमार सिन्हा ने कहा कि इस सम्मान से निश्चित रूप से देश की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फैली है।

वादरायण व्यास सम्मान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के शिक्षक डॉ० शत्रुघ्न त्रिपाठी को प्रतिष्ठित वादरायण व्यास सम्मान के लिए चुना गया है। यह सम्मान राष्ट्रपति के हाथों देशभर से चुने गये युवा शिक्षकों को दिया जाता है, जिन्होंने अन्तरविषयक शोध में उल्लेखनीय काम किया हो। डॉ० त्रिपाठी को 'हृदय रोग का ज्योतिषशास्त्रीय निदान' प्रोजेक्ट के लिए यह सम्मान दिया जा रहा है। देशभर से चार अन्य शिक्षक इस सम्मान के लिए चुने गये हैं।

दो दर्जन विद्वान् किए गए सम्मानित

संस्कृत-संस्कृति संगम में काशी की पाण्डित्य परम्परा से जुड़े दो दर्जन से अधिक विद्वानों को उत्तरीय से सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् की ओर से आयोजित किया गया था। प्रोफेसर मनुलता शर्मा ने कहा कि संस्कृत-संस्कृति का सम्बन्ध वैसा ही है जैसा सागर और उसकी लहरों का। चन्द्रमा और उसकी चाँदनी का। संस्कृत में निहित जो मूल्य हैं उन्हीं से हमारी संस्कृति आज तक संस्कार-युक्त बनी हुई है। बतौर मुख्य अतिथि काशी सुमेरुपीठ के स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती ने संस्कृति के क्षरण पर चिन्ता जताई। प्रो० शिवजी उपाध्याय, डॉ० गणेशदत्त शास्त्री, डॉ० राधेश्याम पाण्डेय, रामपूजन पाण्डेय, प्रो० रमेश द्विवेदी, प्रो० मनुलता शर्मा, डॉ० चन्द्रकान्ता राय, डॉ० रेणु श्रीवास्तव, डॉ० विनोद कुमार खिस्ते, प्रो० श्याम सुन्दर शुक्ल, अजय सिंह, ब्रह्मानन्द चतुर्वेदी समेत दो दर्जन से अधिक विद्वान् सम्मानित किए गए।

डॉ० नीरज के नाम पर पुरस्कार

जिस गंगा-जमुनी तहजीब को अहमियत देते हुए पद्मभूषण डॉ० गोपालदास नीरज ने अलीगढ़ को कर्मस्थली बनाया, वह धरती भी अब उनका कर्ज उतारने जा रही है। नीरज के जीते-जी उनके नाम पर एक पुरस्कार की शुरुआत होने जा रही है। यह सम्मान राज्यस्तरीय होगा और इनामी राशि होगी एक लाख रुपये। समूचा खर्च जिला प्रशासन के अधिकार-क्षेत्र वाली राजकीय औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी (नुमाइश) करेगी। 'नीरज पुरस्कार' के सुपात्र का चयन करने के लिए देश के नामचीन साहित्यकारों की समिति बनेगी।

मेरे लेखन के केन्द्र में स्त्री सबसे अहम्

भारतीय साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए कुसुमांजलि फाउण्डेशन हर वर्ष साहित्यकारों को सम्मानित करता है। इस वर्ष यह पुरस्कार हिन्दी व मैथिली की जानी-मानी लेखिका उषाकिरण खान और तमिल लेखक के० विठ्ठल राव को भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह द्वारा प्रदान किया गया। उषाकिरण को यह पुरस्कार मिथिला की कोयल कहे जाने वाले

कवि विद्यापति के जीवन-दर्शन पर आधारित उपन्यास 'सिरजनहार' के लिए दिया गया है। पुरस्कार के रूप में ढाई लाख रुपये की राशि के साथ प्रशस्ति पत्र शामिल है।

कमल कुमार को सम्मान

कमल कुमार को इस वर्ष का वाग्मणि सम्मान राजस्थान लेखिका संस्थान ने जयपुर में दिया। इस अवसर पर राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० के०एल० कमल, डॉ० लाड कुमारी जैन, अध्यक्ष, राजस्थान महिला आयोग और ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डॉ० आर० डी० सैनी और जाने-माने लेखक, लेखिकाएँ उपस्थित थे। कमल कुमार के उपन्यास 'मैं घूमर नाँचू' पर एक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। इसी वर्ष कमल कुमार को हिन्दी संस्थान, महाराष्ट्र ने भी उनकी साहित्यिक सुदीर्घ हिन्दी-सेवा और सृजनात्मक क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए साहित्य रत्न से सम्मानित किया।

पूर्व विभागाध्यक्ष को राष्ट्रपति सम्मान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० सुदर्शन लाल जैन को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की गयी है। यह सम्मान उनके प्राकृत तथा संस्कृत भाषा में किये गये उल्लेखनीय शैक्षणिक कार्यों के लिए प्रदान किया जाएगा। प्रो० जैन वर्ष 2006 में सेवानिवृत्त हुए थे।

केदार सम्मान

इलाहाबाद में केदार शोध पीठ, बाँदा द्वारा हिन्दुस्तानी एकेडमी के सभागार में आयोजित भव्य समारोह के दौरान 'अस्पताल के बाहर टेलीफोन' कविता-संग्रह के लिए पवन करण को केदार सम्मान 2011 से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में प्रो० नामवर सिंह, भारत भारद्वाज, दूधनाथ सिंह, पवन करण व महेश कटारे मंचस्थ थे। महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा विश्वविद्यालय के कुलपति विभूतिनारायण राय ने समारोह की अध्यक्षता की।

उदयपुर में मीरा सम्मान समारोह

जयपुर में राजस्थान साहित्य अकादेमी के तत्त्वावधान में आयोजित साहित्यकार पुरस्कार सम्मान मीरा समारोह 2012 के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री बी०एल० जोशी तथा मुख्यमन्त्री अशोक गहलोत ने साहित्यकारों को प्रशस्ति-पत्र, नकद राशि, ट्रॉफी और अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्यमन्त्री ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यकार को समाज का मार्गदर्शक माना जाता है। शब्दों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। साहित्य, कला और संगीत ऐसे क्षेत्र हैं जो मानवीय संवेदनाओं से जुड़े हुए हैं और जो व्यक्ति मानवीय संवेदना से जुड़ जाता है, वह किसी के साथ अनीति और अन्याय नहीं करता है।

महामहिम राज्यपाल बी०एल० जोशी ने कहा कि हमारे राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर साहित्य में छिपी है जिसे सँजोकर रखना होगा। हमें ऐसे साहित्यकारों की आवश्यकता है जो हमारे आपसी सामंजस्य को स्थापित कर संरक्षित रख सकें। इस अवसर पर गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति पी०सी० त्रिवेदी, मूर्धन्य साहित्यकार डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय, सदस्य, विधि आयोग, शिवकुमार शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

राजस्थान साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष वेदव्यास ने बताया कि अगले वर्ष अकादेमी द्वारा तीन नये पुरस्कार दिये जाएँगे। पहला पुरस्कार 40 वर्ष के युवा लेखकों को 51 हजार रुपये का, दूसरा पुरस्कार राष्ट्रीय एकता पर आधारित हिन्दी भाषा में अनुवाद का तथा तीसरा पुरस्कार 51 हजार रुपये का साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों पर आधारित होगा। इसके अलावा 3 लाख और 2 लाख की फैलोशिप भी प्रदान की जायेगी।

समारोह में अम्बिकादत्त को मीरांबाई पुरस्कार, नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' को सुधीन्द्र पुरस्कार, चरण सिंह पथिक को रांगेय राघव पुरस्कार, कुन्दन माली को देवराज उपाध्याय पुरस्कार, जितेन्द्र निर्मोही को कन्हैयालाल सहल पुरस्कार, बनज कुमार 'बनज' को सुमनेश जोशी पुरस्कार, उमेश कुमार चौरसिया, शम्भूदयाल सक्सेना को बाल साहित्य पुरस्कार, नेहा चौहान को डॉ० सुधा गुप्ता पुरस्कार, रूपल सोनी, नागेन्द्र अग्रावत, एकता राठौड़ को चन्द्रदेव शर्मा पुरस्कार तथा भानुप्रिया गौड़ को परदेसी पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

साहित्यकारों का कनाडा में सम्मान

अखिल विश्व हिन्दी समिति, न्यूयॉर्क एवं अखिल विश्व हिन्दी समिति, टोरण्टो द्वारा अमेरिका एवं कनाडा में सम्पन्न हुए विभिन्न कार्यक्रमों में आगरा की डॉ० शशि तिवारी, सुश्री शिवरंजनी एवं डॉ० श्री भगवान शर्मा को क्रमशः 'हिन्दी साहित्य निधि', 'हिन्दी काव्यश्री' एवं 'साहित्य-गौरव/हिन्दी कला-निधि' की उपाधि प्रदान करते हुए दोनों कार्यक्रमों में अतिथियों को प्रशस्तिपत्र, श्रीफल, शॉल एवं एक-एक हजार डॉलर की राशि प्रदान की गयी।

अन्तर्राष्ट्रीय सृजनगाथा सम्मान

रायपुर में जानी-मानी लेखिका सुश्री सन्तोष श्रीवास्तव को ताशकंद में साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु 'अन्तर्राष्ट्रीय सृजनगाथा सम्मान' प्रदान किया गया, जिसके अन्तर्गत प्रतीक चिह्न, प्रमाण-पत्र, शॉल एवं पुष्पगुच्छ देकर सर्वश्री बुद्धिनाथ मिश्र, एकान्त श्रीवास्तव तथा जयप्रकाश मानस ने सम्मानित किया।

'शब्द साधक शिखर सम्मान'

पाँचवाँ 'शब्द साधक शिखर सम्मान' हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार श्री ज्ञानरंजन को, 'शब्द साधक जनप्रिय सम्मान' श्री भालचन्द्र जोशी को उनके कहानी-संग्रह 'पालवा' के लिए और 'शब्द साधक युवा (कविता) सम्मान' श्री अच्युतानन्द मिश्र को देने की घोषणा की गयी। शब्द साधक जनप्रिय सम्मान की राशि 21 हजार रुपये और युवा सम्मान की राशि 11 हजार रुपये है।

शेखर जोशी को श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान : 2012

इण्डियन फार्मर्स फर्टिलाइजर लिमिटेड (इफको) द्वारा स्थापित 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान' हिन्दी के प्रख्यात रचनाकार शेखर जोशी को प्रदान किया जाएगा। ज्ञातव्य है कि इस सम्मान के रूप में एक प्रशस्ति पत्र और पाँच लाख 51 हजार रुपये की राशि प्रदान की जायेगी। यह सम्मान आगामी 28 अक्टूबर को लखनऊ में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया जाएगा।

आठ लेखकों को बाल साहित्य पुरस्कार

केन्द्रीय साहित्य अकादेमी इस वर्ष नौ कहानी-संग्रहों, चार कविता-संग्रहों, दो निबन्ध, एक विज्ञान कथा की पुस्तक के अलावा आठ लेखकों को बाल साहित्य में उनके समग्र योगदान के लिए बाल साहित्य पुरस्कार देगी पिछले दिनों साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय की अध्यक्षता में कार्यकारी मण्डल की हुई बैठक में पुरस्कारों को मंजूरी दी गयी।

सूचना के अनुसार कहानी के लिए बलराम बसाक (बांग्ला), योसेफ मेकवान (गुजराती), सुधा खरंगटे (कोंकणी), मुरलीधर झा (मैथिली), ओमप्रकाश ठाकुर (मैथिली), ओमप्रकाश ठाकुर (संस्कृत), पीताम्बर हंसदा (संथाली), जगदीश लछानी (सिंधी), केएम कोतंडम् (तमिल) और मनजीर आशिक हरगाँवी (उर्दू), को; कविता के लिए बंसीलाल शर्मा (डोगरी), अयूब शबीर (कश्मीरी), शिशुपाल शर्मा (नेपाली) और रेड्डी राघवैया (तेलुगु) को यह पुरस्कार दिया जाएगा। निबन्ध के लिए हरिचरम बर (बोडो) और दीनदयाल शर्मा (राजस्थानी) तथा विज्ञान कथा के लिए एस० इन्द्रकुमार सिंह (मणिपुरी) को चुना गया है। इनके अलावा हिन्दी में बालशौरि रेड्डी, अंग्रेजी में रस्किन बाण्ड, मनमोहन सिंह (पंजाबी), शान्तनु तमुली (असमिया), पी० सीताराम भट्ट (कन्नड़), के श्रीकुमार (मलयालम्), बाबा भांड (मराठी) और रामप्रसाद मोहन्ती (ओड़िया) को उनके समग्र योगदान के लिए बाल साहित्य पुरस्कार दिया जायेगा। पुरस्कृत रचनाकारों को ताम्रफलक, शॉल और पचास हजार रुपये की राशि से नवम्बर, 2012 में एक समारोह में सम्मानित किया जाएगा।

वीरेन्द्र प्रभाकर सम्मानित

विश्व फोटग्राफी दिवस के उपलक्ष्य पर ख्यातिप्राप्त, प्रेस फोटो पत्रकार, पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर को आजादी पूर्व से वर्तमान तक कार्यरत, सुदीर्घ सेवा के लिए इण्डिया इण्टरनेशनल फोटोग्राफिक काउंसिल ने सम्मानित कर, प्रशस्ति पत्र प्रदान किया है।

बाल साहित्य साधना सम्मान

पिछले दिनों बिहार के मुख्यमन्त्री नीतीश कुमार ने 'नयी धारा' के सम्पादक डॉ० शिवनारायण को पटना में उनकी साहित्य सेवा के लिए वर्ष 2012 का 'बादल साहित्य साधना सम्मान' प्रदान किया। कार्यक्रम अध्यक्ष थे डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह।

तेजिन्दर को 2012 का कथाक्रम सम्मान

वर्ष 2012 का 'आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान' वरिष्ठ और चर्चित कथाकार तेजिन्दर को दिये जाने का निर्णय लिया गया है।

उल्लेखनीय है कि प्रत्येक वर्ष एक वरिष्ठ कथाकार को प्रतिष्ठित आनन्द सागर कथाक्रम सम्मान प्रदान किया जाता है जिसके अन्तर्गत 15000/- की धनराशि तथा सम्मान चिह्न व पत्र प्रदान किया जाता है। यह सम्मान दिनांक 3 नवम्बर 2012 को लखनऊ में आयोजित कथाक्रम 2012 के अवसर पर दिया जायगा।

परम्परा के वार्षिक सम्मान एवं कविता पर्व

पिछले दिनों दिल्ली में साहित्यिक संस्था 'परम्परा' की ओर से 'ऋतुराज सम्मान' (2012) हिन्दी के दो कवियों—कमलेश भट्ट कमल को उनकी पुस्तक 'मैं नदी की सोचता हूँ' तथा वर्तिका नन्दा को 'थी, हूँ, रहूँगी' के लिए संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। एक लाख रुपये की पुरस्कार की राशि को दो समान माने गये पुरस्कार के रूप में बाँटकर दिया गया।

'परम्परा' तथा हैबीटाट सेन्टर के संयुक्त तत्त्वावधान में हुए इस कविता-पर्व में पुरस्कृत कवियों के अतिरिक्त हिन्दी गजल को अपनी तरह से कहने वाले प्रसिद्ध शायर मुनव्वर राना को भी 'परम्परा विशिष्ट ऋतुराज सम्मान' से पुरस्कृत किया गया जिसकी सम्मान राशि एक लाख रुपये है। 'परम्परा' के संस्थापक एवं प्रमुख संरक्षक काशीनाथ मेमानी ने मुनव्वर राना को यह सम्मान प्रदान किया।

साहित्य-मण्डल, नाथद्वारा द्वारा सम्मान

साहित्य-मण्डल, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) के वार्षिक कार्यक्रम 'हिन्दी लाओ, देश बचाओ' द्विदिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न, विशिष्ट क्षेत्रों में कार्यरत लोगों को पुरजनसम्मान, सम्पादक रत्न सम्मान, हिन्दी भाषा भूषण की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। 'हिन्दी उपनिषद्' की वैचारिक गोष्ठी में विद्वज्जनों ने हिन्दी सम्बन्धी अलग-अलग विषयों पर विचार व्यक्त किये, कुछ आलेखों का वाचन किया गया। इसी क्रम में 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान' प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित (लखनऊ) को, 'श्रीमती सरस्वती सिंह सम्मान' श्री कृष्णकुमारजी यादव (वाराणसी) को, 'श्री मनोहरजी कोठारी स्मृति सम्मान' श्री रामगोपालजी शर्मा 'दिनेश' (नोएडा) को, 'श्री शिवकुमारजी शास्त्री स्मृति सम्मान' श्री प्रेम जनमेजय (नयी दिल्ली) को, 'श्री मोतीलाल राठी स्मृति सम्मान' प्रो० गिरीशचन्द्र चौधरी (वाराणसी) को प्रदान किया गया। प्रत्येक सम्मानित जन को स्मृति चिह्न, प्रशस्तिपत्र, श्रीफल एवं अंगवस्त्र के साथ ग्यारह हजार रुपये की राशि अर्पित की गयी।

'काका हाथरसी संगीत सम्मान'

विगत 6 सितम्बर को हाथरस में देश के सुप्रसिद्ध हास्य कवि काका हाथरसी के नाम पर दिया जाने वाला 'काका हाथरसी संगीत सम्मान' इस वर्ष मध्य प्रदेश के सुप्रसिद्ध संगीताचार्य डॉ० प्रकाश महाडिक को देने की घोषणा की गई। पुरस्कार-स्वरूप उन्हें 25 हजार रुपए नकद, शॉल, श्रीफल एवं चाँदी से मंडित प्रशस्ति-पत्र दिया जाएगा।

तीन भारतीयों को श्रेष्ठतम अन्तर्राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार

इण्टरनेशनल बोर्ड ऑन बुक्स फॉर यंग पीपुल (आईबीबीवाई) नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय बोर्ड द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार से इस बार तीन भारतीय (लेखक रंजीत लाल, व्याख्याता शान्ति देवी और अनुवादक निर्मल कान्ति भट्टाचारजी) सम्मानित किए गए हैं। इस पुरस्कार को बाल-साहित्य के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ माना जाता है।

आईबीबीवाई एक गैर-सरकारी संस्था है, जिसकी स्थापना 1953 में स्विट्जरलैण्ड के ज्यूरिख में हुई। इसके गठन को लेकर प्रयास हालाँकि 1952 में ही शुरू हो गया था, जब जैला लेपमैन नाम की एक महिला ने जर्मनी के म्यूनिख में 'इण्टरनेशनल अण्डरस्टैंडिंग थ्रू चिल्ड्रैंस बुक्स' नामक एक सेमिनार का आयोजन किया। उस सेमिनार में एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशक के साथ ही कई लेखक और बुद्धिजीवी भी शामिल हुए थे। उसी बैठक में आईबीबीवाई को मूर्त रूप देने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया, और ठीक एक वर्ष बाद आईबीबीवाई को गैर-सरकारी संस्था के रूप में निबन्धित कर दिया गया।

आईबीबीवाई कई उद्देश्यों के तहत काम करता है। पुस्तकों के माध्यम से बच्चों में अन्तर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने के साथ ही यह पूरी दुनिया, खासकर विकासशील देशों में बच्चों की बेहतर किताब के प्रकाशन और वितरण को प्रोत्साहित करता है। बाल-साहित्य को बढ़ावा देने के लिए कार्यशाला का आयोजन यह करता ही है, शोधपरक कार्यों के साथ-साथ बच्चों तक गुणवत्तायुक्त साहित्य की पहुँच सुनिश्चित करने की दिशा में भी यह अनवरत काम कर रहा है। जैला लेपमैन, हंस क्रिश्चियन एण्डरसन जैसे कई पुरस्कारों से बाल-साहित्य को बढ़ावा दे रही यह संस्था 70 से अधिक देशों में काम कर रही है।

डॉ० मनवालन् को सरस्वती सम्मान

के०के० बिरला फाउण्डेशन की ओर से वर्ष 2011 का इक्कीसवाँ सरस्वती सम्मान डॉ० ए०ए० मनवालन् को प्रदान किया गया। यहाँ राष्ट्रीय संग्रहालय में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें उनकी तमिल कृति इरम कथाईयुम इरमयाकलुम (रामकथा एवं रामायण) के लिए यह पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित केन्द्रीय मन्त्री एम० वीरप्पा मोइली ने डॉ० मनवालन् को प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न व साढ़े सात लाख रुपये की पुरस्कार राशि का चेक प्रदान किया। सम्मान प्राप्त कर डॉ० मनवालन् ने कहा कि रामायण और महाभारत आज के जटिल जीवन में भी लोगों को जीने की राह दिखाते हैं। यदि इनसे सीख लें जीवन में बदलाव करें तो लोगों का जीवन काफी आसान हो जायेगा।

मीरा स्मृति सम्मान-2012

विगत दिनों प्रयाग में मीरा फाउण्डेशन एवं साहित्य भण्डार का संयुक्त आयोजन 'मीरा स्मृति सम्मान-2012' नए सन्दर्भों में साहित्य की प्रासंगिकता, अनुसंधान, दिशा-दशा, व्यंग्य, आलोचना तथा आगत चुनौतियों पर विमर्श के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर फाउण्डेशन की ओर से देश के पाँच लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों—संस्कृत साहित्य के शीर्षस्थ विद्वान् प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी, वरिष्ठ कथाकार श्री शेखर जोशी, कथा लेखिका श्रीमती ममता कालिया, व्यंग्य लेखक श्री सत्यप्रकाश व उड़ीसा के श्री पूर्णचंद रथ को शॉल, श्रीफल और स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह का प्रथम सत्र 'रामविलास शर्मा होने का अर्थ' को समर्पित था। अध्यक्षता श्री दूधनाथ सिंह ने की, मुख्य वक्ता थे श्री अजय तिवारी, मुख्य अतिथि थे श्री रामविलास शर्मा के पुत्र डॉ० विजय मोहन शर्मा और वक्ता थे प्रो० संतोष भदोरिया। विषय प्रवर्तन किया डॉ० दिनेश कुशवाह ने। द्वितीय सत्र के मुख्य अतिथि थे पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति श्री वी०के० खन्ना तथा अध्यक्ष थे पूर्व निदेशक श्री आनंद वर्द्धन शुक्ल। इस अवसर पर श्री शेखर जोशी की 'न रोको उन्हें शुभा', श्री जगन्नाथ पाठक की 'वसंतसेना से उमराँव जान तक', श्री राजेन्द्र की 'शब्द घड़ी में समय', श्रीमती प्रेमलता वर्मा की 'दो सरहदों के बीच', श्री रामबहादुर सिंह 'मुक्त' की 'यायावर', श्री दूधनाथ सिंह की 'सपाट चेहरेवाला आदमी' श्री अजीत प्रियदर्शी की 'कवि त्रिलोचन' तथा डॉ० कल्पना शुक्ला की 'हिय निर्गुण नयनहि सगुण' पुस्तकों का विमोचन हुआ।

डॉ० परशुराम विरही पुरस्कृत

विगत 23 जुलाई को मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी ने भारत भवन, भोपाल में डॉ० परशुराम विरही को 'ईसुरी पुरस्कार' से पुरस्कृत किया और 25 जुलाई को तुलसी जयंती के पावन अवसर पर भोपाल में ही तुलसी मानव प्रतिष्ठान की ओर से डॉ० विरही के लेख 'तुलसीदास का दार्शनिक चिंतन' पर उन्हें 'त्रिभुवन नाथ यादव स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

साहित्यादित्य सम्मान

विगत 26 अगस्त को मुरादाबाद की सात साहित्यिक संस्थाओं—अक्षरा, विप्रा कला साहित्य मंच, परमार्थ, हिन्दी साहित्य संगम, अंतरा, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति एवं हिन्दी साहित्य सदन के संयुक्त तत्त्वावधान में मुरादाबाद में नवगीत के हस्ताक्षर डॉ० माहेश्वर तिवारी को उनकी अमूल्य नवगीत साधना हेतु 'साहित्यादित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हे प्रतीक-चिह्न, मानपत्र, श्रीफल भेंट किया गया एवं सातों संस्थाओं द्वारा उन्हें अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र थे।

पुरस्कार वितरण समारोह एवं काव्य-संध्या

विगत 23 अगस्त को नई दिल्ली के भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् सभागृह में कमला गोइनका फाउण्डेशन एवं 'व्यंग्य यात्रा' के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में डॉ० गोपालदास 'नीरज' को 'गोइनका हिन्दी साहित्य सारस्वत सम्मान', वरिष्ठ आलोचक डॉ० नामवर सिंह को 'महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य पुरस्कार-2012' तथा व्यंग्यकार श्री गोपाल चतुर्वेदी को 'स्नेहलता गोइनका व्यंग्य-भूषण पुरस्कार' के रूप में एक-एक लाख रुपए नगद एवं डॉ० नताशा अरोड़ा को 'रत्नीदेवी गोइनका वाग्देवी पुरस्कार' के रूप में इक्यावन हजार रुपए नगद एवं सभी साहित्यकारों को शॉल, श्रीफल, स्मृति-चिह्न व पुष्पगुच्छ प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेश गोयल थे। कमला गोइनका फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी श्री रामसुन्दर गोइनका ने स्वागत भाषण दिया एवं श्री राजेन्द्र यादव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। पुरस्कार समारोह के बाद काव्य-संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री गोपालदास 'नीरज', कीर्ति काले, नरेश शांडिल्य तथा लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। डॉ० कीर्ति काले ने काव्य-संध्या का संचालन भी किया।

महर्षि वेद व्यास सम्मान

विगत 29 अगस्त को नई दिल्ली की इंटरनेशनल सेंटर एनेक्सी में मध्य प्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित एवं स्वराज संस्थान संचलनालय द्वारा प्रदान किया जाने वाला वर्ष 2010-2011 का 'महर्षि वेद व्यास पुरस्कार' डॉ० लीलाधर वियोगी को लोकसभा में प्रतिपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने प्रदान किया। इसके अन्तर्गत दो लाख रुपए की राशि एवं सम्मान पट्टिका प्रदान की गई। मध्यप्रदेश के संस्कृति एवं जनसम्पर्क मन्त्री श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की।

श्री दीनानाथ मिश्र पुरस्कृत

विगत 1 सितम्बर को नई दिल्ली के इंडिया मीडिया सेंटर ने गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान में सम्पन्न अपने वार्षिक समारोह में पत्रकार और व्यंग्यकार श्री दीनानाथ मिश्र को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार' से सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पत्रकार श्री हरिजय सिंह उपस्थित थे।

आनन्द कुमार 'गौरव' सम्मानित

विगत 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर छह साहित्यिक संस्थाओं 'अक्षरा', 'हिन्दी साहित्य संगम', 'सरस्वती परिवार', 'उत्कर्ष', 'मिलन' एवं 'काव्य संदेश' के संयुक्त तत्त्वावधान में हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए गीतकार एवं उपन्यासकार डॉ० आनन्द कुमार 'गौरव' को 'हिन्दी साहित्य गौरव सम्मान' से सम्मानित करते हुए उन्हें प्रतीक-चिह्न, मानपत्र, अंगवस्त्र तथा श्रीफल भेंट किया गया।

पं० प्रतापनारायण मिश्र स्मृति-युवा साहित्यकार सम्मान-2012

साहित्य-सृजन विज्ञान और कला का भेद नहीं रखता इसीलिए यन्त्र के साथ काम करने वाले भी एक अच्छे साहित्य सृजन करने वाले होते हैं। उक्त उद्गार भाऊराव देवरस सेवा न्यास के तत्त्वावधान में आयोजित 18वें युवा साहित्यकार सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्राविधिक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० कृपाशंकर जी ने व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री विजय कृष्ण भागवत ने कहा कि नवोदित साहित्यकार जब सम्मानित होते हैं तो वे सकारात्मक दृष्टि रखकर समाज को जोड़ने वाले तथा अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाले साहित्य की रचना करते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रम तथा साहित्यकारों का सम्मान भारत की प्राचीन ज्ञान परम्परा को विकसित करने के लिए प्रेरणा देने का कार्य करता है।

कार्यक्रम में जिन चालीस वर्ष आयु तक के श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाधर्मिता को पुरस्कृत किया गया उनमें काव्य विधा के लिए लखनऊ के श्री अभयप्रताप सिंह 'निर्भीक', कथा साहित्य के लिए लखनऊ की डॉ० अंजलि को, बाल-साहित्य के लिए भीलवाड़ा (राजस्थान) के श्री सत्यनारायण 'सत्य' को, पत्रकारिता विधा के लिए मुजफ्फरपुर (बिहार) के श्री सतीश कुमार 'साथी' तथा संस्कृत के लिए डॉ० परमानन्द झा (नई दिल्ली) को पं० प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान 2012 से सम्मानित किया गया। प्रत्येक साहित्यकार को सम्मान स्वरूप सरस्वती प्रतिमा, अंगवस्त्र, श्रीफल के साथ-साथ 10,000/- रुपये की सम्मान राशि प्रदान की गई।

इन्दिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार

विगत 18 सितम्बर को नई दिल्ली में इन्दिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार 2010-11 के अन्तर्गत विभिन्न मन्त्रालयों, निकायों एवं विभागों को सम्मानित-पुरस्कृत किया गया।

'देवीशंकर अवस्थी स्मृति सम्मान'

हिन्दी में साहित्यिक आलोचना की संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए 45 वर्ष की आयु सीमा तक के हिन्दी आलोचकों से उनकी प्रकाशित आलोचनात्मक कृति, दीर्घ निबन्ध अथवा पुस्तक समीक्षा ग्यारह हजार रुपये की सम्मान राशि हेतु आमन्त्रित की गयी हैं। पुस्तक अथवा रचना-सामग्री की 5-5 प्रतियाँ 15 नवम्बर, 2012 तक भेजी जा सकती हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कर सकते हैं—देवीशंकर अवस्थी स्मृति सम्मान पुरस्कार समिति, 26, आर०पी०एस०, शेख सराय फेज-1, नयी दिल्ली-110017

प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं समीक्षक बाबू गुलाबराय की 125वीं जयन्ती के अवसर पर बाबू गुलाबराय स्मृति संस्थान द्वारा हिन्दी के वैयक्तिक एवं ललित निबन्ध की वर्ष 2010-2011 में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर ग्यारह हजार रुपए का पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। पुस्तक की तीन प्रतियाँ 15 दिसम्बर तक श्री विनोद शंकर गुप्त, ए-3 ओल्ड स्टाफ कॉलोनी, जिंदल स्टेनलेस लि०, ओ०पी० जिंदल मार्ग, हिसार-125005 पर भेज सकते हैं।

प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, राजस्थान द्वारा हिन्दी कहानी-संग्रह, हिन्दी उपन्यास एवं हिन्दी निबन्ध-संग्रह प्रतियोगिता के लिए प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। चुनी हुई पुस्तकों हेतु क्रमशः दस हजार एवं पाँच-पाँच हजार रुपए की राशि पुरस्कार-स्वरूप दी जाएगी। प्रतियोगिता के लिए, 1 जनवरी, 2009 से 30 नवम्बर, 2012 के मध्य प्रकाशित कम-से-कम 80 पृष्ठीय मौलिक कृति की तीन प्रतियाँ 30 नवम्बर, 2012 तक अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, राजस्थान 75/70, मानसरोवर, जयपुर 302020 पर भेज सकते हैं।

पुस्तक परिचय

मेरा कच्चा चिट्ठा
●
इलाहाबाद

ब्रजमोहन व्यास

सम्पादन :
लक्ष्मीधर मालवीय

संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 216

सजि. : रु० 300.00 **ISBN : 978-81-7124-919-0**
सजि. : रु० 150.00 **ISBN : 978-81-7124-927-5**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पं० ब्रजमोहन व्यास (१८८६-१९६३) सन् १९२१ से ४३ तक इलाहाबाद नगरपालिका के एक्ज़ेकेटिव ऑफिसर रहे। व्यास जी की बड़ी भारी देन इलाहाबाद संग्रहालय है— हज़ारों मूर्तियाँ, हज़ारों चित्र, चौदह सहस्र हस्तलिखित ग्रंथ। पंडित नेहरू को मिले मानपत्र तथा उनकी कृतियों की पांडुलिपियाँ, आज़ाद की पिस्तौल।

अकेले व्यास जी ने अपने अथक-अनवरत प्रयासों से यह विपुल सामग्री इकट्ठा की। उनके अत्यन्त रोचक अनुभव सरस्वती में प्रकाशित हुए थे।

"रुचि व्यास जी की परिष्कृत थी- इलाहाबाद संग्रहालय के वह जन्मदाता थे। कहाँ-कहाँ से कैसे-कैसे सुंदर और कलापूर्ण मूर्तियाँ वह उठा-चुरा कर लाए थे, इसका कच्चा चिट्ठा उन्होंने सरस्वती में एक बड़ी रोचक लेखमाला में खोला था। हिंदी की गरिमा और उर्दू की रवानगी लिए गंगाजमुनी घरेलू सरल इलाहाबादी शैली के वह उस्ताद थे।"

—नीड़ का निर्माण फिर
(डॉ० बच्चन)

मेरा कच्चा चिट्ठा के साथ इलाहाबाद पर उनकी (अपूर्ण) लेखमाला के छह लेख और व्यास जी के पारिवारिक संस्मरण - उक्त संग्रहालय की अनेक मूर्तियों के चित्रों सहित।

यह लेखमाला सरस्वती में अक्तुबर १९५९ से फरवरी १९६१ तक सत्रह अंकों में प्रकाशित हुई थी। इसकी चार किस्तें हमें जापान में न मिल पाईं - सरस्वती के संपादक श्रीनारायण चतुर्वेदी जी ने कृपाकर लखनऊ से उन अंकों की पूर्ति कर दी।

व्यास जी ने इलाहाबाद के इतिहास पर भी एक लेखमाला लिखना शुरू किया था। इसके छह लेख ही उक्त पत्रिका में प्रकाशित हो सके - अंतिम किस्त व्यास जी का शरीरांत होने के अगले माह के अंक में निकली।

अब तो सरस्वती पत्रिका रह गई, न उसके संपादक चतुर्वेदी जी और न ही व्यास जी। रह गई है 'तो कहिबे को कहानी!' यह लेखमाला पुनः पाठकों के आगे पुस्तकाकार उपस्थित है।

व्यास जी पर मेरा स्मरण आलेख अंत में जोड़ा गया है, मखमल पर टाट का पैबंद! व्यासजी मेरे सगे मामा थे। यन्नवे भाजने लग्ने संस्कारो नान्यथा भवेत् वह संस्कार मैंने अपनी किशोरावस्था के तीन बरस उनके साथ रहते हुए उनसे पाया है। **—लक्ष्मीधर मालवीय**

क्योतो, जापान

घनआनन्द-कवित्त
(प्रथम शतक)

डॉ० राजकुमार उपाध्याय 'मणि'

संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 144

सजि. : रु० 200.00 **ISBN : 978-81-7124-921-3**
अजि. : रु० 50.00 **ISBN : 978-81-7124-926-8**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'घनआनन्द-कवित्त' में घनआनन्द के मात्र एक शतक छन्दों को स्थान दिया गया है जो भारत के प्राय: सभी विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों के हिन्दी पाठ्यक्रम में स्वीकृत है और पढ़ाया जाता है। घनआनन्द ही घनानन्द हैं। यहाँ संज्ञाओं के हेर-फेर में नहीं पड़ना चाहिए। इस दिशा में अनेक पाठालोचकों एवं सम्पादकों ने विपुल कार्य किया है। इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने के पीछे दो ध्येय थे—प्रथम 'घनआनन्द-कवित्त' के अभाव की पूर्ति तथा दूसरा 'शुद्ध-पाठ'। कुछेक ग्रन्थ 'घनानन्द कवित्त' या 'घनानन्द-शतक' नाम से उपलब्ध मिलते हैं, किन्तु पाठकों एवं विद्यार्थियों को शुद्ध-पाठ मिल सके, यह इस ग्रन्थ के प्रकाशन का प्राथमिक संकल्प है। हिन्दी साहित्य में प्राचीन साहित्य के प्रति लेखकों की अरुचि बढ़ती जा रही है। विद्यार्थी भी आधुनिक साहित्य में सिमटते जा रहे हैं। हिन्दी की सार्वभौमिक सत्ता की जड़ हमारे प्राचीन साहित्य में निहित है, अत: उससे विमुख होकर अपने रिक्थ से अलग नहीं रह सकते।

हिन्दी काव्य-परम्परा के सशक्त महाकवि के रूप में घनआनन्द को भूलना अपनी साहित्यिक परम्परा से च्युत हो जाना है। घनआनन्द की महत्ता को सर्वतोभावेन आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्रजी ने स्थापित कर दिया था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष आचार्य प्रो० राधेश्याम दुबेजी पं० मिश्रजी के पट्टप्रशिष्य हैं, जिनके निर्देशन की इस कृति की सर्जना में महती भूमिका रही है।

भौगोलिक चिन्तन के आयाम

डॉ० ए०के० सिंह
डॉ० श्रीकान्त दीक्षित

प्रथम संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 320

सजि. : रु० 500.00 **ISBN : 978-81-7124-935-0**
अजि. : रु० 200.00 **ISBN : 978-81-7124-936-7**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भौगोलिक चिन्तन सम्पूर्ण भौगोलिक अध्ययन का आधार है। भूगोल की विभिन्न शाखाओं में शोध की अग्रभूमि भी भौगोलिक चिन्तन पर ही आधारित है। इसका समग्र अध्ययन किये बिना भूगोल के किसी परिक्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य कर पाना दुष्कर है क्योंकि भौगोलिक चिन्तन का ज्ञान इसके विकास के मूल में सन्निहित है। प्राकृतिक एवं मानव भूगोल की सभी शाखाओं में प्रयुक्त सिद्धान्त, उसके विविध पक्ष व आयाम भौगोलिक चिन्तन से ही नि:सृत सिद्धान्तों पर अवलम्बित है। भौगोलिक चिन्तन के अध्ययन से पाठकों व विद्यार्थियों को भौगोलिक मर्म (Essence) को समझने में आसानी होती है। भौगोलिक चिन्तन के सभी आयामों को एक दृष्टि में प्रस्तुत कर पाना बहुत ही श्रमसाध्य है, लेकिन प्रस्तुत पुस्तक में विश्वविद्यालय व महाविद्यालयों के विद्यार्थियों एवं सम्बन्धित शिक्षकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनके लिए क्रमबद्ध एवं समग्र सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इसमें भूगोल के अर्थ एवं विषय क्षेत्र से लेकर इसकी वैज्ञानिक प्रकृति, प्राचीन शास्त्रीय काल में इसकी विकासात्मक प्रवृत्ति, मध्यकाल में मुस्लिम भूगोलवेत्ताओं के द्वारा योगदान एवं पुनर्जागरण काल में सम्पन्न अन्वेषणों एवं प्रमुख खोजों, जिनके आधार पर भौगोलिक ज्ञान में ठोस अभिवृद्धि हुई, का समेकित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात भूगोल में द्वैतवाद के विकास, उसके प्रभाव, भूगोल में काल, व्युत्पत्ति का अध्ययन, वैज्ञानिक स्पष्टीकरण, भूदृश्य की संकल्पना, क्षेत्रीय विभेदीकरण की संकल्पना, मात्रात्मक क्रान्ति एवं मात्रात्मक विश्लेषण, भूगोल

में तन्त्र विश्लेषण एवं प्रतिमान, भूवैन्यासिक तंत्र, भू-वैन्यासिक संगठन एवं भूवैन्यासिक विज्ञान के रूप में भूगोल की स्थिति एवं निदर्शन (चिन्तनफलक) की अवधारणा को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक स्नातकोत्तर एवं प्रतियोगी परिक्षाओं के छात्रों की वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गयी है। भौगोलिक चिन्तन का विषय बहुत ही गूढ़ समझा जाता रहा है। इसलिए पुस्तक में विषयवस्तु को यथासम्भव सरल ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, जिससे छात्रों को उन्हें समझने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। स्थान-स्थान पर हिन्दी के गूढ़ शब्दों के साथ अंग्रेजी के मूल एवं भावात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया है और प्रत्येक अध्याय के अन्त में उसमें वर्णित विषय वस्तु से सम्बन्धित सन्दर्भों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

सोज़े वतन

प्रेमचंद

संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 48

अजि. : रु० 30.00

ISBN : 978-81-7124-940-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सोज़े वतन यानी देश का दर्द

दर्द की एक चीख़ की तरह ये कहानियाँ जब एक छोटे-से किताबचे की शक्ल में आज से बावन बरस पहले निकली थीं, वह ज़माना और था। आज़ादी की बात भी हाकिम का मुँह देखकर कहने का उन दिनों रिवाज था।

कुछ लोग थे जो इस रिवाज को नहीं मानते थे। मुंशी प्रेमचंद भी उन्हीं सरफिरों में से एक थे।

लिहाजा सरकारी नौकरी करते हुए मुंशीजी ने ये कहानियाँ लिखीं, जिसमें मुंशीजी की सबसे पहली छोटी कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' भी शामिल है नवाब राय के नाम से। और खुफ़िया पुलिस ने सुराग़ पा लिया कि यह नवाब राय कौन हैं। हमीरपुर के कलक्टर ने फ़ौरन मुंशीजी को तलब किया और मुंशीजी बैलगाड़ी पर सवार होकर रातों-रात कुल पहाड़ पहुँचे जो कि हमीरपुर की एक तहसील थी और जहाँ उन दिनों कलक्टर साहब का क़याम था।

सरकारी छानबीन पक्की थी और अपना जुर्म इक़बाल करने के अलावा मुंशीजी के लिए दूसरा चारा न था। बहुत-बहुत गरजा-बमका कलक्टर—ख़ैर मनाओ कि अंग्रेजी अमलदारी में हो, सल्तनत मुग़लिया का ज़माना नहीं है, वर्ना तुम्हारे हाथ काट लिये जाते! तुम बग़ावत फैला रहे हो!.....

मुंशीजी अपनी रोज़ी की खैर मनाते खड़े रहे। हुक्म हुआ कि इसकी कॉपियाँ मँगाओ। कापियाँ आयीं और आग की नजर कर दी गयीं।

लेकिन मुंशीजी के इरादे को इतनी-सी भी आँच नहीं लगी। यह नाम न सही। हाँ, दुख ज़रूर होता है, बड़ी-बड़ी मेहनतों से आठ-दस साल सेया-पोसा था इस नाम को। लेकिन ख़ैर, शायद यहीं तक साथ था इस नाम का।

और तब प्रेमचंद का जन्म हुआ।

जैसा कि आप देखेंगे, इन पाँच कहानियों में से चार हिन्दी के लिए बिल्कुल नयी हैं, और पाँचवीं 'यह मेरी मातृभूमि है' (प्रस्तुत संस्करण में यह कहानी 'यही मेरा वतन है' शीर्षक से छप रही है) भी कुछ बदले हुए चोले में पेश की जा रही है जो असल के ज़्यादा क़रीब है। सारी कहानियाँ 1909 के मूल उर्दू संस्करण से मिलाकर दी जा रही हैं।

संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० भोलाशंकर व्यास

संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 340

सजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-937-4

अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-938-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

विश्व के भाषा-परिवारों में भारत-युरॅपीय भाषा-परिवार बृहत्तम परिवार है, जिसकी भाषाएँ युरॅप से लेकर भारत तक व्यवहृत होती हैं। संस्कृत इसी परिवार की मुख्य भाषा है। इस दृष्टि से संस्कृत का ग्रीक, लैटिन, प्राचीन चर्च स्लावोनिक जैसी प्राचीन भाषाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध है। पारसियों की धर्म पुस्तक अवेस्ता की भाषा तथा वैदिक संस्कृत की प्रकृति तो परस्पर इतनी निकट है कि उन्हें एक ही भाषा की दो विभाषाएँ घोषित किया जा सकता है। युरॅपीय जगत् को संस्कृत भाषा का परिचय मिलने पर 19वीं शती में युरॅप में भाषाविज्ञान के क्षेत्र में जो उन्नति हुई उसने ग्रीक, लैटिन, अवेस्ता तथा संस्कृत की प्रकृतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर इस विषय का अन्वेषण किया कि इन भाषाओं के बोलने वाले पूर्वज आरम्भ में एक सी ही भाषा का व्यवहार करते होंगे।

पिछली दो सदियों में युरॅपीय भाषाशास्त्रियों ने भारत-युरॅपीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में प्रभूत योगदान किया है। भाषावैज्ञानिक अध्ययन के विकास के कारण संस्कृत के अध्ययन का महत्त्व और बढ़ गया है।

भारतीय आर्य भाषाओं के भाषाशास्त्रीय अध्ययन के लिए तो संस्कृत का दोहरा महत्त्व है, एक ओर यह इन भाषाओं की जननी है, दूसरी ओर सैद्धान्तिक भाषाशास्त्र तक के आवश्यक ज्ञान के लिए इसका परिचय अपेक्षित है। हिन्दी में इस पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तक अभी तक नहीं आ पायी है, जो संस्कृत का तुलनात्मक भाषाशास्त्र की दृष्टि से परिचय दे सके।

इस पुस्तक में डॉ० व्यास ने अब तक की समस्त भाषाशास्त्रीय गवेषणाओं और मान्य कृतियों का उपयोग करते हुए संस्कृत की भाषाशास्त्रीय रूपरेखा प्रस्तुत की है। साथ ही संस्कृत भाषा का प्राकृत, अपभ्रंश तथा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में किस प्रकार विकास हुआ है, इसे भी अन्तिम परिच्छेद में निबद्ध कर संक्षेप में भारतीय आर्य भाषाओं के विकास की गतिविधि प्रदर्शित कर दी है। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के विद्यार्थी के लिए संस्कृत की भाषाशास्त्रीय प्रकृति तथा उसकी भावी गति-विधि का सम्यक् ज्ञान आवश्यक हो जाता है, अत: यह पुस्तक भारतीय भाषाशास्त्र के अध्येताओं के लिए बड़ी उपयोगी होगी। साथ ही इस के द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के महान् अभाव की पूर्ति भी हो रही है।

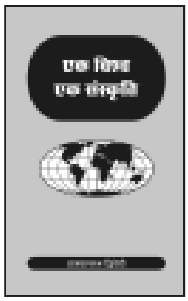

एक विश्व : एक संस्कृति

व्रजवल्लभ द्विवेदी

पृष्ठ : 216

सजि. : रु० 150.00

ISBN : 81-7124-334-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यदि मानव-धर्म के परिप्रेक्ष्य में विवेकपूर्वक सुप्रयास किया जाय, तो अशान्ति, असहिष्णुता, घृणा और परस्पर विरोधी मतवादों की कटुता कम हो सकती है। इसी पृष्ठभूमि में इस ग्रन्थ के लेखक और प्रबुद्ध चिन्तक श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी ने विश्व में परस्पर विरोधी और अविरोधी अनेक प्रचलित धर्मों का तलस्पर्शी परीक्षण कर एक विश्व, एक संस्कृति को मानव-धर्म का सार्वभौम स्वरूप प्रदान करने का गम्भीर चिन्तन और प्रशंसनीय प्रयास किया है। आगम-तंत्रशास्त्र के पारंगत विद्वान् द्विवेदीजी ने अनेक धार्मिक मतवादों का आलोडन कर एक विश्व, एक संस्कृति का सुगम एवं परिनिष्ठित मार्ग प्रशस्त किया है। समय की माँग है कि विश्व-बन्धुत्व के लिए सघन प्रयास किया जाय और विवेकसम्मत समाधान प्रस्तुत करने का द्वन्द्वरहित दृष्टि से पग उठाया जाय। विद्वान् लेखक ने प्रचलित सभी धर्मों में प्रतिपादित आधारभूत तत्त्वों का सूक्ष्म विवेचन कर एक विश्व, एक संस्कृति के माध्यम से मानव-धर्म की अखण्डता को सुरक्षित रखने का सन्देश दिया है।

नवीन शिक्षा मनोविज्ञान

डॉ० के०पी० पाण्डेय

चतुर्थ संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 488

सजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-914-5
अजि. : रु० 160.00 ISBN : 978-81-7124-915-2
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

शिक्षा-शास्त्र को एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में समझने एवं विवेचित करने का वैज्ञानिक प्रयास विगत लगभग सात-आठ दशकों से चला आ रहा है। फलस्वरूप शिक्षण-क्रिया के औपचारिक, निरौपचारिक एवं आनुषंगिक प्रसंगों में पाए जाने वाले अनेक चरों के बारे में हमारी जानकारी बढ़ी है। इधर अधिगम, अभिप्रेरणा, बुद्धि—शैक्षणिक, भावात्मक एवं आध्यात्मिक, व्यक्तित्व एवं विशेष प्रकार के बालकों यथा : प्रतिभाशाली, सर्जनशील, पिछड़े, मन्दितमना तथा अपचारी—का शिक्षण की दृष्टि से निहितार्थ विश्लेषित करने एवं उनसे सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण सम्प्रत्ययों के विकसित होने से 'शिक्षा मनोविज्ञान' के क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। उपलब्ध पुस्तकों में से कतिपय पुस्तकें हिन्दी में अनूदित होने पर भी हिन्दी के माध्यम से शिक्षा मनोविज्ञान को पढ़ने वाले छात्रों एवं पढ़ाने वाले शिक्षकों की आवश्यकताओं को पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं कर सकी हैं। हिन्दी भाषा में लिखी अब तक जो पुस्तकें उपलब्ध हैं, उनमें प्रस्तुत सूचनाओं, अवधारणाओं एवं विधियों की वैधता, सहजता एवं पर्याप्तता के विरुद्ध बहुत कुछ कहा जाता है, किन्तु खेद का विषय है कि हमारे शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने इस दिशा में मौलिक साहित्य को अपेक्षित गुणवत्ता के साथ विकसित एवं गठित करने की दृष्टि से कोई ठोस पग नहीं उठाया है।

इस परिप्रेक्ष्य में देखने पर यह विदित होगा कि शिक्षा मनोविज्ञान के बदलते हुए सम्प्रत्ययों, परिज्ञान एवं उनकी प्रणालियों को भारतीय सन्दर्भ में हिन्दी भाषा के जरिए प्रस्तुत करने की महती आवश्यकता है। लेखक ने 'शिक्षा मनोविज्ञान' विषय को बी०एड०, एम०एड० एवं एम०फिल० स्तरों पर लगभग 35-40 वर्षों तक पढ़ाया है और हमेशा उसे यह अभाव विशेष रूप से अखरता रहा है। कहना न होगा कि प्रस्तुत ग्रन्थ उसकी शिक्षक के रूप में अनुभूत छात्रों की समस्याओं एवं कठिनाईयों के निवारण हेतु 'शिक्षा मनोविज्ञान' के वर्तमान आयामों को बोधगम्य बनाने का प्रथम व्यवस्थित प्रयास है। पूरी सामग्री सत्रह अध्यायों में गठित की गई है। प्रत्येक अध्याय में सम्बन्धित 'शिक्षा मनोविज्ञान' की नवीनतम धारणाओं को विश्लेषित एवं वर्णित कर उन्हें शिक्षकों की दृष्टि से सोदाहरण स्पष्ट करने की कोशिश की गई है। अध्यायों के अन्त में 'अधिगम अभ्यास' के रूप में 'वस्तुनिष्ठ प्रश्नों' द्वारा विवेचित सम्प्रत्ययों के अधिग्रहण हेतु प्रबलन की व्यवस्था की गई है। आशा है, शिक्षा मनोविज्ञान को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में पढ़ने वाले एम०फिल० (शिक्षा शास्त्र), एम०ए० (मनोविज्ञान) तथा एम०एड० एवं बी०एड० के विद्यार्थी एवं सेवारत शिक्षक जो शिक्षण एवं अधिगम सम्बन्धी व्यवस्थाओं में अपनी अन्तर्दृष्टि बढ़ाना चाहते हैं, प्रस्तुत पुस्तक को उपयोगी पाएँगे।

आधुनिक काव्य संग्रह

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

षष्ठ संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 524

सजि. : रु० 450.00 ISBN : 978-81-7124-930-5
अजि. : रु० 180.00 ISBN : 978-81-7124-931-2
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यह काव्य-संग्रह वास्तव में आधुनिक हिन्दी काव्य का इतिहास बन गया है। यह हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल का पूरा परिचय कराता है—भारतेन्दु से लेकर राजेश जोशी तक की लम्बी यात्रा का।

इस संकलन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें साहित्यिक पूर्वग्रह से मुक्त सभी काव्य-प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व किया गया है। छायावाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, नई कविता, नवगीत के प्रतिनिधि कवियों को एक साथ देखा और पढ़ा जा सकता है। नई कविता के पक्षधरों के इस तर्क को यह संकलन सिरे से नकारता है कि समसामयिक भाव-बोध को अभिव्यक्ति देने में गीत असमर्थ हैं। इस तर्क को ढाल बनाकर आलोचकों का एक वर्ग गीत विधा को मान्यता ही नहीं देता। यह संकलन इस तर्क को भी झुठलाता है।

आधुनिक हिन्दी कविता के अध्येताओं के लिए इस संकलन का और इसकी लोकप्रियता का मर्म यही है। इस संशोधित संस्करण में कुछ नये कवि जोड़े गए हैं। वे हैं शम्भुनाथ सिंह, केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेयी, बच्चन सिंह और राजेश जोशी। इसमें केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेयी और राजेश जोशी नई कविता का प्रतिनिधित्व करते हैं और शम्भुनाथ सिंह तथा बच्चन सिंह गीत विधा का।

रीति काव्यधारा

डॉ० रामचन्द्र तिवारी
डॉ० रामफेर त्रिपाठी

संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 288

अजि. : रु० 80.00 ISBN : 978-81-7124-934-3
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत संग्रह में रीतिकाल के रीतिबद्ध और रीति-मुक्त दोनों प्रकार के तेरह कवियों—केशव, सेनापति, बिहारी, देव, मतिराम, भूषण, भिखारीदास, पद्माकर, आलम, ठाकुर, बोधा, घनआनँद, द्विजदेव—की चुनी हुई श्रेष्ठ कवितायें संगृहीत हैं। चुनी हुई कविताओं का पाठ यथासंभव मूल और प्रामाणिक कृतियों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। केशव, भिखारीदास, पद्माकर, आलम, ठाकुर, बोधा, घनआनँद आदि कवियों की चुनी हुई कविताओं के पाठ का आधार आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र द्वारा सम्पादित उपर्युक्त कवियों की ग्रन्थावलियाँ हैं। सेनापति का पाठ श्री उमाशंकर शुक्ल द्वारा सम्पादित 'कवित्त रत्नाकर', बिहारी का श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर' द्वारा सम्पादित 'बिहारी रत्नाकर', देव और भूषण का मिश्र बन्धुओं द्वारा सम्पादित 'देवसुधा' और 'भूषण ग्रन्थावली' तथा मतिराम का श्री कृष्णबिहारी मिश्र द्वारा सम्पादित 'मतिराम ग्रन्थावली' के अनुसार रखा गया है। संग्रह के आरम्भ में रीतिकालीन काव्य का सामान्य परिचय कराने के लिए लगभग 26 पृष्ठों की भूमिका दी गयी है। संगृहीत कवियों की कविताओं के साथ उनका (कवियों का) विस्तृत एवं प्रामाणिक परिचय भी दिया गया है।

संग्रह के अन्त में संगृहीत कविताओं का तात्पर्य स्पष्ट करने के लिए शब्दार्थ और टिप्पणियाँ देकर संग्रह को उपयोगी बनाने की चेष्टा की गयी है। संग्रह की भूमिका, रीतिबद्ध कवियों की कविताओं का चयन तथा उन कवियों का परिचय एवं अन्त में उनकी कविताओं का शब्दार्थ-लेखन हिन्दी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान सुप्रसिद्ध आलोचक एवं समीक्षक डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने किया है। रीतिमुक्त कवियों से सम्बन्धित सारा कार्य डॉ० रामफेर त्रिपाठी (पूर्व उपाचार्य, लखनऊ विश्वविद्यालय) ने किया है। प्रस्तुत संग्रह में यह प्रयत्न किया गया है कि यह संग्रह न केवल विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो वरन् सामान्य साहित्यानुरागियों से भी रीति काव्यधारा का ठीक-ठीक परिचय करा सके।

संगोष्ठी/लोकार्पण

युवा कवि बदल रहे काव्य की धाराएँ

जब सब कुछ बदल रहा है तब काव्य की धाराएँ बदलना भी बिल्कुल सहज और स्वाभाविक है। इसके लिए कोई रचनाकार जिम्मेदार नहीं है। समय और बाजार दोनों की माँग ने काव्य के चरित्र को परिवर्तित किया है।

आकाशवाणी वाराणसी के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के अवसर पर विगत दिनों वाराणसी में आयोजित 'बदलता समय और समकालीन काव्य चरित्र' विषयक संगोष्ठी में डॉ० अरुण कमल ने इस आशय के विचार रखे।

संगोष्ठी में दिल्ली से आए साहित्यकार मदन कश्यप, उदय प्रताप स्वायत्तशासी कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० रामसुधार सिंह, डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र आदि ने विचार व्यक्त किए।

'संगीतमय बनारस' का लोकार्पण

डॉ० वनमाला पर्वतकर की पुस्तक 'संगीतमय बनारस' का लोकार्पण विगत दिनों सम्पन्न हुआ। 'संगीतमय बनारस' का लोकार्पण करते हुए पं० शिवकुमार शास्त्री ने शास्त्रीय संगीत व समृद्ध घरानों की विस्तार से चर्चा की। पुस्तक के महात्मय पर प्रकाश डालते हुए वे खुद को रोक न सके और कई दुर्लभ बंदिशों व रचनाओं को सधे अन्दाज में सुनाया।

डॉ० शुकदेव सिंह स्मृति

कबीर विवेक परिवार, वाराणसी द्वारा स्थानीय मालवीय शान्ति अनुसन्धान केन्द्र में स्व० डॉ० शुकदेव सिंह की 79वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में 'शान्ति की अवधारणा और सन्त साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन प्रो० प्रियंकर उपाध्याय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ कवि श्रीकृष्ण तिवारी को सम्मानित किया गया।

आत्मसंघर्ष को बदला जनसंघर्ष में

रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि का केन्द्रीय तत्त्व साम्राज्यवाद विरोधी रहा है। उन्होंने साम्राज्यवाद की मूल चेतना आत्मसंघर्ष को जनसंघर्ष में बदला। यह बातें वरिष्ठ आलोचक प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने कहीं।

वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की ओर से कला संकाय के राधाकृष्णन् सभागार में विगत दिनों आयोजित 'रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि' विषयक व्याख्यान में विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि रामविलास शर्मा हिन्दी के ऐसे आलोचक माने जाते हैं, जिन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी साहित्यशास्त्र की परम्परा को अपना आधार नहीं बनाया, बल्कि हिन्दी की जातीय परम्परा को आधार बनाते हुए आलोचना को विकसित किया।

'शब्दार्थ' के दूसरे अंक का लोकार्पण

विगत दिनों साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका 'शब्दार्थ' का लोकार्पण काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित हिन्दी विभाग में हुआ। यह अंक रवीन्द्रनाथ ठाकुर, फैज अहमद फैज व मजाज की रचनाशीलता पर केन्द्रित है।

लोकार्पण करते हुए समालोचक व विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० कुमार पंकज ने कहा कि ऐसे विशेषांक अपने समय के श्रेष्ठ साहित्यकारों की विरासत सँजोने और उन्हें आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अध्यक्षता हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० बलराज पाण्डेय ने की। 'शब्दार्थ' के सम्पादक हैं प्रो० वशिष्ठ अनूप।

पूर्व मन्त्री हरीशजी की कृति का विमोचन

'मेरा जीवन, मेरे कार्य एवं विचार' ....यह नाम है उस पुस्तक का, जिसके लेखक हैं उत्तर प्रदेश के पूर्व वित्तमन्त्री व भाजपा के वरिष्ठ नेता हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव हरीशजी।

विगत दिनों पुस्तक का लोकार्पण करते हुए सांसद डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने नई पीढ़ी से भाजपा के बुजुर्ग नेता हरीशजी के विचारों को आत्मसात् करने का आह्वान किया। श्रीयमुनाचार्यजी महाराज सतुआ बाबा के अध्यक्षीय उद्बोधन पत्र का वाचन महामण्डलेश्वर सन्तोष दासजी ने किया। समारोह में डॉ० महेन्द्रनाथ पाण्डेय, श्यामदेव राय चौधरी, डॉ० ज्योत्सना श्रीवास्तव आदि उपस्थित थे।

पण्डित गोपीनाथ कविराज की चिन्तनधारा कल्याण का पथ

वाराणसी। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में तन्त्र क्रिया के साधक पण्डित गोपीनाथ कविराज की जयन्ती पर अखण्ड महायोग पर रोशनी डाली गयी। विश्वविद्यालय के योग साधना केन्द्र में बतौर मुख्य अतिथि काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ० पृथ्वीश नाग ने पण्डित गोपीनाथ की चिन्तन-धारा को कल्याण का पथ कहा। उन्होंने 1918 में योगिराज विशुद्धानन्द परमहंस देव से मलदहिया स्थित विशुद्धानन्द कानन में दीक्षा ली थी। 1924 में उन्हें गवर्नमेण्ट संस्कृत कॉलेज का आचार्य नियुक्त करने के बाद रजिस्ट्रार की भी जिम्मेदारी दी गयी लेकिन उन्होंने कुछ दिनों बाद ही इस्तीफा दे दिया और तन्त्र साधना में लग गये। इस अवसर पर प्रो० यदुनाथप्रसाद मिश्र, डॉ० ललित चौबे, डॉ० शीतलाप्रसाद, प्रो० रामकिशोर त्रिपाठी ने विचार व्यक्त किये। अध्यक्षता सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० बिंदाप्रसाद मिश्र और संचालन परमात्मा दुबे ने किया।

डॉ० रामविलास शर्मा की लेखन दृष्टि

प्रख्यात आलोचक व चिन्तक डॉ० रामविलास शर्मा ने मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से लेकर समाज, सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीयता के अलावा पूरी दुनिया की चिन्ताओं से जुड़े प्रकरणों पर गम्भीरता से लिखा है। उन्होंने पूरे तथ्यों और प्रमाण के साथ अपनी लेखनी एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के पिछड़े हुए समाजों पर भी चलायी थी। इस प्रकार उनका लेखन विराट् व वैविध्यपूर्ण है। ये बातें आलोचक रविभूषण ने कही। वह विगत दिनों वाराणसी के उदय प्रताप स्वायत्तशासी कॉलेज में हिन्दी विभाग की ओर से आयोजित 'भारतीयता की अवधारणा और डॉ० रामविलास शर्मा' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। अध्यक्षता राजेन्द्र कुमार ने की।

दो सत्रों में चली संगोष्ठी में डॉ० आशीष तिवारी, बजरंग बिहारी तिवारी, डॉ० प्रकाश शुक्ल, डॉ० अवधेश प्रधान, डॉ० संजय कुमार, डॉ० रामप्रकाश कुशवाहा सहित अन्य वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये। अध्यक्षता प्रो० चौथीराम व प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने की। संचालन डॉ० रामसुधार सिंह व धन्यवाद ज्ञापन डॉ० सपना सिंह ने किया।

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की प्रथम पुण्यतिथि

अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत एवं आर्यजगत् के विद्वान् पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की प्रथम पुण्यतिथि 28 अगस्त को वैदिक विद्वान् डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुई। यज्ञोपरान्त इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि संस्कृत भाषा के सरलीकरण और वेदों का ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए उनका अविस्मरणीय योगदान है। इस अवसर पर विभिन्न आर्यसमाजों के सदस्य तथा जनपद के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे जिन्होंने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

'साहित्यिक सार्वभौमिकता के वृहद् मापदण्ड' विषयक संगोष्ठी

यूरोप की तरह भारत का कोई अन्धकार युग नहीं है। यद्यपि उपनिवेश काल ने भारतीय साहित्य और संस्कृति के कई तत्त्वों को नष्ट किया और उनके ऊपर पाश्चात्य मानकों को आरोपित किया। जैसे लघुकथा के प्रणेता एडगर एलन तथा मोपासाँ को मान लिया जबकि भारत के पास पंचतंत्र, हितोपदेश और कथासरितसागर जैसे मानक ग्रन्थ उपलब्ध थे। प्रख्यात समीक्षक, मराठी कवि और उपन्यासकार पद्मश्री प्रो० भालचन्द्र नेमाड़े विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के तत्त्वावधान में आयोजित 'साहित्यिक सार्वभौमिकता के वृहद् मापदण्ड' विषयक दो दिवसीय प्रो० विक्रमादित्य राय व्याख्यानमाला में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साहित्य और सौन्दर्यशास्त्र की आलोचना के मानक पूरे विश्व में एक नहीं हो सकते। उनके ऊपर देश और काल का प्रभाव सर्वविदित है।

अध्यक्षता करते हुए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के निदेशक प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि भूमण्डलीयकरण के दौर में ज्ञान और सूचनाओं के आदान-प्रदान में हमें सामान्य और विशेष के अन्तर का ध्यान रखना होगा। विभागाध्यक्ष प्रो० आर०एन० राय ने प्रो० विक्रमादित्य राय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर 'वाल्केनो' नामक जर्नल का विमोचन किया गया जिसका सम्पादन शोध-छात्र आशुतोष सिंह ने किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी ब्लॉगर सम्मेलन

नवचेतना, जागृति और वैचारिक स्वतन्त्रता का सशक्त माध्यम ब्लॉगिंग है। व्यापक पहुँच ने संवाद को इतना सरल बना दिया है कि यह संचार के सबसे सुलभ साधन के रूप में उभरा है। ब्लॉगिंग के विविध पहलुओं पर विमर्श के लिए देश-विदेश के ब्लॉगर्स लखनऊ में जुटे। राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी ब्लॉगर सम्मेलन का आयोजन किया गया। लन्दन की शिखा वार्ष्णेय के अनुसार अंकुश का मतलब लेखक के मौलिक अधिकारों का हनन होगा।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में 'राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यानमाला'

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित 'राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यानमाला' के 12वें व्याख्यान समारोह का उद्घाटन संस्थान के प्रशासन नियन्त्रक श्री विजय कुमार कौशिक ने किया।

कार्यक्रम का संचालन संस्थान के राजभाषा अनुभाग के प्रभारी एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ० दिनेशचन्द्र चमोला ने किया।

मुख्य अतिथि प्रो० कृष्णकुमार गोस्वामी, प्रख्यात भाषा-वैज्ञानिक ने 'अनुवाद और भाषा-विज्ञान' विषय पर अपना विद्वत्तापूर्ण और सारगर्भित व्याख्यान दिया। प्रो० गोस्वामी ने हिन्दी के सन्दर्भ में सांविधानिक उपबन्धों (धारा 343-351) की चर्चा करते हुए बताया कि हिन्दी के तीन विशिष्ट सन्दर्भ हैं—जनपदीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय। जनपदीय सन्दर्भों में हिन्दी देश के दस हिन्दीभाषी राज्यों में प्रयुक्त है। राष्ट्रीय सन्दर्भ में हिन्दी के दो स्वरूप हैं—राष्ट्रभाषा व राजभाषा। अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भों में एक ओर हिन्दी मॉरीशस, फिजी, सुरीनाम आदि देशों में भारतवंशी लोगों की हिन्दी के रूप में 50-70 प्रतिशत लोगों द्वारा अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के रूप में प्रयोग की जाती है। दूसरी ओर हिन्दी अपने अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भों में अन्य देशों में अध्ययन की भाषा के रूप में है और 150 देशों में हिन्दी पढ़ाई जाती है।

अनुवाद के पक्ष में बोलते हुए प्रो० गोस्वामी ने बताया कि अनुवाद करते हुए इन पाँच सन्दर्भों का विशेष ध्यान रखना पड़ा है—कौन, किससे, क्या, कब और कहाँ। इसी सन्दर्भ में हिन्दी व अंग्रेजी में वाक्य संरचनाओं के अन्तर के सूक्ष्म बिन्दुओं की चर्चा की और बताया कि भाषा की अपनी प्रकृति और अपना समाज होता है और इसका अनुवाद में विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

डॉ० रामविलास शर्मा जन्मशताब्दी वर्ष एवं पं० अमृतलाल नागर की 96वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में स्मृति सन्ध्या सम्पन्न

विगत दिनों लखनऊ स्थित जयशंकर प्रसाद सभागार, कैसरबाग में एक अनूठी स्मृति सन्ध्या का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमें हिन्दी के दो मूर्धन्य साहित्यकारों की अनुपम मैत्री के सम्बन्ध में सार्थक चर्चा हुई। इस सन्ध्या का आयोजन संचित स्मृति (न्यास), लखनऊ तथा डॉ० रामविलास शर्मा फाउण्डेशन, नयी दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ अमृतलाल नागर स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० रामदेव शुक्ल के व्याख्यान से हुआ। रामदेवजी के व्याख्यान का विषय था 'चकल्लस वाली चटक मैत्री (अमृत-रामविलास)'। प्रो० शुक्ल ने अमृतलाल नागर तथा रामविलास शर्मा की लगभग 60 वर्ष तक बनी रही मैत्री पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रामविलासजी के व्यक्तित्व में साहित्यिक मैत्री के निर्वाह की क्षमता के दो कीर्तिमान हैं—'मित्र संवाद' और 'अत्रकुशलं-तत्रास्तु'। पहली पुस्तक प्रख्यात कवि केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा के पत्रों का संग्रह है और दूसरी कथा-पण्डित अमृतलाल नागर एवं रामविलास शर्मा के पत्रों का।

समापन करते हुए प्रो० शुक्ल ने रामविलासजी का एक पत्र पढ़ा—'प्रिय भैयो, तुम्हारे और केदार के सब पत्र पढ़ गया हूँ। किसी अंग्रेजी पढ़े-लिखे मित्र से पूछना कि इंग्लैण्ड के दो (तीन तो बहुत हैं!) साहित्यकारों के नाम ले जिनकी दोस्ती महज खत-किताब वाली नहीं और साहित्यकारों की दोस्ती, साहित्यकार और उसके भक्तों की नहीं—उनके साहित्यिक-जीवन की आरम्भ से लेकर तीस साल तक एक बार भी जूतम पैजार और मुँहफुलौवल के बिना ही न रही वरन् गढ़ियाई हो। यहाँ भी अंग्रेजी फौक्स हुई।'

कार्यक्रम में नागरजी और शर्माजी पर श्रीलाल शुक्ल एवं उदयप्रकाश द्वारा निर्मित वृत्तचित्र भी दिखाये गये। अध्यक्षता डॉ० सरला शुक्ला ने की।

बाबू गुलाबराय स्मृति समारोह

विगत दिनों डॉ० बी०आर० अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के गोल्डेन जुबली हॉल में मूर्धन्य साहित्यकार बाबू गुलाबरायजी की 125वीं जयन्ती श्रृंखला के अन्तर्गत आयोजित स्मृति-समारोह का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० डी०एन० जौहर ने किया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के निदेशक डॉ० सुधाकर अदीब ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। द्वितीय सत्र में 'हिन्दी निबन्ध-लेखन की परम्परा एवं वर्तमान स्वरूप' पर डॉ० धनंजय सिंह, राजेश शर्मा, डॉ० जयसिंह नीरद ने अपने विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी की अध्यक्षता के०एम० मुंशी विद्यापीठ के पूर्व निदेशक प्रो० गोविन्द रजनीश ने की।

महिला लेखन पर संगोष्ठी

समय आ गया है कि महिला लेखन को अलग खाँचे में डालने के बजाय हिन्दी साहित्यिक जगत् स्वीकार करे कि वह साहित्य की मुख्य धारा का अन्तर्निहित अंग है, इसलिए स्त्री कृतिकार और उसकी वर्जित कृतियों का साहित्यिक और निष्पक्ष मूल्यांकन होना जरूरी है। यह कहना है प्रसिद्ध कथा-लेखिका मृदुला गर्ग का। वे पटना की प्रेमचंद रंगशाला में श्री अरविन्द महिला कॉलेज द्वारा आयोजित यू०जी०सी० संपोषित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रही थीं। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के सहआयोजन में इस संगोष्ठी का विषय था—'समकालीन हिन्दी कथा साहित्य और महिला लेखन।'

माखन दादा को साहित्यकारों ने याद किया

होशंगाबाद। स्वाधीनता सेनानी प्रख्यात साहित्यकार दादा माखनलाल चतुर्वेदी को जयन्ती के अवसर पर शिव संकल्प साहित्य परिषद् द्वारा याद किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पत्रकारिता महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य साहित्यकार पंकज पटेरिया ने की।

नाटक के लिए लोकनाट्य ही प्रेरक है

कर्नाटक विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में विगत दिनों आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन भाषण में कालिकत विश्वविद्यालय के प्रो० अच्युतन्जी ने बताया 'सम्पूर्ण भारतीय नाटक का आरम्भ लोकनाट्य के द्वारा ही हुआ। नाटक साहित्य में लोक साहित्य प्रमुख स्थान प्राप्त कर चुका है।' दूसरे अतिथि तिरुपति के प्रो० चन्द्रशेखर रेड्डीजी ने कहा 'पचास वर्ष पूर्व नाटक साहित्य को असफल होने का डर नहीं था क्योंकि दूरदर्शन, सिनेमा आदि नहीं थे। दूरदर्शन में प्रसारित धारावाहिक आदि नाटक के स्वरूप ही हैं।'

प्रो० के०आर० दुर्गादास, प्रो० अच्युतन्, सुशीलकुमार सिंह और डॉ० अरविन्द कुलकर्णी आदि ने बल दिया कि नाट्यशास्त्र प्राचीन युग से आधुनिक युग तक विकसित शास्त्र है। लोकनाट्य परम्परा के विशिष्ट प्रयोग के लिए कन्नड़ के चन्द्रशेखर कंबारजी को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

मुख्य अतिथि के रूप में ख्यात रंग निदेशक डॉ० अरविन्द कुलकर्णी ने आग्रह किया कि नाटक कला को प्रोत्साहन देना चाहिये तथा विश्वविद्यालय में थियेटर सम्बन्धी पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना चाहिये।

नामवर विचार कोश

वरिष्ठ आलोचक डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय ने पिछले दिनों राजधानी की एक गोष्ठी में कहा कि नामवर सिंह ने हिन्दी की विचार-दृष्टि को पिछले पचास वर्षों से प्रभावित किया है और वे दूसरे अनुशासनों के लोगों को भी दृष्टि देने का काम करते रहे हैं। यह बात उन्होंने हिन्दी के शीर्ष आलोचक नामवर सिंह के जन्मदिन की पूर्व सन्ध्या पर महेन्द्र राजा जैन द्वारा संकलित और सम्पादित 'नामवर विचार कोश' के लोकार्पण के अवसर पर कही।

विश्वनाथ त्रिपाठी ने इस बात पर खुशी व्यक्त की कि नामवरजी को उनके जीवनकाल में ही इतना सम्मान मिला है। केदारनाथ सिंह ने कहा कि इस तरह के काम आसान नहीं हैं और अकेले एक व्यक्ति कर जाय, यह विलक्षण बात है। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने कहा कि उद्धरणों के आधार पर नामवरजी को लेकर कोई विचार बनाया जाय यह सही नहीं।

अन्त में अपनी बात रखते हुए नामवर सिंह ने कई तरह से रोचक टिप्पणियाँ कीं। उन्होंने कहा कि लगता है इस किताब को देखने के लिए ही मैं जीवित था और इस पुस्तक को देखकर ऐसा लगता है कि मैं इतिहास की नहीं, कोश की वस्तु बन गया हूँ।

पाकिस्तानी लेखिकाओं ने मुसलिम औरतों की दशा पर चिन्ता जतायी

पाकिस्तान से आयी लेखिकाओं ने भारतीय उपमहाद्वीप और खास तौर पर पाकिस्तान और भारत में मुसलिम औरतों की हालत पर चिन्ता जताते हुए कहा कि जब तक हम समाज को नहीं बदलेंगे, औरतों की हालत नहीं बदलेगी। उन्होंने बदलाव के लिए औरतों की तालीम पर जोर दिया और इसमें रोड़े अटकाने वालों को आड़े हाथों लिया।

पाकिस्तान से आयी लेखिका जाहिदा हिना ने कहा कि जिया उल हक शासन के बाद पाकिस्तान में महिलाओं के खिलाफ हिंसा तेजी से बढ़ी है। भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलिम औरतों की स्थिति पर बात करते हुए जाहिदा ने कहा कि मुसलिम औरत आज भी अपने हुकूक से महरूम है। पाकिस्तान से आयी कवयित्री किश्वर नाहीद ने, जो जनरल जिया के जमाने में जेल गयी थीं, अपनी एक नज्म से अपनी बात शुरू की। उन्होंने कहा कि इस्लाम को हमें मौलवियों के जरिये नहीं, मौलाना अबुल कलाम आजाद के जरिये समझना है।

इससे पहले कार्यक्रम का संचालन कर रही शीबा असलम फहमी ने कहा कि हिन्दुस्तान में हजारों अच्छी बातें हुई हैं। लेकिन यहाँ की मुसलिम औरतों के मसले ज्यों के त्यों हैं। मुसलिम औरतें डॉक्टर-इंजीनियर भी बन रही हैं, पर लगातार पहचान का संकट बना हुआ है। कार्यक्रम की शुरुआत में वरिष्ठ कथाकार और 'हंस' के सम्पादक राजेन्द्र यादव ने हंस की इस सालाना गोष्ठी के बारे में जानकारी दी।

नीरज पर वृत्तचित्र

हिन्दी के प्रख्यात गीतकार गोपालदास नीरज के सम्बन्ध में प्रसिद्ध फिल्मकार आफताब आफरीदी ने वृत्तचित्र बनाया है, जिसका लोकार्पण विगत दिनों दिल्ली के इण्डिया हेविटेट सेन्टर में किया गया। समारोह में बुद्धिजीवी एवं नीरजप्रेमी उपस्थित थे। इस अवसर पर वरिष्ठ कवि उदयप्रताप सिंह एवं शेरजंग गर्ग ने कवि-गीतकार नीरज के सम्बन्ध में अपने उद्‌गार व्यक्त किये।

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यान सम्पन्न

विगत दिनों 'निधि' के तत्त्वावधान में 'चतुर्थ आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यान' इलाहाबाद में सम्पन्न हुआ। व्याख्यान का विषय था—'भारतीय न्याय व्यवस्था : परम्परा और वर्तमान।' मुख्य वक्ता थे भारत के पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति श्री रमेशचन्द्र लाहोटी। इस अवसर पर उन्हें 'आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान' से विभूषित किया गया। आयोजन की अध्यक्षता राष्ट्रभाषा के प्रखर पोषक व 'साहित्य अमृत' के सम्पादक श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने की। इस अवसर पर लब्धप्रतिष्ठ कवि जनाब वसीम बरेलवी को निधि के 'जनवाणी सम्मान-2011' से अलंकृत किया गया। अपने सरस काव्य पाठ से उन्होंने उपस्थित श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन अक्टूबर में

राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास (भारत) एवं यू०एस०एम० पत्रिका के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित होने वाले इस वार्षिक समागम के मुख्य संयोजक उमाशंकर मिश्र ने बताया कि आगामी 27-28 अक्टूबर को हिन्दी भवन, गाजियाबाद में आयोजित होने वाले 20वें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में प्रमुखत: 'हिन्दी व भारतीय भाषाएँ अन्तर्सम्बन्ध और विकास की सम्भावनाएँ' विषय पर दो सत्रों में चर्चा होगी जिसमें जाने-माने विद्वान् अपने विचार/आलेख प्रस्तुत करेंगे।

अवधी महोत्सव

विगत दिनों अवध भारती संस्थान, हैदरगढ़-बाराबंकी (उत्तर प्रदेश) द्वारा अवधी महोत्सव 2012 का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री डॉ० रामबहादुर मिश्र, डॉ० विनयदास, प्रो० सूर्यपाल सिंह, विक्रममणि त्रिपाठी, विश्वनाथ पाठक, डॉ० प्रकाशचन्द्र गिरि, डॉ० भूदेश्वर पीयूष आदि ने भाग लिया। इस अवसर पर दस विद्वानों को 'अवधश्री सम्मान' भी प्रदान किये गये।

कथा समारोह

मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा मायाराम सुरजन हिन्दी भवन, भोपाल में विगत दिनों दो दिवसीय 'प्रेमचंद स्मृति कथा समारोह' आयोजित किया गया। पहले दिन प्रख्यात कथाकार श्री शशांक की अध्यक्षता में 'समकालीन कथा साहित्य' पर श्री रमाकान्त श्रीवास्तव ने विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया। दूसरे दिन प्रख्यात कथाकार श्री मंजूर एहतेशाम की अध्यक्षता में डॉ० उर्मिला शिरीष, डॉ० स्वाति तिवारी एवं श्रीमती इन्दिरा दाँगी ने कहानी-पाठ किया और समापन सत्र में चर्चित कहानीकार श्रीमती ज्योत्सना मिलन की अध्यक्षता में सर्वश्री स्वयंप्रकाश, भालचन्द्र जोशी एवं पंकज सुबीर ने कथा-पाठ किया।

तीन कहानियाँ तीन लेखक

भीष्म साहनी, मोहन राकेश, आदि नयी कहानियों के लेखकों ने अपनी कहानियों में रूढ़ियाँ बहुत कम बनायीं। यह विचार वरिष्ठ आलोचक डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने विगत दिनों हिन्दी अकादेमी, दिल्ली द्वारा आयोजित 'तीन पीढ़ी : तीन दिन' कार्यक्रमों की शृंखला के अन्तर्गत कहानी-पाठ में व्यक्त किये। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ० विश्वनाथ त्रिपठी ने वरिष्ठ कथाशिल्पी राजेन्द्र यादव के उपन्यास 'सारा आकाश' और चित्रा मुद्‌गल की कहानी 'लकड़बग्घा' की चर्चा करते हुए कहा कि राजेन्द्र यादव और चित्रा मुद्‌गल के बगैर समकालीन हिन्दी कथा-लेखन का इतिहास नहीं लिखा जा सकता। साथ ही युवा कहानीकार विवेक मिश्र को उन्होंने सम्भावनाशील कहानीकार बताया। संचालन क्षितिज शर्मा ने किया।

इस अवसर पर राजेन्द्र यादव ने अपनी पाँच लघु कहानियाँ—'प्रतिकार', 'आत्महत्या', 'मुक्ति', 'दो दिवंगत' और 'लक्ष्मण रेखा' का पाठ किया। चित्रा मुद्‌गल ने 'बेईमान' और विवेक मिश्र ने 'ए गंगा तुम बहती हो क्यों?' कहानियों का क्रमश: पाठ किया। सभी कहानीकारों ने लीक से हटकर और विषय को नये शिल्प के साथ प्रस्तुत किया है।

'नाटक जीवन के सभी पहलुओं और विसंगतियों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। दृश्य और श्रव्य माध्यम से जुड़े होने के कारण नाटक लोक से सीधा संवाद करता है।' यह विचार हिन्दी अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ० विमलेश कान्ति वर्मा ने इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यक्त किये।

व्यंग्य विद्रोह का प्रतीक

'व्यंग्य से सत्ता घबराती है। व्यंग्य चेतना का ही नहीं, विद्रोह का भी प्रतीक है। व्यंग्य में जो बिन्दी लगी हुई है वही बिन्दी डंक है और अगर व्यंग्य में बिन्दीरूपी डंक न हो तो व्यंग्य नहीं होगा। व्यंग्य प्रतिरोध की कला है।' यह विचार सुप्रसिद्ध समालोचक प्रो० नामवर सिंह ने विगत दिनों हिन्दी अकादेमी, दिल्ली द्वारा आयोजित,

व्याख्यानमाला शृंखला 'साहित्य, संस्कृति, समाज, संवाद' के अन्तर्गत 'व्यंग्य रचनात्मक सीमा का प्रश्न' संगोष्ठी में व्यक्त किये। उन्होंने व्यंग्य इतिहास की चर्चा करते हुए कबीर से लेकर हरिशंकर परसाई, नागार्जुन, श्रीलाल शुक्ल आदि की व्यंग्य रचनाओं पर अपने वक्तव्य को विस्तार दिया। उन्होंने यह भी कहा कि जब कोई समाज विकल्पहीन हो जाता है तो व्यंग्य विकल्प तैयार करने की पृष्ठभूमि देता है। व्यंग्य कमजोर का एकमात्र हथियार है। जहाँ आत्मविश्वास होगा, वहीं व्यंग्य होगा। इस अवसर पर कार्टूनिस्ट राजेन्द्र घोड़पकर ने कहा कि जहाँ व्यंग्य चलेगा, हास्य नहीं चलेगा। आज के व्यावसायिकता के दौर में रचनात्मकता गायब है और केवल चुटकले रह गये हैं। उन्होंने श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' को व्यंग्य की टेक्स्ट बुक कहा।

'हिमांशु जोशी : रचना संचयन' लोकार्पित

दिल्ली की मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित, वरिष्ठ कथाकार चित्रा मुद्गल तथा दिल्ली सरकार की मन्त्री प्रोफेसर किरण वालिया ने पिछले दिनों दिल्ली सचिवालय में आयोजित एक समारोह में हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार और वरिष्ठ पत्रकार हिमांशु जोशी के साहित्य पर आधारित सद्य:प्रकाशित ग्रन्थ 'हिमांशु जोशी : रचना संचयन' का लोकार्पण किया। सम्पादन कथाकार महेश दर्पण ने किया है।

हिन्दी व्यंग्य लेखन पर आयोजन

'व्यंग्य में यदि करुणा के तत्त्व नहीं हैं तो वह बहुत दूर तक नहीं चलेगा', यह बात प्रसिद्ध आलोचक डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने हरिशंकर परसाई के लेखन का उदाहरण देते हुए पिछले दिनों साहित्य अकादेमी, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान और 'व्यंग्य-यात्रा' पत्रिका के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी और कार्यशाला में अपने अध्यक्षीय भाषण में कही।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रसिद्ध आलोचक नित्यानन्द तिवारी ने कहा कि कबीर आज की व्यंग्य की परिभाषा पर भी खरे उतरते हुए हिन्दी साहित्य के पहले व्यंग्यकार हैं।

कार्यशाला के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री गोपाल चतुर्वेदी ने की। इस अवसर पर सर्वश्री अतुल चतुर्वेदी, अनूप श्रीवास्तव, कृष्णप्रताप सिंह, गिरीश पंकज, दिविक रमेश, यज्ञ शर्मा, सूर्यबाला, ललित लालित्य और सुधाकर अदीब ने व्यंग्य रचनाएँ प्रस्तुत कीं। श्री यज्ञ शर्मा की रचना 'बिना पुस्तक का विमोचन' और श्रीमती सूर्यबाला की कृति 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन' को श्रोताओं ने बेहद पसन्द किया। अन्त में श्री गोपाल चतुर्वेदी ने अपनी दो रचनाएँ प्रस्तुत कीं। प्रसिद्ध लेखक-व्यंग्यकार डॉ० नरेन्द्र कोहली की अध्यक्षता में दूसरे सत्र में विशेषज्ञ के रूप में सर्वश्री शंकर पुणतांबेकर, शेरजंग गर्ग, गौतम सान्याल और सुभाष चंदर उपस्थित थे। कार्यशाला में कुल 20 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

साफ-सुथरी उर्दू जुबान बोलते हैं भारतीय

जापान में उर्दू के लिए बहुत काम हो रहा है। छात्रों को देखना चाहिये कि दूसरे देशों में क्या लिखा व पढ़ा जा रहा है।

उक्त बातें 'जापान में उर्दू की स्थिति' पर सेमिनार में जापान के प्रोफेसर मातसोमोरा ने उर्दू विभाग (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) में विगत दिनों कही। कहा कि वे ओसाका विश्वविद्यालय (जापान) में उर्दू विभाग के अध्यक्ष हैं। कई मुल्कों का दौरा करने के बाद कहा जा सकता है कि भारत के लोग बहुत साफ-सुथरी उर्दू बोलते हैं। जापान में मीर तकी मीर, मिर्जा असदुल्लाह खाँ गालिब, मुंशी प्रेमचंद आदि की पुस्तकों का अनुवाद जापानी भाषा में हो चुका है। प्रोफेसर का भाषण उर्दू में सुनकर लोगों ने दाँतों तले अँगुली दबा ली।

कथाकार ने शान्त की जिज्ञासा

विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बिरला 'स' छात्रावास के प्रेमचंद सभागार में वरिष्ठ कथाकार पद्मश्री मंजूर एहतेशाम से छात्र मुखातिब हुए। उनके कृतित्व व व्यक्तित्व को लेकर छात्रों ने प्रश्न के माध्यम से अपनी जिज्ञासा प्रकट की जिसे कथाकार ने जवाब देकर शान्त किया। इस दौरान उनके चर्चित उपन्यास सूखा बरगद व दास्तान-ए-लापता की विशेष चर्चा हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० कुमार पंकज ने की।

आलोचक एक दुभाषिये की तरह है : प्रो० नामवर सिंह

आलोचक एक दुभाषिये की तरह है। उसका काम रचना को उस 'वेवलेंथ' तक ले जाकर पाठक से जोड़ना है जहाँ रचनाकार पहुँचना चाहता है या जिस 'वेवलेंथ' तक जाकर रचनाकार ने सोच और संवेदना के स्तर पर अपनी सर्जनात्मकता को अभिव्यक्त किया है। इसके बाद आलोचक की भूमिका समाप्त हो जाती है। नामवरजी ने 'समालोचक की सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका' विषय पर साहित्य-संगीत-कला को समर्पित संस्था शब्दम् की ओर से विगत दिनों शिक्षक दिवस पर हिन्द लैम्पस, शिकोहाबाद स्थित संस्कृति भवन सभागार में व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए उक्त विचार व्यक्त किये। साहित्य में कविता की महत्ता को रेखांकित करते हुए नामवरजी ने उसकी रसात्मक भूमिका की ओर संकेत किया। उन्होंने कहा कि लोग मुझे अज्ञेय का विरोधी मानते हैं, ऐसा नहीं है। अज्ञेय की कविता 'असाध्य वीणा' बड़ी कविता है। नामवरजी ने 'असाध्य वीणा' का पाठ करते हुए उसके ऐतिहासिक महत्त्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि आलोचक जब तक सहृदय नहीं होगा, आलोचना सम्भव नहीं है।

इसके पूर्व नामवरजी को पहली बार एक आदर्श और महान् शिक्षक के रूप में 'शब्दम्' की ओर से सम्मानित किया गया। सम्मान में हरित कलश, श्रीफल, अंगवस्त्रम्, शाल, सम्मान-पत्र एवं रु० 51000/- की सम्मान राशि अर्पित की गयी। नन्दलाल पाठक एवं उदयप्रताप सिंह को भी हरित कलश, शाल, श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

समकालीन चुनौतियाँ : भाषा, शिक्षा, संस्कृति एवं साहित्य के परिप्रेक्ष्य में

वसन्त महिला महाविद्यालय, राजघाट फोर्ट, वाराणसी में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सौजन्य से 'समकालीन चुनौतियाँ : भाषा, शिक्षा, संस्कृति एवं साहित्य के परिप्रेक्ष्य में' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का विगत दिनों आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी की संयोजिका डॉ० शशिकला त्रिपाठी ने विषय प्रवर्तन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि अब शिक्षा व्यापार में परिवर्तित हो गयी है। भूमण्डलीकरण से भाषायी खतरा उत्पन्न हो गया है। विशिष्ट अतिथि प्रो० राजेन्द्र कुमार ने कहा कि सबसे बड़ी चुनौती है दुविधाग्रस्त जीवन। उन्होंने ग्लैमरस नहीं, ग्लोरियस बनने पर बल दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने समकालीन चुनौतियों के सन्दर्भ में 'स्व' की ओर लौटने की बात कही। इस संगोष्ठी का पहला सत्र शिक्षा तथा दूसरा सत्र भाषा-केन्द्रित था जिसकी अध्यक्षता प्रो० हरिकेश सिंह ने तथा दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री अभय कुमार दुबे ने की।

19वीं पावस व्याख्यानमाला सम्पन्न

विगत 18-19 अगस्त को मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और पं० रविशंकर शुक्ल हिन्दी भवन न्यास, भोपाल की 19वीं पावस व्याख्यानमाला हिन्दी भवन में हिन्दी के चार शताब्दी पुरुषों—विष्णु प्रभाकर, भवानीप्रसाद मिश्र, गोपाल सिंह 'नेपाली' और भवानीप्रसाद तिवारी पर केन्द्रित रही। इस व्याख्यानमाला में उद्घाटन सत्र सहित कुल छह विमर्श सत्र हुए। विमर्श की एक बड़ी उपलब्धि यह रही कि देश के मूर्धन्य साहित्यकार सर्वश्री रमेशचंद शाह, नरेन्द्र कोहली और प्रभाकर श्रोत्रिय सभी सत्रों में उपस्थित रहे। व्याख्यानमाला का उद्घाटन महाराष्ट्र साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ० दामोदर खड़से ने किया। विष्णु प्रभाकर के शताब्दी स्मरण के अन्तर्गत 'जीवनी साहित्य और आवारा मसीहा' विषय पर विमर्श हुआ। इसमें सर्वश्री प्रभाकर श्रोत्रिय, कमलकुमार, अतुल कुमार प्रभाकर ने अपने विचार रखे। कविवर भवानीप्रसाद मिश्र पर केन्द्रित सत्र का विषय था—'गीतफरोश कवि : विविध आयाम' जिसके अध्यक्ष डॉ० विजय बहादुर सिंह थे। इस अवसर पर भवानी बाबू की पुत्री

सुश्री नंदिता मिश्र की विशेष उपस्थिति में मूर्धन्य साहित्यकारों ने अपने आलेख पढ़े। कविवर गोपालसिंह 'नेपाली' और भवानीप्रसाद तिवारी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केन्द्रित प्रथम सत्र का विषय 'हिन्दी गीत परम्परा और गोपालसिंह 'नेपाली' ' तथा दूसरे सत्र का विषय 'गीतांजलि के अनुगायक का अवदान' था। इन सत्रों की अध्यक्षता क्रमश: डॉ० सुशील त्रिवेदी और प्रो० रमेश दवे ने की। इस अवसर पर साहित्यकारों ने अपने आलेख पढ़े एवं अपने विचार रखे। 'हिन्दी व्यंग्य का वर्तमान रूप और सम्भावनाएँ' विषय पर विमर्श में हिन्दी व्यंग्य की चार पीढ़ियों के ख्यातिनाम व्यंग्यकारों— सर्वश्री नरेन्द्र कोहली, ज्ञान चतुर्वेदी, मूलाराम जोशी, प्रेम जनमेजय, सूर्यबाला, श्रीकान्त आप्टे और शांतिलाल जैन ने वैचारिक भागीदारी की। डॉ० प्रेम जन्मेजय ने अध्यक्षता की। वरिष्ठ पीढ़ी के व्यंग्यकार प्रो० मूलाराम जोशी ने व्यंग्य-लेखन के शास्त्रीय पक्ष का विस्तार से विवेचन किया।

पं० विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान

विगत 2 सितम्बर को विद्याश्री न्यास एवं महामना मालवीय संस्कृति न्यास के तत्त्वावधान में, वाराणसी में महामना मालवीय संस्कृति न्यास द्वारा संकल्पित पत्रिका 'संस्कृति-विमर्श' के प्रवेशांक की विषयवस्तु 'संस्कृति और धर्म' पर दो सत्रों में पं० विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान और परिचर्चा सम्पन्न हुई। दोनों सत्रों की अध्यक्षता एवं संचालन क्रमश: सर्वश्री कमलेश दत्त त्रिपाठी, अवधेश प्रधान, वशिष्ठनारायण त्रिपाठी, प्रकाश उदय ने किया। परिचर्चा के पहले सत्र में सर्वश्री अच्युतानन्द मिश्र, अम्बिकादत्त शर्मा, राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, अनिल त्रिपाठी, आशुतोष शुक्ल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। दूसरे सत्र में 'युवा पीढ़ी और धर्म' विषय पर सर्वश्री आनन्द मिश्र, रमेश कुमार द्विवेदी, चंद्रकला त्रिपाठी, अवधेश दीक्षित, चन्द्रकान्ता राय, यदुनाथ दूबे, श्रीनिवास पाण्डेय, विश्वनाथ कुमार आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। काशी विद्यापीठ, हरिश्चंद्र कॉलेज, यू०पी० कॉलेज एवं बलदेव पी०जी० कॉलेज के शोध छात्रों ने भी भाग लिया। विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ० दयानिधि मिश्र ने धन्यवाद ज्ञान किया।

चर्चा-गोष्ठी आयोजित

विगत 16 सितम्बर को कोलकाता में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्त्वावधान में प्रसिद्ध कवि पं० भवानीप्रसाद मिश्र की जन्मशती पर केन्द्रित आयोजन में उनके गीतों की संगीतात्मक प्रस्तुति सुपरिचित गायक श्री ओमप्रकाश मिश्र ने की। कवि की सुप्रसिद्ध कविता 'गीत-फरोश' की आवृत्ति श्री राजेन्द्र कानूनगो एवं श्रीमती आशा कानूनगो ने की। इस अवसर पर 'इटावा हिन्दी सेवा निधि' की ओर से वर्ष 2011 का 'आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान' महानगर के प्रमुख हिन्दी सेवी डॉ० तारा दूगड़ को प्रदान किया गया।

जोशी के उपन्यासों में कई प्रयोग

मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यासों से शिल्प, भाषा व विषय-वस्तु के स्तर पर जो प्रयोग किये वे हिन्दी उपन्यास के इतिहास में नये हैं।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित भोजपुरी अध्ययन केन्द्र के राहुल ग्रन्थागार में विगत दिनों आयोजित संगोष्ठी में युवा शोध अध्येता किरन तिवारी ने उक्त बातें कहीं। 'हिन्दी उपन्यास और मनोहर श्याम जोशी' विषय पर उन्होंने जोशी के उपन्यासों के हवाले से विषय-वस्तु की प्रकृति में आए बदलाव को चिह्नित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो० अवधेश प्रधान ने कहा कि जोशी के यहाँ मूल्यहीनता या मानव-स्वभाव के क्षरण की चर्चा तो है किन्तु इसकी आलोचना नहीं दिखाई पड़ती है। परिचर्चा में प्रो० वशिष्ठनारायण त्रिपाठी, प्रो० चन्द्रकला त्रिपाठी, प्रो० वशिष्ठ अनूप, प्रो० शुभा राव आदि उपस्थित थे।

वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

विगत 26 जुलाई को केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का 32वाँ वार्षिक सम्मेलन मन्नम मेमोरियल नेशनल क्लब, तिरुवनंतपुरम् में सम्पन्न हुआ। कवयित्री डॉ० रजनी सिंह ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। समारोह में सर्वश्री प्रत्यूष गुलेरी, तंकमणि अम्मा, कुलदीप सिंह चौहान तथा अनेक साहित्यकार एवं शिक्षाविद् उपस्थित रहे। डॉ० चन्द्रशेखर नायर की अध्यक्षता में उनकी रचना 'केरल के हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास' का लोकार्पण एक हरिजन शोध छात्रा एवं डॉ० रजनी सिंह ने संयुक्त रूप से किया। डॉ० चन्द्रशेखर नायर ने डॉ० रजनी सिंह को अंगवस्त्र ओढ़ाकर तथा स्मृति-चिह्न, मंगल-पत्र प्रदान कर 'देवी श्री मूकांबिका पुरस्कार' से सम्मानित किया। विभिन्न शोधार्थियों ने 'हिन्दी का इतिहास और भविष्य' पर आलेख प्रस्तुत किए।

'मधुविद्या' कृति लोकार्पित

विगत 2 सितम्बर को लखनऊ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के निराला सभागार में आयोजित कार्यक्रम में विधान परिषद् के सदस्य श्री हृदयनारायण दीक्षितजी की पुस्तक 'मधुविद्या' का विमोचन पूर्व केन्द्रीय मन्त्री व भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विधानसभा के अध्यक्ष श्री माताप्रसाद पाण्डेय ने की।

'व्यंग्य का शून्यकाल' कृति लोकार्पित

विगत दिनों लखनऊ में हिन्दी ब्लॉगरों के भव्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में चर्चित व्यंग्यकार श्री अविनाश वाचस्पति की व्यंग्य कृति 'व्यंग्य का शून्यकाल' का सजिल्द संस्करण ब्लॉगार्पित किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री उद्भ्रान्त, शैलेन्द्र सागर, सुभाष राय, अरविन्द मिश्रा, गिरीश पंकज, रवीन्द्र प्रभात, शिखा वार्ष्णेय, हरीश अरोड़ा उपस्थित थे।

संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी का दावा बनता है

भारत की विदेश राज्यमन्त्री परमीत कौर ने कहा कि हिन्दी दुनिया के कई देशों में बोली जाती है। साथ ही यह विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। ऐसे में हिन्दी का संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा बनने का दावा बनता है। उन्होंने विगत 22 सितम्बर को जोहांसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में तीन दिवसीय नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए भारत हर स्तर पर प्रयासरत है। महात्मा गाँधी के दक्षिण अफ्रीका से सम्बन्धों में का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि गाँधीजी स्वयं गुजराती भाषी होते हुए हिन्दी के समर्थक थे, क्योंकि यही भाषा देश को जोड़े रखने का माद्दा रखती है।

सम्मेलन में लगभग सभी वक्ताओं ने हिन्दी को सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा बताया। विकीपीडिया द्वारा हिन्दी को चौथी सबसे बड़ी भाषा घोषित किए जाने का उल्लेख किया गया। संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष तथा सम्मेलन आयोजन समिति के सदस्य सत्यव्रत चतुर्वेदी ने तो हिन्दी को चीनी मैंडरिन भाषा के बाद दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बताया। उन्होंने सम्मेलन के 24 सितम्बर को आयोजित समापन समारोह में हिन्दी के उत्थान हेतु लिए गए संकल्पों की जानकारी दी। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में हिन्दी को सातवीं आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए अब समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जायेगी। यह संकल्प इस नौंवे विश्व हिन्दी सम्मेलन के समापन समारोह में लिया गया। (जबकि भारत की लोकसभा में आज तक हिन्दी को आधिकारिक प्रवेश मिलना बाकी है। आजादी के 65 साल बाद भी लोकसभा में राजभाषा समिति का गठन नहीं हो सका है।) उल्लेखनीय है कि इस आशय के प्रस्ताव 1975 में हुए पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन और उसके बाद भी पारित किए जा चुके हैं। लेकिन, अब तक इस दिशा में कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकी है। ढीले सरकारी रवैये और भारी खर्चे की आंशका के कारण हिन्दी को अब तक आधिकारिक भाषा का दर्जा नहीं मिल सका है। हालाँकि इस बार विदेश राज्य मन्त्री ने इस संकल्प को पूरा करने के लिए प्रतिबद्धता पदर्शित की है। इसमें दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन भारत में आयोजित करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया।

सम्मेलन में हिन्दी के विद्वानों को दिया जाने वाला सम्मान 'विश्व हिन्दी सम्मान' के नाम से

जाना जाएगा। सम्मेलन में विदेश में हिन्दी शिक्षण के लिए मानक पाठ्यक्रम तैयार करने का दायित्व वर्धा स्थित महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय को सौंपा गया। यह संकल्प भी लिया गया कि सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि के प्रयोग पर पर्याप्त सॉफ्टवेयर तैयार किए जाएँ। मॉरीशस में स्थापित विश्व हिन्दी सचिवालय को विभिन्न देशों के हिन्दी शिक्षण से सम्बद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं और शैक्षणिक संस्थाओं का डाटाबेस तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

विदेश मंत्रालय के तत्वावधान में हिन्दी के प्रति जागरूकता के लिए आयोजित इस सम्मेलन में हिन्दी सेवा के लिए 41 विद्वानों को सम्मानित किया गया। इनमें 22 विदेशी मूल के हैं। इसके पूर्व यह सम्मेलन अमेरिका के न्यूयॉर्क में हुआ था। यह सम्मेलन हर चार साल में आयोजित होता है।

दक्षिण अफ्रीका के 'फादर ऑफ हिन्दी' सम्मानित

दक्षिणी अफ्रीका में 'फादर ऑफ हिन्दी' के रूप में पहचाने जाने वाले हिन्दी के सबसे बड़े प्रचारक रहे गुजरात के ही पण्डित नरदेवजी वेदालंकार को भारत ने विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान उनकी कांस्य की प्रतिमा का अनावरण कर सम्मानित किया।

'भारतेन्दु हरिश्चंद्र युग प्रवर्तक'

भारतेन्दु हरिश्चंद्र साहित्य के ही नहीं अपने समाज के भी युग प्रवर्तक थे। साहित्य के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वातन्त्र्य चेतना का संचार किया।

विगत दिनों नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी में आयोजित भारतेन्दु जयन्ती समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो० गिरीश चंद्र चौधरी ने यह बातें कहीं। कार्यक्रम में श्रीकृष्ण तिवारी, डॉ० कृष्णबाला सिंह, डॉ० यू०पी० सिंह, डॉ० जितेन्द्रनाथ सिंह आदि ने भाग लिया।

अज्ञेय एवं नागार्जुन पर पुस्तकों का अण्डमान में लोकार्पण

विगत दिनों हिन्दी साहित्य कला परिषद, पोर्ट ब्लेयर द्वारा हिन्दी सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया। इसके समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के मुख्य सचिव, श्री आनन्द प्रकाश ने अपने सम्बोधन में पूरे वर्ष के दौरान विविध प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन के द्वारा द्वीपों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए पोर्ट ब्लेयर के हिन्दी साहित्य कला परिषद की सराहना की। उन्होंने हिन्दी के महान रचनाकारों अज्ञेय एवं नागार्जुन के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी द्वारा सम्पादित दो पुस्तकों 'अज्ञेय का चिंतन एवं सृजन' तथा 'नागार्जुन—लोक संवेदना के यथार्थ सर्जक' का लोकार्पण भी किया।

अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर

हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद के अमृत पर्व के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली एवं हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित '37वाँ अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर' विगत दिनों हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद के प्रांगण में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह के क्रम में संस्था की वेबसाइट का उद्घाटन, तीन सत्रों में चिंतन-शिविर, तत्पश्चात् कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया।

स्मृति शेष

भारत में श्वेत क्रान्ति के जनक डॉ० वर्गीज कुरियन नहीं रहे

भारत को दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक राष्ट्र बनाने वाले श्वेत क्रान्ति के जनक 91 वर्षीय डॉ० वर्गीज कुरियन का 8 सितम्बर को निधन हो गया।

कुरियन ने बीती सदी के सातवें दशक में श्वेत क्रान्ति की आधारशिला रखी थी। उन्होंने सामान्य दुग्ध उत्पादकों को सहकारिता के हथियार से देश के आर्थिक विकास में अहम् भूमिका निभाने का अवसर दिया।

द्वारकादास शास्त्री का निधन

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यापक एवं राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित स्वामी द्वारकादास शास्त्री (88) का 25 अगस्त को हृदय गति रुकने से निधन हो गया। इसकी जानकारी मिलने पर शिक्षा जगत् में शोक की लहर दौड़ गयी।

काका बिना ठहाका!

'मेरी मौत पर न रोयेगा कोई, ऊँट पर निकलेगी मेरी शवयात्रा, रास्ते भर ठहाका लगाते चलेंगे सब। श्मशान गृह में चिता जलने तक चलेगा हास्य कवि सम्मेलन'। ताउम्र हँसने-हँसाने वाला कोई शख्स खुद की मौत पर भी लोगों को ठहाके लगाने को कह जाय, ऐसा बिरला ही होता है। ऐसे ही थे पद्मश्री काका हाथरसी। संयोग देखिये.... जिस तारीख को काका का जन्म हुआ, उसी दिन उन्होंने दुनिया से विदा ली।

18 सितम्बर 1906 को शिवकुमार गर्ग के यहाँ पैदा हुए बच्चे का नाम प्रभुलाल गर्ग पड़ा। प्रभुलाल शुरू से ही शरारती होने के साथ कला और कविता में रुचि रखने वाले थे। तब शहर की अग्रवाल धर्मशाला में सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। एक नाटक में प्रभुलाल ने 'काका' की भूमिका निभायी, जो सुपरहिट रही। दूसरे दिन जब वे बाजार में गये तो दुकानदारों और राह चलते लोगों ने 'काका आ गये-काका आ गये' का शोर मचाना शुरू कर दिया। तभी से प्रभुलाल गर्ग का उपनाम 'काका' हो गया।

'हास्य' की खातिर संघर्ष : 'काकाजी' ने जिस जमाने में हास्य कविताओं की रचना कर कवि सम्मेलन मंचों की ओर रुख किया, तब हास्य कवियों की कोई खास पहचान नहीं थी। मंचों पर उन्हें 'विदूषक' कहकर उपेक्षित किया जाता था। काका 'मुम्बई' के एक कवि सम्मेलन में बिना बुलाये गये, जोड़-तोड़ कर काफी कवियों की असहमति झेलते हुए उन्होंने मंच पर जो हास्य काव्य पाठ किया, उससे वे न केवल वहाँ हिट हुए, बल्कि हर तरफ कवि सम्मेलनों में उनकी माँग होने लगी।

'काका' के काव्य-सृजन में सिर्फ हास्य ही नहीं था, समाज में व्याप्त कुरीतियों, भ्रष्टाचार, राजनीतिक कुशासन पर प्रहार भी था। उनकी हास्य पताका दुनियाभर में फहरायी। विदेशी मूल के लोगों ने 'काकाजी' की कविताओं को सुनने और समझने के लिए हिन्दी सीखी। रेडियो स्टेशनों और टीवी चैनलों की भी शोभा बने। ब्रजभाषा में फिल्म 'जमुना किनारे' बनायी तो छा गए।

मूल मन्त्र : उनकी एक कविता की चार लाइनें जीवन के सार का खुलासा करती हैं— 'भोजन आधा पेट कर, दुगुना पानी पीउ, तिगुना श्रम, चौगुन हँसी, वर्ष सवा सौ जीउ!'

मुस्तफा सिराज का निधन

प्रसिद्ध बांग्ला साहित्यकार सैयद मुस्तफा सिराज का 5 सितम्बर 2012 को निधन हो गया। वह 82 वर्ष के थे। सिराज को साहित्य अकादमी समेत कई पुरस्कार मिले थे। उन्होंने 150 उपन्यास व तीन सौ लघुकथाओं की रचना की थी।

हीरेन भट्टाचार्य का निधन

असमिया भाषा के प्रख्यात और सम्मानित कवि हीरेन भट्टाचार्य का 80 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वर्ष 1992 में उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा वर्ष 2000 में असम घाटी साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

रंगकर्मी रमेश मेहता का निधन

वरिष्ठ रंगकर्मी रमेश मेहता का पिछले दिनों निधन हो गया। वे 88 वर्ष के थे। देश की आजादी के बाद राष्ट्रीय राजधानी में थियेटर को स्थापित करने में नाटककार, निर्देशक, कलाकार और अनुवादक मेहता की अहम् भूमिका मानी जाती है।

महेशचन्द्र जोशी का निधन

वरिष्ठ हिन्दी कथाकार 75 वर्षीय महेशचन्द्र जोशी का पिछले महीने बीकानेर में निधन हो गया।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

बुद्ध फिर मुस्कराया है (पंजाबी कविताएँ) : रचना : हरभजन सिंह 'रेणु', अनुवाद एवं सम्पादन : पूरन मुद्गल, मोहन सपरा, प्रकाशक : आस्था प्रकाशन, लाडोकली रोड, जालंधर, संस्करण : प्रथम् मूल्य : 195/- रु०

× × वर्तमान युग में पंजाबी भाषा के शीर्ष कवि 'रेणु' की कविताएँ ही उनकी पहचान हैं। यथार्थ के कठोर धरातल से उठकर आकाश में उड़ान भरना और वापस लौटना उनकी काव्य-प्रकृति है। वे जीवन की चुनौतियों के कवि हैं। × × ''चारों ओर से सुन रहा हूँ/बगयाड़—भेड़ियों की आवाज़/सिर पर काल बनकर उड़ रहे हैं/मौकापरस्त बाज़। इनसे तो/कभी हारे नहीं/इनसे कभी हारना नहीं।''

ज्ञानार्णवतन्त्रम् : सम्पादक एवं टीकाकार : मधुसूदन प्रसाद शुक्ल, प्रकाशक : नवशक्ति प्रकाशन, चौकाघाट (जे० 13/24 के०) वाराणसी-2, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 440/- रु०

× × लौकिक जगत की कल्याण-कामना से स्वयं भगवान शंकर ने 'तंत्र-शास्त्र' का उपदेश किया है। अपने मूलरूप में 'श्री ज्ञानार्णव-तंत्र' एक ऐसा आकर ग्रन्थ है जिसमें मनोद्धारों की प्रचुरता है। मूल ग्रन्थ की इस 'सुदर्शना' टीका में टीकाकार ने काफी श्रम एवं साधनापूर्वक ग्रन्थान्तरों से भी सामग्री संकलित करते हुए मंत्रों का भाष्य करने का श्लाघनीय कार्य किया है।

मंत्र चिकित्सा साधना : पं० केदारनाथ मिश्र, प्रकाशक : नवशक्ति प्रकाशन, चौकाघाट, वाराणसी, संस्क० : प्रथम, मूल्य : 170/- रु०

× × जीवन की विषमताओं के बीच सतत संघर्षशील मनुष्य प्राय: शारीरिक और मानसिक बीमारियों से आक्रान्त होता है। वैद्यों, डॉक्टरों की चिकित्सा के साथ दैवी-अनुकम्पा हेतु आस्थावान भारतीयों में मंत्र-चिकित्सा भी प्रचलित है। इसी चिकित्सा-विधान का संकलित एवं वैज्ञानिक विवेचन है प्रस्तुत ग्रन्थ।

संगीत निबन्ध सागर : डॉ० लक्ष्मीनारायण गर्ग, प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस-204101, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 350/- रु०

× × संगीत-प्रवीण लेखक ने विभिन्न अवसरों पर, स्वतंत्र-मेधा से संगीत विषय को लेकर अनिबद्ध-निबन्धों का संकलन तैयार किया है।

इन निबन्धों में गायन, वादन और नृत्य पर अलग-अलग आलेख हैं। यह संकलन कोई शोध प्रबन्ध तो नहीं है, किन्तु जिज्ञासु पाठक की शोध-वृत्ति के लिये उपादेय है।

मथुरा महिमा : युगलकिशोर चतुर्वेदी, प्रकाशक : डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी, अशोक मार्ग, जयपुर (राजस्थान), संस्क० : द्वितीय, मूल्य : 50/- रु०

× × 'लोकशिक्षक' मासिक के संस्थापक-सम्पादक स्व० युगल किशोर चतुर्वेदी की यह पुस्तक पहली बार सन् 1934 में छपी, यह दूसरा संस्करण के बाद मथुरा से सम्बद्ध घटनाओं और विकास प्रक्रिया को सम्मिलित करते हुए 2010 में प्रकाशित हुआ है। मथुरा नगरी का यह ऐतिहासिक-आलेख तथ्यों पर आधारित है।

समीक्षा के नये आयाम : डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, प्रकाशक : म०प्र० तुलसी साहित्य अकादमी, सुन्दरम् बंगला 50, महाकाली नगर, कोलार रोड, भोपाल, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 106/- रु०

× × लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार पं० गिरिमोहन गुरुजी की समस्त प्रकाशित कृतियों पर लगभग 16 विचारकों के अलग-अलग आलेखों का संकलन गुरुजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को महत्ता प्रदान करता है।

बंदिश जो मैंने गाई संस्करण : प्रथम, मूल्य : 300/-
जिहिं बन में क्रीड़ा करी संस्करण : प्रथम, मूल्य : 350/-
न्यायमूर्ति एस०डी० सिंह संस्करण : प्रथम, मूल्य : 500/-

डॉ० हेमभटनागर : प्रकाशक : संस्कार, 18 चित्रविहार, दिल्ली-110092,

यह तीनों ग्रन्थ लेखिका का आत्मकथ्य से युक्त जीवन-वृत्त है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 13 सितम्बर-अक्टूबर 2012 अंक : 9-10

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : **sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**